वन्दनीया माताजी द्वारा गाए हुए गीत

उन दिनों कैसेट का प्रचलन खूब जोर-शोर से था। गीतों के व परम पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों के कैसेट तैयार किये जा रहे थे। कैसेट के इनले कार्ड में परम पूज्य गुरुदेव का चित्र देने का निर्णय हुआ। जब वन्दनीया माताजी को एक नमूना दिखाया गया तो वन्दनीया माताजी ने कैसेट को उलट-पलट कर देखा और बोलीं, "**बेटा! मुझे और गुरुजी को कभी अलग मत समझना।**" फिर बोलीं, "**बेटा, आने वाले समय में दुनिया अपनी समस्याओं का समाधान मेरे गीतों में और पूज्य गुरुजी के प्रवचनों में (विचारों में) ढूँढ़ेगी।**" — वन्दनीया माताजी

1. आदमी आराध्य, सेवा साधना है आज मेरी ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
2. अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
3. आज मेरा मन तुम्हारे गीत गाना चाहता है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
4. आओ आगत आओ कब से, होती यहाँ पुकार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
5. आप हिमनग हैं, हमें सुरसरि बना दो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
6. आप निज करुणा उड़ेलें, पात्र वह हमको बना लो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
7. अक्षय कोष मिला जब मैंने, अपना सारा कोष लुटाया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
8. अन्धकारमय पथ पर चमको, ओ मेरे ध्रुवतारा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
9. अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
10. अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
11. अपने लिए जियूँ तो मेरा, जीवन नहीं मरण कह देना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
12. बन्दे तू औरों के काम नहीं आया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
13. बन्धनों से प्रीति कैसी? ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
14. बसायें एक नया संसार, कि जिसमें छलक रहा हो प्यार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
15. बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
16. भगवान बसो इस मन में तुम, यह मन देवालय हो जाये ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
17. भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
18. भले ही कहीं राह दिखती नहीं है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
19. भटक रहा है जनम-जनम से हँसा भूखा प्यासा रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
20. बिना दर्शन किये तेरे, नहीं दिल को करारी है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
21. ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
22. चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना, क्या करूँ प्यार की धार रुकती नहीं ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
23. चलो बदल दो राह समय की ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
24. चल रहा अन्तःकरण में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
25. चर-अचर सभी जड़ चेतन में, हे नाथ तुम्हारा रूप दिखे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
26. दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
27. दीपक सा तिल-तिल जलना ही ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
28. दीप हूँ जलता रहूँगा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
29. देख खुला है द्वार पुजारी ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
30. दे प्रभो! वरदान ऐसा, दे विभो वरदान ऐसा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
31. दिव्य अनुदान देने खड़े देवता, है ललक किन्तु उपकार कैसे करें ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
32. दुःखी चरण लम्बी मंजिल से, लेकिन तनिक नहीं कतराया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
33. गँवा दिया हमने जीवन में, धर्म और ईमान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
34. गायत्री माँ की उपासना, ही जीवन का सार है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
35. घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
36. है उदास कुछ अन्तरतम यह, रत्नों का उपहार किसे दूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

37. है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
38. हम अपना सब कुछ सौंप चुके, हे नाथ तुम्हारे चरणों में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
39. हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेंगे भगवान् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
40. हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
41. हर विपदा में सृजन शिल्पियो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
42. हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
43. हे हँसवाहिनी जगदम्बे गायत्री माँ तुझे ध्यान धरूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
44. हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
45. हे प्रभु! मानव हृदय को, गगन सा विस्तार दे दो! ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
46. हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
47. हो गये बहुत सुराख नाव में, मत जा तू मझधार रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
48. हो ईश्वर के अंश, आत्म-विश्वास जगाओ रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
49. हृदय से लगा लो या आँचल हटा लो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
50. इन्सान मेरा देवता ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
51. इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
52. जब-जब सौ-सौ बाँह पसारे, खड़ा तिमिर हो बीच डगर में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
53. जब स्वयं को विकल तुम अनुभव करोगे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
54. जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
55. जल रहे दीपक हजारों ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
56. जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
57. जीवन के आधार तुम्हीं हो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
58. जीवन बन तू फूल समान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
59. जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
60. झनझना दे चेतना के जड़ विनिर्मित तार को ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
61. झीनी-झीनी बीनी चदरिया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
62. जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
63. ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
64. कैसे दें हम तुम्हें विदाई ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
65. कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
66. कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
67. कौन है किसका यहाँ पर, हैं सभी आते अकेले ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
68. किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
69. किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

70. कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
71. क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
72. महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
73. मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
74. मैंने तेरी गीता गाई ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

75. मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
76. मन मैला ही रहा अगर तो उजला तन बेकार है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
77. मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
78. मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
79. मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
80. मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
81. मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
82. ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
83. न हो ओ साधक तू लाचार, मिलेगा नव बल का संचार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
84. न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
85. न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ, मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
86. नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
87. नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
88. निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
89. ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
90. पर-पीड़ा से द्रवित हो उठा, जिसका तन-मन-जीवन सारा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
91. पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
92. पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
93. प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
94. प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
95. प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
96. राही जाना पथ मत भूल ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
97. राम का नाम लेकर न जो पा सके, राम का काम करके वही पाओगे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
98. राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
99. रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
100. सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
101. साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
102. सामने दिव्य आलोक साकार था, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
103. सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
104. सविता महान आपसे वरदान माँगते ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
105. सीख नहीं पाये चादर ओढ़ने का ढंग रे, मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

106. सिहर-सिहर मन तुम्हें पुकारे, प्रभु दर्शन बिन बड़ा क्लेश है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
107. स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
108. सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
109. सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो, देख पायें तुझे वह नयन दीजिए ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
110. तजकर अपना रूप प्रभु जी, मैं पावन आकार हो गया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
111. तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, ये संसार तेरा बनाया हुआ है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
112. थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
113. तुझे मिला कंचन सा जीवन, तूने उसे गँवाया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
114. तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
115. तुम्हारा देगा सब जग साथ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
116. तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
117. तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे, तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
118. तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
119. तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
120. तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ तुम, और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
121. तूने हमें जनम दिया, पालन कर रही हो तुम ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
122. वन्दें उनके पद की धूल ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
123. विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
124. यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
125. यह करुणा की धार, सूखने मत देना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
126. युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
127. युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
128. युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

1. आदमी आराध्य , सेवा साधना है आज मेरी   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

आदमी आराध्य, सेवा साधना है आज मेरी।
साधना का प्राण जन-जन की अथक पीड़ा घनेरी॥

नयन का निर्माल्य ही, बन गंग-नीर पवित्र करता।
दूसरे की पीर भरती, श्वाँस में अर्जित प्रखरता॥
आचमन आत्मीयता का, प्यार का चन्दन सुहाता।
हर दुःखी जन के लिए ही, स्नेह अन्तर का लुटाता॥
आज माला पर दुःखों की, भावना के साथ फेरी॥
आदमी आराध्य . . . . .

मखमली आशीष में गुरु से मिला लिपटा खजाना।
मनुज- जीवन की सफलता, यज्ञमय जीवन बिताना॥
बस तभी से जल रहा, जीवन हिमानी शीत हरने।
कर्म की आहुति लगी है, दूसरों के घर बसाने॥
प्रज्वलित है प्राण-तन तो, अन्त में है भस्म ढेरी॥
आदमी आराध्य . . . . .

ध्यान में साकार हो, उठती सभी की वेदनाएँ।
और उनको ही मिटाने, उमंग पड़ती प्रार्थनाएँ॥
माँ! मिटा दो विश्व से कुण्ठा, निराशा और पीड़ा।
विश्व-मानव हो सुखी, जीवन बने शुभ रास-क्रीड़ा॥
शक्ति दो माता! लगाओ, मत दया में आज देरी॥
आदमी आराध्य . . . . .

1. आदमी आराध्य **,** सेवा साधना है आज मेरी — **English Meaning /** भावार्थ

Humanity is my deity, and service is my spiritual practice today.
The very soul of this practice is the relentless, deep suffering of the masses.
The sacred offering of tears purifies like the holy waters of the Ganges.
The pain of others infuses my breath with a hard-earned, radiant intensity.
The holy sip of kinship and the soothing sandalwood of love are pleasing.
For every suffering soul, I pour out the deepest affection of my heart.
Today, with deep emotion, I have turned the rosary of human sorrows.
Humanity is my deity . . . . .

Wrapped in the velvety blessings of the Guru, I received a hidden treasure.
The true success of human life lies in living a life of selfless sacrifice.
Since that moment, this life burns to dispel the freezing cold of suffering.
The offering of my actions is dedicated to rebuilding the homes of others.
While body and soul burn bright, in the end, only a heap of ashes remains.
Humanity is my deity . . . . .

In my meditation, the agonies of all take shape and rise.
And to dispel them, passionate prayers surge forth from within.
O Mother! Erase frustration, despair, and pain from this world.
May global humanity be happy, and may life become an auspicious, divine play.
Grant me strength, O Mother! Do not delay Your compassion today.
Humanity is my deity . . . . .

2. अगर चाहते हो निज रक्षा , गायत्री गुण - गान करो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

दुःख काटकर निज भक्तों के, माता रक्षा करती है।
सुख-सौभाग्य बढ़ा देती है, शान्ति सुधा-रस भरती है॥
नदी समुद्र सरोवर के तट, शान्त भाव से खड़े-खड़े।
गायत्री का जप करते थे, जब द्विज पुंगव बड़े-बड़े॥

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

सूर्य ब्रह्म की ग्रन्थि से, हो जाती है निर्मल बुद्धि।
पाप-ताप सब कट जाते हैं, आ जाती है सच्ची शुद्धि॥
बढ़ता था श्री मार्तण्ड का, उनमें तेजस् दिव्य प्रचण्ड।
स्वर्ग भूमि से अधिक सुखी था, मित्र तभी भारत खण्ड॥

बाल्यकाल में ही जिनको ये मंत्र सुनाया जाता है।
आलस दम्भ प्रमाद न उनकी, सन्तानों में आता है॥

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

द्विजों उठो! तप में प्रवृत्त हो, गायत्री को जाप करो।
पार करो भारत की नैया,, दूर सकल अभिशाप करो॥
शक्ति पुंज और सच्चा पथ ये शास्त्र सदा से गाता है।
आर्य जाति की रक्षा करती, श्री गायत्री माता है॥

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

गायत्री को नहीं जानता, संध्या कभी न करता है।
ऐसा कर्म-हीन अपने को, फिर क्यों ब्राह्मण कहता है॥
पूज्य हो रही जब भारत के, घर-घर श्री गायत्री की।
विश्वामित्र-वशिष्ठ अत्रि थे, सती सिया सावित्री थी॥

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

यद्यपि वैदिक यज्ञ बड़े हों, जिनमें बड़े-बड़े हों दान।
तो भी मनु कथनानुसार है, गायत्री जप-यज्ञ प्रधान॥
श्रद्धा-भक्ति सहित विश्वासी, निश्चित जप जो करते हैं।
पाप-ताप को छिन्न-भिन्न कर, भवसागर से तरते हैं॥

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

2. अगर चाहते हो निज रक्षा , गायत्री गुण - गान करो — **English Meaning** / भावार्थ

If you desire your own protection, sing the praises of Gayatri.
Daily in a pure, solitary place, meditate upon the Mother of the Universe.

Severing the sorrows of Her devotees, the Mother protects them.
She increases happiness and good fortune, filling them with the nectar of peace.

On the banks of rivers, oceans, and lakes, standing in peaceful contemplation,
The greatest of the twice-born sages used to chant the Gayatri.

If you desire your own protection, sing the praises of Gayatri.
Daily in a pure, solitary place, meditate upon the Mother of the Universe.

Through the knot of the Solar Brahman, the intellect becomes pure and spotless.
All sins and sufferings are severed, and true purification is attained.

The fierce, divine splendor of the Sun God grew within them.
O friend, only then was the land of Bharat happier than even the heavenly realm.

Those who are initiated into this mantra in their very childhood,
Laziness, arrogance, and delusion never touch their offspring.

If you desire your own protection, sing the praises of Gayatri.
Daily in a pure, solitary place, meditate upon the Mother of the Universe.

Arise, O twice-born! Engage in penance, and chant the Gayatri.
Steer the boat of Bharat across, and dispel every single curse.

The scriptures have always sung of Her as the source of power and the true path.
It is Mother Gayatri who protects the noble Aryan race.

If you desire your own protection, sing the praises of Gayatri.
Daily in a pure, solitary place, meditate upon the Mother of the Universe.

One who does not know Gayatri, and never performs the twilight prayers,
Why does such a person, devoid of righteous action, still call himself a Brahmin?

When Mother Gayatri was worshipped in every home of Bharat,
There lived Vishwamitra, Vashistha, Atri, the chaste Sita, and Savitri.

If you desire your own protection, sing the praises of Gayatri.
Daily in a pure, solitary place, meditate upon the Mother of the Universe.

Though there be grand Vedic sacrifices, in which immense charities are given,
Yet, according to the words of Manu, the sacrifice of Gayatri chanting is supreme.

Those faithful ones who chant with deep devotion and unwavering belief,
Shatter their sins and sufferings, and cross the ocean of worldly existence.

If you desire your own protection, sing the praises of Gayatri.
Daily in a pure, solitary place, meditate upon the Mother of the Universe.

3. आज मेरा मन तुम्हारे गीत गाना चाहता है   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

आज मेरा मन तुम्हारे गीत गाना चाहता है।
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥

चाहती हूँ मैं तुम्हारी, दृष्टि का केवल इशारा।
डूबते को बहुत होता, एक तिनके का सहारा॥
अब हृदय में प्यार का, तूफान आना चाहता है॥
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥
आज मेरा मन . . . . .

एक योगी चाहता है, बाँधना गतिविधि समय की।
एक संयोगी भुलाना, चाहता चिन्ता अनय की॥
पर वियोगी आग पानी में लगाना चाहता है॥
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥
आज मेरा मन . . . .

व्यंग करता है मनुज की श्रेष्ठता पर क्षुद्र जीवन।
हँस रहा जग की जवानी की उमंगों पर लड़कपन॥
किन्तु कोई साथ सबके, मुस्कुराना चाहता है॥
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥
आज मेरा मन . . . . . .

नर्क लज्जित हो रहा है, स्वर्ग की लखकर विषमता।
आज सुख भी रो रहा है, देखकर दुःख की विवशता॥
इन्द्र का आसन तभी तो, डगमगाना चाहता है॥
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥
आज मेरा मन . . . . . .

3. आज मेरा मन तुम्हारे गीत गाना चाहता है — **English Meaning** / भावार्थ

Today my heart desires to sing your songs.
It wishes to flow the fresh nectar of life once again into this dry existence.
I desire only a mere glance, a gesture of your eyes.
For a drowning soul, even the support of a straw is enough.
Now a tempest of love wishes to rise within my heart.
It wishes to flow the fresh nectar of life once again into this dry existence.
Today my heart . . . . .
A yogi desires to bind the movement of time.
One in union wishes to forget the anxieties of injustice.
But the separated lover wishes to set fire even to water.
It wishes to flow the fresh nectar of life once again into this dry existence.
Today my heart . . . .
A petty life mocks the greatness of mankind.
Childhood laughs at the soaring passions of the world's youth.
Yet someone wishes to smile in unison with all.
It wishes to flow the fresh nectar of life once again into this dry existence.
Today my heart . . . . . .
Hell feels ashamed, beholding the disparity of heaven.
Today even happiness weeps, seeing the helplessness of sorrow.
That is why the very throne of Indra wishes to tremble.
It wishes to flow the fresh nectar of life once again into this dry existence.
Today my heart . . . . . .

4. आओ आगत आओ कब से , होती यहाँ पुकार   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

आओ आगत आओ कब से, होती यहाँ पुकार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

माँ का अनुपम स्नेह पिता का, पावन आशीर्वाद।
हर लेता है मन से सारा, ही अज्ञान प्रमाद॥
यहाँ स्वार्थ ही जाने कैसे, बनता पर उपकार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

यहाँ मनुजता की प्रतिमा है, और सत्य आलोक।
करुणा की शीतलता देता, करके छाँह अशोक॥
बहुजन हित जन-जन का हित ही, यहाँ सहज व्यवहार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

सेवा, निष्ठा, त्याग, क्षमा के, यहाँ मिलेंगे भाव।
कल्प वृक्ष सम्मुख फिर कैसे, बाकी रहे अभाव॥
भेद भाव है नहीं सभी का, है स्वागत सत्कार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

यहाँ प्यार बसता कण-कण में, क्षण-क्षण गति निष्काम।
हर मन में भगवती विराजे, अन्तर में श्रीराम॥
नहीं मोह का काम यहीं पर, सारा जग परिवार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

4. आओ आगत आओ कब से **,** होती यहाँ पुकार — **English Meaning** / भावार्थ

Come, O guest, come! For so long, this call has been echoing here.
The door of the auspicious temple is open.

The incomparable love of the Mother, the sacred blessing of the Father,
Removes all ignorance and negligence from the mind.
Here, who knows how, even self-interest transforms into benevolence.
The door of the auspicious temple is open.

Here dwells the embodiment of humanity, and the light of truth,
Offering the soothing coolness of compassion under a sorrow-free shade.
The welfare of the masses, the good of every individual, is the natural way of life here.
The door of the auspicious temple is open.

Feelings of service, dedication, sacrifice, and forgiveness are found here,
Before the wish-fulfilling tree, how can any lack or scarcity remain?
There is no discrimination; everyone is welcomed with deep respect.
The door of the auspicious temple is open.

Here, love resides in every atom, and every moment moves in selflessness,
The Divine Mother reigns in every heart, and Lord Rama dwells within.
There is no room for worldly attachment here; the entire universe is one family.
The door of the auspicious temple is open.

5. आप हिमनग हैं , हमें सुरसरि बना दो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

आप हिमनग हैं, हमें सुरसरि बना दो।
आपके उर की द्रवित, करुणा बहा दो॥

दुष्ट चिन्तन से मनुजता, जल रही है।
रिक्तता सम्वेदना की, खल रही है॥
आस्था के सगर सुत, अभिशप्त से हैं।
आस्था, विश्वास का अमृत पिला दो॥
आप हिमनग हैं . . . . .

जो पराभव में पतन में, जी रहे हैं।
और जो दुर्भावना विष, पी रहे हैं॥
पतित-पावन श्रेष्ठ चिन्तन, आप का है।
लोक-मंगल की हमें, अंजुलि बना दो॥
आप हिमनग हैं . . . . .

ज्ञान-गंगा सा उछलने, बढ़ सकें हम।
लोक मंगल साध्य शिव पर, चढ़ सकें हम॥
आज जन मानस घिरा, अज्ञान तम में।
ज्ञान से अभिषेक युग-शिव का करा दो॥
आप हिमनग हैं . . . . .

हर सकें युग-पीर, वह क्षमता हमें दो।
पी सकें युग-वेदना, ममता हमें दो॥
धार फूटें हृदय से, सम्वेदना की।
भावना भागीरथी को, छल-छला दो॥
आप हिमनग हैं . . . . .

5. आप हिमनग हैं **,** हमें सुरसरि बना दो — **English Meaning** / भावार्थ

You are the sacred snow-mountain, make us the celestial river.
Let the melted compassion of Your heart flow.
Humanity is burning in the fire of evil thoughts,
The emptiness of empathy is deeply hurting.
The sons of Sagara, seeking faith, are as if cursed,
Quench their thirst with the nectar of faith and trust.
You are the sacred snow-mountain . . . . .
Those who are living in defeat and degradation,
And those who are drinking the poison of ill-will,
Yours is the supreme, purifying thought that uplifts the fallen,
Make us the cupped hands of offering for the welfare of the world.
You are the sacred snow-mountain . . . . .
May we surge and leap forward like the Ganges of wisdom,
May we offer ourselves upon Shiva, the ultimate goal of universal well-being.
Today, the human mind is enveloped in the darkness of ignorance,
Anoint the Shiva of this era with the sacred waters of wisdom.
You are the sacred snow-mountain . . . . .
Grant us the strength to alleviate the pain of this era,
Grant us the motherly love to absorb the suffering of this age.
May streams of deep empathy burst forth from our hearts,
Let the Bhagirathi of pure emotion overflow and ripple.
You are the sacred snow-mountain . . . . .

6. आप निज करुणा उड़ेलें , पात्र वह हमको बना लो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

आप निज करुणा उड़ेलें, पात्र वह हमको बना लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

कमी करुणा की नहीं है, वह द्रवित हो बह रही है।
धार करुणा की सहेजें, पात्र तो सच्चा वही है॥
नाथ करुणाकर करुण की, जाति में हमको मिला लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

रो उठें पर पीर से हम, द्रवित खारे नीर से हम।
हर सकें कुछ पीर जग की, नाथ मनुज शरीर से हम॥
प्रभु द्रवित जन-सेवकों की, पाँत में हमको मिला लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

पात्रता पायें विनय की, दीन-दुखियों पर सदय की।
पर अनय से जूझने को, पात्रता पायें अभय की॥
बात जो बिगड़ी बनाये, पात्र वह हमको बना लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

खो न जायें स्वार्थ में हम, समर्पित सर्वार्थ में हम।
प्राण-प्रण से जुट सकें प्रभु, अहर्निश परमार्थ में हम॥
आप जीवन के रथी हों, मात्र रथ हमको बना लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

मोह का फिर महाभारत, लड़ सकें प्रभु प्राण का रथ।
भय उसे क्या, जिन्दगी का, आपको जो सौंप दे रथ॥
आत्म अर्जुन क्लीव हो क्यों, आप जब गीता सुना दो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

आप निज करुणा उड़ेलें, पात्र वह हमको बना लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

6. आप निज करुणा उड़ेलें **,** पात्र वह हमको बना लो — **English Meaning** / भावार्थ

May You pour Your own compassion, make us such a worthy vessel.
To gather and preserve the light of compassion's droplets, O Lord, make us that.

There is no dearth of compassion, it flows in a melting stream.
To hold and gather this stream of compassion, that alone is the true vessel.
O Lord, Ocean of Mercy, unite us with the lineage of the compassionate.
To gather and preserve the light of compassion's droplets, O Lord, make us that.

May we weep at the pain of others, melting into tears of salty water.
May we alleviate some suffering of this world, O Lord, through this human body.
O Lord, place us in the row of compassionate servants of humanity.
To gather and preserve the light of compassion's droplets, O Lord, make us that.

May we attain the worthiness of humility, and of kindness toward the poor and suffering.
Yet to battle against injustice, may we attain the worthiness of fearlessness.
Make us that vessel which mends and restores what is broken.
To gather and preserve the light of compassion's droplets, O Lord, make us that.

May we never lose ourselves in selfishness, but remain dedicated to the welfare of all.
With all our life's breath, O Lord, may we engage day and night in selfless service.
May You be the Charioteer of our life, and make us merely Your chariot.
To gather and preserve the light of compassion's droplets, O Lord, make us that.

In this Mahabharata of worldly attachment, may the chariot of our life fight on, O Lord.
What fear of life can there be for one who surrenders their chariot to You?
Why should the inner Arjun feel weak and despondent, when You Yourself sing the Gita?
To gather and preserve the light of compassion's droplets, O Lord, make us that.

May You pour Your own compassion, make us such a worthy vessel.
To gather and preserve the light of compassion's droplets, O Lord, make us that.

7. अक्षय कोष मिला जब मैंने , अपना सारा कोष लुटाया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

अक्षय कोष मिला जब मैंने, अपना सारा कोष लुटाया।
मैंने सब देकर सब पाया॥

जाने कब से मैं पागल बन, मिट्टी को समझी थी कंचन।
किन्तु तुम्हारी कृपा-किरण ने, दिया मुझे अनमोल ज्योति कण॥
जिसके दिव्य प्रकाश पुंज में, मैंने नूतन पंथ बनाया॥
मैंने सब देकर सब पाया॥

लक्ष्य प्राप्त करने का यदि प्रण, करो विभव का दूर प्रलोभन।
कहीं न रोकें पद की गति को, सोने-चाँदी के आकर्षण॥
छाया बनकर सबको रोके, मन की मृगतृष्णा की माया॥
मैंने सब देकर सब पाया॥

देव तुम्हारा पूजन अर्चन, करता है मन प्रतिपल, प्रतिक्षण।
अहं ब्रह्म बन धन्य बनूँ मैं, सिद्धि बने यह आत्म-समर्पण॥
ज्ञात न मैं प्रभु बनी कि मेरा, प्रभु ही मुझमें आज समाया॥
मैंने सब देकर सब पाया॥

7. अक्षय कोष मिला जब मैंने **,** अपना सारा कोष लुटाया — **English Meaning** / भावार्थ

I found the inexhaustible treasure when I surrendered all my own wealth.
By giving up everything, I attained everything.

For who knows how long, in my madness, I mistook mere dust for gold.
But the ray of Your grace bestowed upon me a priceless speck of divine light.
In whose brilliant, divine glow, I carved out a new path.
By giving up everything, I attained everything.

If you vow to attain the ultimate goal, cast away the temptation of worldly grandeur.
Let not the allure of gold and silver ever halt the progress of your steps.
Looming like a shadow, the illusion of the mind's mirage holds everyone back.
By giving up everything, I attained everything.

O Divine One, my mind worships and adores You at every moment, with every breath.
May I be blessed by realizing the Supreme Self, and may this self-surrender become my ultimate realization.
I know not whether I merged into the Lord, or if my Lord Himself has entered and filled my being today.
By giving up everything, I attained everything.

8. अन्धकारमय पथ पर चमको , ओ मेरे ध्रुवतारा   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

अन्धकारमय पथ पर चमको, ओ मेरे ध्रुवतारा।
ओ मेरे ध्रुवतारा॥

नीरवता का शून्य हृदय का, मौन व्यथा जीवन की।
हाथों में संकेत, चरण में कंपन, धार नयन की॥
किन्तु श्वाँस को एक हास की रेखा बनी सहारा॥
ओ मेरे ध्रुवतारा॥

तुम्हीं लक्ष्य हो, तुम्हीं प्रेरणा, तुम्हीं अन्त तुम दीक्षा।
तुम विश्वास मधुर भावों के, और मिलन की इच्छा॥
तुम वह स्त्रोत कि जिससे बहती, करुणा की कल-कल धारा॥
ओ मेरे ध्रुवतारा॥

केवल मेरे लिये नहीं तुम, संस्कृति पथ पर बिखरो।
शाश्वत पुण्य प्रकाश प्रभा ले, प्रति कण-कण में निखरो॥
हो मानव की शक्ति चिरन्तन, प्रिय पाथेय तुम्हारा॥
ओ मेरे ध्रुवतारा॥

8. अन्धकारमय पथ पर चमको **,** ओ मेरे ध्रुवतारा — **English Meaning** / भावार्थ

Shine upon the darkened path, O my Pole Star.
O my Pole Star.

The void of silence in the heart, the silent agony of life,
The trembling hands, the faltering steps, and the stream of tears from the eyes;
Yet, to my breath, a single ray of a smile became the saving support.
O my Pole Star.

You alone are the goal, you the inspiration, you the end, and you the initiation,
You are the faith of sweet emotions, and the yearning for union;
You are that source from which flows the gentle, murmuring stream of compassion.
O my Pole Star.

Not for me alone, scatter your light upon the path of humanity,
Bearing the eternal, sacred radiance of light, bloom in every single atom;
May you be the eternal strength of humanity, their beloved sustenance for the journey.
O my Pole Star.

9. अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम , भगवान मेरा संसार हो तुम   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।

भाषा न प्रकट कर सकी जिसे, अभिव्यक्त भाव भी कर न सके।
बन अश्रुधार जो बिखर गये, चिर मौन वही उद्गार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

जीवन गिरि, शिखरों-सा दुस्तर, चहुँ दिशि बस प्रस्तर ही प्रस्तर।
पर चीर उन्हें जो बह निकली, ऐसी गंगा की धार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

पायल की झनक बुला न सकी, हीरों की खनक लुभा न सकी।
जिस स्वर को सुन उर कमल खिला, वह मधु भीनी गुँजार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

मेरे सपनों का प्राण है जो, जीवन का शुचि वरदान है जो।
भटकाया जिसने जनम-जनम, आत्मा का वही दुलार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

जिसको पी जागा भक्ति भाव, रह गया मुक्ति का नहीं चाव।
जिससे चेतना नियन्त्रित है, बस वही सबल आधार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

त्रुटियों पर ध्यान नहीं देना, यदि गिरूँ तुरन्त उठा लेना।
मैं निर्बल हूँ तुम बलशाली, सबके करुणा आगार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

हम सरिता से, तुम अतुल सिन्धु, हम चिर प्यासे तुम अमृत बिन्दु।
अपने में ही लय कर लेना, प्रभुवर अत्यन्त उदार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।

अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।

9. अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम **,** भगवान मेरा संसार हो तुम — **English Meaning** / भावार्थ

You are the pure love of my inner heart, O Lord, You are my entire world.
O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.
That which language could not reveal, and even expressed emotions could not convey,
That which scattered as a stream of tears, You are that eternal, silent expression.
O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.
You are the pure love of my inner heart, O Lord, You are my entire world.

Life is like a mountain, difficult and arduous, with only stones and rocks in all directions,
But piercing through them to flow forth, You are that stream of the sacred Ganges.
O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.
You are the pure love of my inner heart, O Lord, You are my entire world.

The tinkling of anklets could not summon me, the clinking of diamonds could not allure me,
Hearing the sound of which the lotus of my heart blossomed, You are that sweet, honeyed hum.
O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.
You are the pure love of my inner heart, O Lord, You are my entire world.

That which is the very life of my dreams, that which is the pure boon of my life,
That which wandered through birth after birth, You are that very beloved of the soul.
O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.
You are the pure love of my inner heart, O Lord, You are my entire world.

Drinking which the feeling of devotion awakened, leaving no desire even for liberation,
By which consciousness is governed, You alone are that powerful foundation.
O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.
You are the pure love of my inner heart, O Lord, You are my entire world.

Do not pay heed to my errors, if I fall, lift me up instantly,
I am weak, You are all-powerful, You are the abode of compassion for all.
O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.
You are the pure love of my inner heart, O Lord, You are my entire world.

We are like rivers, You are the peerless ocean; we are eternally thirsty, You are the drop of nectar,
Merge us into Yourself, O Lord, You are exceedingly generous.
O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.
You are the pure love of my inner heart, O Lord, You are my entire world.

O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.
You are the pure love of my inner heart, O Lord, You are my entire world.
O Lord, You are my entire world. O Lord, You are my entire world.

10. अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये।
ठोकरें खा रहे हैं बचा लीजिये॥

नैया जीवन की है नाथ मझधार में,
करके करुणा किनारे लगा दीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

छा रहा है अँधेरा ये अज्ञान का,
ज्ञान की ज्योति मन में जगा दीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

ध्यान होगा किसी को किसी का प्रभु,
अपना तू ही है हमसे लिखा लीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

देव वाणी तेरी ज्ञान-अमृत भरी,
भर के प्याला हमें एक पिला दीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

मूर्ख मन की दिशा पाप की ओर है,
इसको चरणों में अपने घुमा लीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

हमको है ओ पिता! तेरा ही आसरा,
गोद अपनी में स्वामी बिठा लीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

10. अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये — **English Meaning** / भावार्थ

Please grant me a place among Your devotees.
Stumbling at every step, please rescue me.

The boat of my life, O Lord, is stranded in midstream,
Show Your compassion and guide it safely to the shore.
Please grant me a place among Your devotees.

The darkness of ignorance is spreading all around,
Awaken the flame of divine wisdom within my heart.
Please grant me a place among Your devotees.

Others may focus their devotion on whoever they please, O Lord,
But have me write down that You alone are my very own.
Please grant me a place among Your devotees.

Your divine words are filled with the nectar of wisdom,
Fill a cup of it and make me drink.
Please grant me a place among Your devotees.

The direction of this foolish mind is inclined toward sin,
Turn its path and guide it to Your holy feet.
Please grant me a place among Your devotees.

O Father! You alone are my shelter and support,
Take me into Your lap, O Lord, and seat me there.
Please grant me a place among Your devotees.

11. अपने लिए जियूँ तो मेरा , जीवन नहीं मरण कह देना   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

अपने लिए जियूँ तो मेरा, जीवन नहीं मरण कह देना।
जीवन नहीं मरण कह देना॥

मेरी प्यास यहाँ तक जागे, अमृत-सिन्धु खोज लाऊँ मैं।
जग के प्यासे अधर देखकर, अपनी प्यास भूल जाऊँ मैं॥
प्यास बुझाते हुए जगत की, मेरी प्यास अगर डिग जाये।
संयम की संज्ञा मत देना, हर आचरण पतन कह देना॥
अपने लिए जियूँ तो मेरा . . . .

इस तट का ही दृश्य डुबा दे, उस तट की बाँहें बढ़ जाएँ।
प्रीति सुधा की धार लाँघकर, हम पागल उस पार न जाएँ॥
चलने वाले मंजिल भूलें, चलते हुए समाधि न टूटे।
चलते हुए थकें यदि मेरे, भटके हुए चरण कह देना॥
अपने लिए जियूँ तो मेरा . . . .

वह साधना नहीं थी पगले, साधना पूरी हुई युगों तक।
जीवन भर समाधि में बैठा, सिद्धि न झाँकी कभी दृगों तक॥
प्राणायाम छोड़कर अब तो, बढ़ती घुटन रोकती साँसें।
इस तह में हो जाएँ न दर्शन, छलनामयी लगन कह देना॥
अपने लिए जियूँ तो मेरा . . . .

11. अपने लिए जियूँ तो मेरा **,** जीवन नहीं मरण कह देना — **English Meaning** / भावार्थ

If I live only for myself, call it not life, but death.
Call it not life, but death.
May my thirst awaken to such heights, that I seek and bring back the ocean of nectar.
Beholding the thirsty lips of the world, may I forget my own thirst.
While quenching the thirst of the world, if my own resolve should waver,
Call it not self-restraint, call every such act a downfall.

If I live only for myself . . . .

May the sight of this shore submerge me, while the arms of yonder shore reach out,
Crossing the stream of love's nectar, may we mad ones not cross over to that other side.
Let the traveler forget the destination, but let the deep meditation not break while walking,
If my feet grow weary while walking, call them strayed and wandering feet.

If I live only for myself . . . .

That was no spiritual practice, O foolish one, though the practice continued for ages,
Sitting in deep meditation all life long, yet spiritual perfection never glanced into my eyes.
Leaving pranayama aside now, the rising suffocation chokes the breath,
If the divine vision is not realized in these depths, call this devotion a mere delusion.

If I live only for myself . . . .

12. बन्दे तू औरों के काम नहीं आया   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

बन्दे तू औरों के काम नहीं आया।
माटी के मोल गई कंचन सी काया॥

केवल सुख-साधन में जिन्दगी बिताई।
मन की पर शान्ति कहीं एक पल न पाई॥
मुट्ठी पर पुण्य न इस देह से कमाया।
कर्मों पर रही सदा स्वारथ की छाया॥
तूने बस पापों का ढेर ही लगाया।
परहित का पंथ नहीं मन से अपनाया॥

बन्दे तू औरों के काम नहीं आया।
माटी के मोल गई कंचन सी काया॥

अपने हित-चिन्तन में सोया और जागा।
उसके ही लिए यहाँ दर-दर तू भागा॥
स्वार्थ भरे सपनों में बीत गई रातें।
करते तुम रहे सदा ब्रह्म भरी बातें॥
बेचैनी, दौड़-भाग, भ्रम ने भटकाया।
तूने अनमोल जनम व्यर्थ ही गँवाया॥

बन्दे तू औरों के काम नहीं आया।
माटी के मोल गई कंचन सी काया॥

कर्मों का जनम-जनम साथ सदा होगा।
अपने ही कर्मों का सबने फल भोगा॥
इसीलिये कोई भी पल न अब गँवाओ।
जो बचा समय है, सत्कर्म में लगाओ॥
कण-कण ने दैवी सन्देश यह सुनाया।
जीवन जीने का यही मर्म है बताया॥

बन्दे तू औरों के काम नहीं आया।
माटी के मोल गई कंचन सी काया॥

12. बन्दे तू औरों के काम नहीं आया — **English Meaning** / भावार्थ

O mortal, you were of no use to others.
Your golden body was reduced to the value of dust.

You spent your entire life only in pursuit of comforts,
Yet, you could not find peace of mind even for a single moment.
You did not earn even a handful of virtues through this body,
The shadow of selfishness always loomed over your deeds.
You only accumulated a mountain of sins,
You never truly embraced the path of benevolence.

O mortal, you were of no use to others.
Your golden body was reduced to the value of dust.

You slept and woke up thinking only of your own self-interest,
For that alone, you ran from door to door.
Your nights passed in dreams filled with selfishness,
Though you always spoke words of high spiritual wisdom.
Restlessness, the endless chase, and delusion led you astray,
You wasted this priceless human birth in vain.

O mortal, you were of no use to others.
Your golden body was reduced to the value of dust.

Your deeds will accompany you life after life,
Everyone must reap the fruits of their own actions.
Therefore, do not waste even a single moment now,
Dedicate whatever time remains to righteous deeds.
Every speck of creation has echoed this divine message,
Revealing this to be the true essence of living life.

O mortal, you were of no use to others.
Your golden body was reduced to the value of dust.

13. बन्धनों से प्रीति कैसी ? ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

हम शलभ जलने चले हैं, अस्तित्व निज खोने चले हैं।
दीप पर जलना हमें है, दाह से फिर भीति कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

सिन्धु से मिलने चले हैं, सर्वस्व निज देने चले हैं।
अटल से मिलना हमें है, शून्य तट पर दृष्टि कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

दीप बन जलना हमें है, विश्वतम हरना हमें है।
ध्येय तिल- तिल जलन का है, कालिमा से भीति कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

आधार ही बनना हमें है, नींव में रहना हमें है।
ध्येय जब यह बन चुका है, कीर्ति में आसक्ति कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

13. बन्धनों से प्रीति कैसी **? — English Meaning** / भावार्थ

Why love worldly bonds? Why love worldly bonds?
Why love worldly bonds? Why love worldly bonds?
We, the moths, have set forth to burn, we have set forth to lose our very existence.
We must burn upon the flame, why then fear the burning fire?
Why love worldly bonds? Why love worldly bonds?
We have set forth to merge with the ocean, we have set forth to surrender our all.
We must meet the Eternal One, why then gaze upon the empty shore?
Why love worldly bonds? Why love worldly bonds?
We must burn as a lamp, we must dispel the darkness of the world.
When the goal is to burn bit by bit, why fear the blackness?
Why love worldly bonds? Why love worldly bonds?
We must become the very foundation, we must remain hidden in the base.
When this has become our sole purpose, why any attachment to fame and glory?
Why love worldly bonds? Why love worldly bonds?

14. बसायें एक नया संसार , कि जिसमें छलक रहा हो प्यार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

बसायें एक नया संसार, कि जिसमें छलक रहा हो प्यार।
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

शोषक-शोषित हों न जहाँ पर, सबकी सम्पत्ति एक।
हो तन-मन में सुमन एक सा, जिसमें प्रेम विवेक॥
हो सबमें सहयोग परस्पर, एक बने घर द्वार॥
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

जाति-पाँति के बन्धन टूटें, राष्ट्र-राष्ट्र सब एक।
धर्मों में हो सत्य समन्वय, रहे न झूठी टेक॥
मिटें अन्धविश्वास जगत के, हों विज्ञान विचार॥
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

मानव की मानव भाषा हो, सबकी एक समान।
मिलें हृदय से हृदय परस्पर, हो सच्ची पहचान॥
करें वचन से, तन-मन-धन से, सब सबका उपकार॥
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

करें अहिंसा का पालन सब, बने सत्य का राज।
सत्य, अहिंसा, भक्त सभी हों, जग हो सत्य समाज॥
घर-घर स्वर्ग नचे आँगन में, मोक्ष करे अवतार॥
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

बसायें एक नया संसार, कि जिसमें छलक रहा हो प्यार।
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

14. बसायें एक नया संसार **,** कि जिसमें छलक रहा हो प्यार — **English Meaning** / भावार्थ

Let us build a new world, wherein love overflows.
Wherein love overflows.

Where there are neither exploiters nor exploited, and all wealth is shared as one.
May the same flower of love and wisdom blossom in every body and mind.
May mutual cooperation unite us all, making every home and threshold one.
Wherein love overflows.

May the shackles of caste and creed shatter, and all nations become one.
May there be a true harmony of truth in all religions, with no false dogmas remaining.
May the world's superstitions vanish, replaced by scientific and rational thought.
Wherein love overflows.

May humanity speak the single, shared language of humanity.
May heart meet heart in mutual embrace, revealing our true identity.
May everyone serve one another through word, body, mind, and wealth.
Wherein love overflows.

May all practice non-violence, and may the reign of truth be established.
May all become devotees of truth and non-violence, making the world a righteous society.
May heaven dance in the courtyard of every home, and liberation itself incarnate.
Wherein love overflows.

Let us build a new world, wherein love overflows.
Wherein love overflows.

15. बाट जोह प्रभु ! नयन थके हैं , आ न सके तो पास बुला लो   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो।
बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो॥

हृदय पीर का नीड़ बना है, किन्तु कटे हैं पंख नीर के।
उड़कर तुम आ न सकी वह, देखा लेकिन नयन चीर के॥
पर न दिखे तुम थककर बेसुध, हुई गिरी आ मिली धूल में।
जग ने कहा अश्रु झरते हैं, उठा सको तो इन्हें उठा लो॥
बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो॥

अधिक नहीं कुछ चाहा मैंने, एक मिलन का पल माँगा था।
लिपट चरण से प्राण रो सकें, ऐसा कुछ मन में जागा था॥
लेकिन नहीं सुहाया शायद, तुमको मेरा एक तृषित क्षण।
जो पा लेता तृप्त देखकर, अब तुम ही उर व्यथित सँभालो॥
बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो॥

बहुत पुकारा भगवन्! तुमको, प्राण कण्ठ में आ आ रोये।
बहुत सँवारा भगवन्! तुमको, बेकल भाव श्रमित हो सोये॥
आ न सके दो क्षण को भी क्यों, कुछ तो बोलो हे निर्मोही।
मेरी देह सौंपकर जग को, प्राणों को निज अंग लगा लो॥
बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो॥

15. बाट जोह प्रभु **!** नयन थके हैं **,** आ न सके तो पास बुला लो — **English Meaning** / भावार्थ

Watching Your path, O Lord, my eyes are weary; if You cannot come, then call me to Your side.
Watching Your path, O Lord, my eyes are weary; if You cannot come, then call me to Your side.

My heart has become a nest of pain, but the wings of my tearful soul are clipped.
It could not fly to reach You, yet it searched for You, tearing through my eyes.
But You were nowhere to be seen; exhausted and senseless, it fell and merged into the dust.
The world said these are merely falling tears; if You can lift them, then raise them up.
Watching Your path, O Lord, my eyes are weary; if You cannot come, then call me to Your side.

I did not desire much, O Lord; I had only begged for a single moment of union.
That clinging to Your feet, my soul could weep—such a longing had awakened in my heart.
But perhaps it did not please You, even this single thirsty moment of mine,
Which would have found contentment in Your sight; now, You alone must comfort this anguished heart.
Watching Your path, O Lord, my eyes are weary; if You cannot come, then call me to Your side.

I have called out to You so much, O Lord! My very breath rose to my throat and wept.
I adorned Your memory so deeply, O Lord, till my restless emotions grew weary and fell asleep.
Why could You not come even for a brief moment? Speak to me, O detached and silent One!
Surrendering this body of mine to the world, embrace my soul and make it Your own.
Watching Your path, O Lord, my eyes are weary; if You cannot come, then call me to Your side.

16. भगवान बसो इस मन में तुम , यह मन देवालय हो जाये ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

भगवान बसो इस मन में तुम, यह मन देवालय हो जाये।
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

जो कुछ जीवन में पायें हम, देने का भाव जगायें हम।
ले ले कर संचय करने की, दुष्वृत्ति नहीं अपनायें हम॥
दैवी गुण से भर कर जीवन, ईश्वर का परिचय हो जाये॥
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

मन में न कहीं दुर्भाव भरे, सबके प्रति ही सद्भाव भरे।
हो दृष्टि हमारी विस्तृत फिर, पथ हों न कहीं भटकाव भरे॥
हर कोना आलोकित होवे, ऐसा अरुणोदय हो जाये॥
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

ईश्वर के सुन्दर उपवन में, कर्तव्य करें हम हर क्षण में।
उलझें न कहीं हम संशय के, अँधियारे से कंटक वन में॥
आस्था विश्वास जगे ऐसा, हर पग फिर निर्भय हो जाये॥
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

सीधा-सादा सा जीवन हो, अम्बर सा मन का आँगन हो।
छल सकें न हमको व्यसन कभी, जन-जन के प्रति अपनापन हो॥
सन्तोष सादगी का जीवन, सुख-साधन अक्षय हो जाये॥
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

16. भगवान बसो इस मन में तुम **,** यह मन देवालय हो जाये **— English Meaning /** भावार्थ

O Lord, dwell within this mind of mine, may this mind become a sacred temple.
May the ultimate purpose of attaining this human life be fully realized.

Whatever we receive in this life, may we awaken the spirit of giving.
May we never adopt the vice of greedily taking and hoarding.
By filling our lives with divine virtues, may we attain the realization of the Divine.
May the ultimate purpose of attaining this human life be fully realized.

May no ill-will ever enter our minds, may goodwill for all fill our hearts.
May our vision become vast and broad, and our paths be free from straying.
May every corner of our being be illuminated, as if a glorious dawn has broken.
May the ultimate purpose of attaining this human life be fully realized.

In this beautiful garden of the Lord, may we perform our duties at every moment.
May we never get entangled in the dark, thorny forest of doubt and hesitation.
May such deep faith and trust awaken within us, that every step we take becomes fearless.
May the ultimate purpose of attaining this human life be fully realized.

May our lives be simple and pure, and the courtyard of our mind as vast as the sky.
May vices and addictions never deceive us, and may we feel a sense of kinship with all.
Living a life of contentment and simplicity, may our inner joy become eternal and inexhaustible.
May the ultimate purpose of attaining this human life be fully realized.

17. भगवान मेरी नैया , उस पार लगा देना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

दल-बल के साथ माया, घेरे जो मुझको आकर।
तो देखते न रहना, झट आ के बचा लेना॥
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ।
पर नाथ, कहीं तुम भी, मुझको न भुला देना॥
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

तुम देव, मैं पुजारी, तुम ईष्ट मैं उपासक।
यह बात सच है यदि तो, सच करके दिखा देना॥
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

17. भगवान मेरी नैया **,** उस पार लगा देना — **English Meaning /** भावार्थ

> *O Lord, ferry my boat safely to the other shore.*
> *You have sustained me until now, continue to sustain me in the future as well.*
> *If worldly illusion, with all its mighty forces, comes to surround me,*
> *Do not just stand and watch, rush to my rescue and save me.*
> *You have sustained me until now, continue to sustain me in the future as well.*
> *It is possible that amidst life's struggles, I may forget You,*
> *But O Lord, please do not ever forget me.*
> *You have sustained me until now, continue to sustain me in the future as well.*
> *You are the Divine, I am the worshiper; You are the Beloved Lord, I am the devotee.*
> *If this is indeed the truth, then prove it to be true.*
> *You have sustained me until now, continue to sustain me in the future as well.*

18. भले ही कहीं राह दिखती नहीं है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

भले ही कहीं राह दिखती नहीं है।
रुके पग, थकी बाँह उठती नहीं है॥
अगर पास मेरे जो, आ जाओगे।
तो जीवन नया एक, पा जाओगे॥
भले ही कहीं राह.....

अभी तक स्वयं को, नहीं जान पाये।
हम भी भले ही न, पहचान पाये॥
मगर हम तो हरदम, बुलाते रहे हैं।
दुलारी है तुमको, जगाते रहे हैं॥
अगर एक भी शब्द, सुन पाओगे।
सही लक्ष्य की राह, पा जाओगे॥
भले ही कहीं राह.....

खनक स्वर्ण की सुन, अघाते नहीं हो।
हृदय पक्ष को देख, पाते नहीं हो॥
दुःखी प्यार की प्यास, से हो रहे तुम।
तुम्हें प्यार से थपकियाँ, दे रहे हम॥
यही भाव हमसे, मिला पाओगे।
तो अमृत सुधा सिक्त, हो जाओगे॥
भले ही कहीं राह.....

तुम्हें विष भरे घट, सुहाते रहे हैं।
अमृत घट लिए हम, बुलाते रहे हैं॥
बढ़ो खुद पिओ बाँट, दो और सबको।
समय चूकने पर न, पाओगे हमको॥
समय पर जो साहस, जुटा पाओगे।
तो अनुदान अनमोल, पा जाओगे॥
भले ही कहीं राह.....

18. भले ही कहीं राह दिखती नहीं है — **English Meaning** / भावार्थ

Even if no path is visible anywhere,
The feet have stalled, and tired arms cannot rise.
If you would only come close to me,
Then a brand new life, you shall receive.
Even if no path.....

Until now, you have not known your own self,
And even us, you have failed to recognize.
Yet we have constantly been calling out to you,
We have cherished you, and kept awakening you.
If you can hear even a single word,
The path to the true destination, you shall find.
Even if no path.....

Hearing the clink of gold, you are never satiated,
The realm of the heart, you are unable to see.
You are sorrowful, aching with the thirst for love,
While we are gently comforting you with pats of love.
If you can attune this very feeling with ours,
Then drenched in divine nectar, you shall be.
Even if no path.....

Pots filled with poison have always pleased you,
While holding the pitcher of nectar, we have been calling you.
Step forward, drink it yourself, and share it with everyone,
Once the moment is missed, you will find us no more.
If you can summon courage at the right time,
Then a priceless grace, you shall receive.
Even if no path.....

19. भटक रहा है जनम - जनम से हँसा भूखा प्यासा रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

भटक रहा है जनम-जनम से हँसा भूखा प्यासा रे।
तुम लाये जल घाट-घाट से, फिर भी रहा उदासा रे॥
हँसा भूखा प्यासा रे॥

मोती का अभिलाषी हँसा, कैसे पत्थर खाये?
मान सरोवर का वासी यह, कीचड़ में अकुलाए॥
तुमने इसे कषाय-कल्मषों, में हर समय डुबाया।
दल-दल में बोलो, फिर कैसे, कर ले हँसा वासा रे?
हँसा भूखा प्यासा॥

नीर-क्षीर का ज्ञान इसे है, पर कैसे समझाए?
सद्‌गुण की पहचान इसे है, पर कैसे बतलाये?
काम-क्रोध-मद की कारा ने, बन्दी इसे बनाया।
पराधीन वाणी से कैसे, सबका करे खुलासा रे?
हँसा भूखा प्यासा॥

मिथ्या मीठी बात बनाना, कभी न इसको भाया।
कपट भरा व्यवहार न इसने, पल भर भी अपनाया॥
निर्मलता में पला, इसी से निर्मल दृष्टि बनाई।
समझा करता है यह केवल, निर्मल मन की भाषा रे॥
हँसा भूखा प्यासा॥

तन का हर आवरण रात-दिन, तुमने बहुत सजाया।
पर उसके भीतर का वासी, भूखा सदा सुलाया॥
स्वाभिमान का धनी हँस यह, कैसे भी रह लेगा।
फैलाएगा मगर न भूखा, रहकर कभी हताशा रे॥
हँसा भूखा प्यासा॥

तन के सुख के लिए न सारा, जीवन यहाँ गँवाओ।
अन्तर्मन की तुष्टि-पुष्टि को, भी कुछ पुण्य कमाओ॥
यह वह है अंगार राख की, परतें अगर हटा दी।
बन जायेगा यहीं धरा पर, स्वर्णिम सूर्य प्रभासा॥
हँसा भूखा प्यासा॥

19. भटक रहा है जनम **-** जनम से हँसा भूखा प्यासा रे — **English Meaning /** भावार्थ

Wandering from birth to birth, the swan remains hungry and thirsty.
You brought water from shore to shore, yet it remained sorrowful.
The swan remains hungry and thirsty...

Desiring only pearls, how can the swan feed on stones?
A dweller of Lake Mansarovar, it suffocates in the mud.
You have drowned it in passions and impurities at all times.
Tell me, in this swamp, how can the swan make its home?
The swan remains hungry and thirsty...

It possesses the wisdom to separate water from milk, but how can it explain?
It recognizes true virtue, but how can it express?
The prison of lust, anger, and pride has made it a captive.
With a subjugated voice, how can it reveal the truth to all?
The swan remains hungry and thirsty...

Weaving false, sweet words has never pleased it.
Deceitful behavior, it never adopted even for a single moment.
Nurtured in purity, it has thus formed a pure vision.
It understands only the language of a pure heart.
The swan remains hungry and thirsty...

Day and night, you adorned every outer covering of the body.
But the dweller residing within, you always put to sleep hungry.
Rich in self-respect, this swan will survive in any condition.
But even while hungry, it will never spread despair.
The swan remains hungry and thirsty...

Do not waste your entire life here for the pleasures of the body.
To satisfy and nourish the inner self, earn some spiritual merit too.
It is that burning ember, if only the layers of ash are removed,
It will become, right here on earth, the radiant golden sun.
The swan remains hungry and thirsty...

20. बिना दर्शन किये तेरे , नहीं दिल को करारी है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

बिना दर्शन किये तेरे, नहीं दिल को करारी है।
बिना दर्शन किये तेरे, नहीं दिल को करारी है॥

कमल ज्यों नीर बिन सूखे, पपीहा ध्वनि पुकारी है।
बिना जल मीन नहीं जीवे, वही गति अब हमारी है॥

नहीं है और की इच्छा, तेरा ही नाम कारी है।
फिरा दृग दे इधर को तू, यही विनती हमारी है॥

भला कैसे हो हा सारी, मिटी श्रुतबोधनी विद्या।
बढ़ा दे फेर इसको अब, यही उर आस धारी है॥

न देखूँ जब तलक तुझको, मुझे जीना भी भारी है।
मुझे दर्शन दिखा दे क्यों, वृथा सुध-बुध बिसारी है॥

नहीं हम मान के भूखे, नहीं दौलत पियारी है।
फक्त चाहे शरण तेरी, 'निदाँ' ने यों पुकारी है॥

20. बिना दर्शन किये तेरे **,** नहीं दिल को करारी है — **English Meaning /** भावार्थ

Without beholding Your divine vision, my heart finds no peace.
Without beholding Your divine vision, my heart finds no peace.
Just as the lotus withers without water, and the rain-bird cries out in yearning,
Just as a fish cannot survive without water, such is my state now.
I have no other desire, Your Name alone is my salvation.
Turn Your eyes towards me, this is my only prayer.
Alas, how can any good happen when the wisdom of sacred knowledge is lost?
Revive and expand it once more, this is the hope my heart holds.
Until I gaze upon You, even living is a heavy burden to bear.
Reveal Your divine form to me; why have You left me to lose my senses in vain?
I hunger not for honor, nor is wealth dear to me.
I seek only Your sanctuary; thus does 'Nidan' cry out to You.

21. ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥

हे करुणाकर करुणा दे दो, दुनिया दुःख-दर्द बटाएँ।
शुष्क भावनाहीन जगत में, भावों की रसधार बहाएँ॥
हे युगदेव तृषित हृदयों को, प्यार तुम्हारा मिलता जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

वेदमूर्ति वह ज्ञान हमें दो, भ्रम के सारे बन्धन काटें।
सद्विवेक पाकर तुमसे प्रभु, वह प्रसाद सब जग को बाँटें॥
हे प्रभु दैवी अनुशासन में, सबका जीवन ढलता जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

हे युग-दृष्टा हे युग-सृष्टा, नवल सृजन की शक्ति हमें दो।
सब विभूतियाँ तुम्हें सौंप दें, ऐसी निर्मल भक्ति हमें दो॥
केवल तुम्हें वरण करने का, भाव हृदय में पलता जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

महाकाल इस कालचक्र को, नवल सृजन हित प्रेरित कर दो।
हम सबका पुरुषार्थ एक कर, अपने साथ नियोजित कर लो॥
विध्वंसों को काट सृजन का, चक्र तीव्र गति चलता जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए।
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

21. ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन — **English Meaning** / भावार्थ

May life bloom like a sacred Brahma-lotus, and be offered at the feet of the Lord.
In the sentient and insentient, in every single atom, may the awareness of Your presence be felt evermore.

O Ocean of Mercy, bestow Your compassion, so we may share and alleviate the world's pain and suffering.
In this dry, emotionless world, may we flow a stream of nectar-like devotion.
O Lord of the Era, may thirsty hearts continuously receive Your divine love.
In the sentient and insentient, in every single atom, may the awareness of Your presence be felt evermore.
May life bloom like a sacred Brahma-lotus, and be offered at the feet of the Lord.
Be offered at the feet of the Lord.

O Embodiment of the Vedas, grant us that wisdom which severs all bonds of illusion.
Attaining righteous discernment from You, O Lord, may we share that sacred offering with the entire world.
O Lord, in divine discipline, may the lives of all be beautifully molded.
In the sentient and insentient, in every single atom, may the awareness of Your presence be felt evermore.
May life bloom like a sacred Brahma-lotus, and be offered at the feet of the Lord.
Be offered at the feet of the Lord.

O Visionary of the Era, O Creator of the Era, grant us the power of new creation.
May we surrender all our talents and treasures to You; grant us such pure devotion.
May the yearning to choose only You be nurtured forever in our hearts.
In the sentient and insentient, in every single atom, may the awareness of Your presence be felt evermore.
May life bloom like a sacred Brahma-lotus, and be offered at the feet of the Lord.
Be offered at the feet of the Lord.

O Mahakal, Lord of Time, inspire this wheel of time for a new creation.
Unite all our endeavors as one, and align us in service with You.
Overcoming all destruction, may the wheel of creation spin with rapid speed.
In the sentient and insentient, in every single atom, may the awareness of Your presence be felt evermore.
May life bloom like a sacred Brahma-lotus, and be offered at the feet of the Lord.
Be offered at the feet of the Lord.

In the sentient and insentient, in every single atom, may the awareness of Your presence be felt evermore.
May life bloom like a sacred Brahma-lotus, and be offered at the feet of the Lord.
Be offered at the feet of the Lord.

22. चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना , क्या करूँ प्यार की धार रुकती नहीं   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना, क्या करूँ प्यार की धार रुकती नहीं।
कौन कितना अभी तक इसे पी सका, पता तो नहीं किन्तु चुकती नहीं॥

स्नेह के स्रोत से फूटते हर समय, छल-छलाकर छलक छूटते हर समय।
कोई लूटे न लूटे कहो क्या करें, हम लुटा कर मजा लूटते हर समय॥
जीत ही जीत है बाँटने में सदा, एक क्षण द्वार पर हाट रुकती नहीं॥
चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना ....

यह पता है कि प्यासे बहुत है अभी, प्यार के बिना उदासे बहुत हैं अभी।
प्यार के नाम पर लूट ही लूट है, इस तरह के तमाशे बहुत हैं अभी॥
है जरूरत जहाँ वस्तुतः प्यार की, प्यार की धार उस द्वार रुकती नहीं॥
चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना ....

इसलिये प्यार की धार बहती सदा, हर समय धार हर मार सहती सदा।
वह उतर जाये हर प्यास के कंठ में, प्यार की धार की साध रहती सदा॥
देखकर हर तड़पती हुई प्यास को, प्राण से प्रीति बौछार रुकती नहीं॥
चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना ....

प्यार की धार तो खेलती प्राण पर, बूँद टिकती नहीं शुष्क पाषाण पर।
प्यार की पीर से जो पिघलने लगे, क्यों नहीं वह हृदय आज इन्सान पर॥
कोई उर्वर धरा तो न प्यासी रहे, इसलिये यह द्रवित धार रुकती नहीं॥
चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना ....

22. चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना **,** क्या करूँ प्यार की धार रुकती नहीं **— English Meaning /** भावार्थ

Peace does not come without sharing love, what can I do, the stream of love does not stop.
Who has been able to drink how much of it till now is unknown, yet it never runs dry.
Bursting forth from the source of affection at all times, overflowing and splashing out at every moment.
Whether anyone gathers it or not, tell me what to do, we find supreme joy in giving it away at all times.
There is only victory in sharing always, not for a single moment does this marketplace at the doorstep cease.
Peace does not come without sharing love ....

It is well known that many are still thirsty, many are still sorrowful without love.
In the name of love, there is only exploitation, such spectacles are many even now.
Where there is truly a need for love, the stream of love does not stop at that door.
Peace does not come without sharing love ....

Therefore, the stream of love flows eternally, bearing every blow at all times.
That it may quench the throat of every thirsty soul, this remains the eternal longing of the stream of love.
Seeing every agonizing thirst, the shower of love from the very soul does not stop.
Peace does not come without sharing love ....

The stream of love plays with life itself, yet a drop does not linger on dry stone.
Why does that heart, which begins to melt with the pain of love, not belong to humanity today?
Lest any fertile land remain thirsty, therefore this liquid stream of compassion does not stop.
Peace does not come without sharing love ....

23. चलो बदल दो राह समय की   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

चलो बदल दो राह समय की. . . . .
बदल दो राह समय की. . . . .

तुम कर्मों से भाग्य बदल दो, भावी को निश्चय का बल दो।
युग अपने निर्भय हाथों से, सिरा पकड़ लो आज प्रलय की॥
बदल दो राह समय की. . . . .

बात करो नौका खेने की, उस तट तक पहुँचा देने की।
बन्दी कर लो मँझधारों को, तुम सत्ता मानो न निलय की॥
बदल दो राह समय की. . . . .

हार-हार का स्वप्न असम्भव, एक अटल हो अभिनव अनुभव।
स्वयं मनुजता परिभाषा है, जीवन की, जागृति की जय की॥
बदल दो राह समय की. . . . .

23. चलो बदल दो राह समय की — **English Meaning** / भावार्थ

> *Come, change the course of time. . . . .*
> *Change the course of time. . . . .*
> *Change your destiny through your actions, give the strength of resolve to the future.*
> *O Era, with your fearless hands, seize the reins of destruction today.*
> *Change the course of time. . . . .*
> *Speak of rowing the vessel, of delivering it to that distant shore.*
> *Imprison the turbulent mid-currents, accept not the dominion of the abyss.*
> *Change the course of time. . . . .*
> *Let the dream of defeat be impossible, let there be one unwavering, novel experience.*
> *Humanity itself is the definition of life, of awakening, and of victory.*
> *Change the course of time. . . . .*

24. चल रहा अन्तःकरण में   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा।
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा॥

यह शरीरी कार्य सारे, यंत्रवत ही चल रहे हैं।
आचरण सब आपके अनुशासनों में ढल रहे हैं॥
आपके उद्देश्य हित लग जाए यह जीवन हमारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

कामनाएँ सब तुम्हारी याद में ही खो गई हैं।
भावनाएँ सब तुम्हारी भावना में खो गई हैं॥
हो रहा है रात-दिन शुभ भावमय अर्चन तुम्हारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

दिख रहे हैं मस्तकों में आपके सुविचार पलते।
और प्रतिभा रूप में प्रभु आपके उपहार ढलते॥
बीज बन बिखरे तुम्हीं यह जग बना उपवन तुम्हारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

प्यार था तुमको जगत से वह हमें प्रिय लग रहा है।
और उनके हित सतत ही प्राण तिल-तिल जल रहा है॥
सार्थक कर दो प्रभु यों बीज सा गलना हमारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

पास आकर भी तुम्हें तन-मन विकल ही रह रहे हैं।
निकटतम सान्निध्य पाने हेतु प्राण मचल रहे हैं॥
अब तुम्हीं इनको संभालो बस नहीं चलता हमारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

24. चल रहा अन्तःकरण में — **English Meaning** / भावार्थ

Within my deepest consciousness, day and night, flows your contemplation.
This body is yours, this mind is yours, every single moment of time is yours.

All these physical actions are running mechanically, like an instrument.
All conduct is being molded in the crucible of your divine discipline.
May this life of ours be dedicated entirely to your divine purpose.
This body is yours, this mind is yours, every single moment of time is yours.
Within my deepest consciousness, day and night, flows your contemplation.
Within my deepest consciousness...

All desires have dissolved in the sweet remembrance of you.
All emotions have merged completely into your divine feeling.
Day and night, your auspicious, devotion-filled worship is taking place.
This body is yours, this mind is yours, every single moment of time is yours.
Within my deepest consciousness, day and night, flows your contemplation.
Within my deepest consciousness...

Within every mind, your noble thoughts are seen nurturing.
And in the form of talent and genius, O Lord, your gifts are taking shape.
You scattered yourself as seeds, and this world became your garden.
This body is yours, this mind is yours, every single moment of time is yours.
Within my deepest consciousness, day and night, flows your contemplation.
Within my deepest consciousness...

The love you had for the world has now become dear to us.
And for their welfare, our life-force burns constantly, bit by bit.
Make meaningful, O Lord, this dissolving of ours like a seed.
This body is yours, this mind is yours, every single moment of time is yours.
Within my deepest consciousness, day and night, flows your contemplation.
Within my deepest consciousness...

Even upon drawing close to you, the body and mind remain restless.
To attain the closest divine proximity, the life-force yearns eagerly.
Now you alone must hold and guide them, for we have no control left.
This body is yours, this mind is yours, every single moment of time is yours.
Within my deepest consciousness, day and night, flows your contemplation.
Within my deepest consciousness...

25. चर - अचर सभी जड़ चेतन में , हे नाथ तुम्हारा रूप दिखे   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

चर-अचर सभी जड़ चेतन में, हे नाथ तुम्हारा रूप दिखे।
रोते दुखियों के आँसू में, हे देव तुम्हारा दरस मिले॥

हर पल तेरा ही ध्यान रहे, हर क्षण होठों पर नाम रहे।
जीवन के अँधेरे पथ में भी, कर्तव्य भाव का ज्ञान रहे॥
थक जाऊँ न मैं लम्बा पथ है, हे देव तुम्हारी शरण मिले॥

जब भी जन्मू इस धरती पर, हों साथ आप ही ध्यान रहे।
स्थूल सूक्ष्म कारण तक में भी, मिलने का वरदान रहे॥
हे देव मार्गदर्शक तुम हो, ऐसा हमको विश्वास मिले॥

हे करुणा के सागर प्रभुवर, मुझमें अटूट श्रद्धा भर दो।
यह तन-मन-जीवन निर्मल हो, परमार्थ भाव मुझमें भर दो॥
हो प्राण तुम्हीं, हो श्वाँस तुम्हीं, हे नाथ यही आभास मिले॥

हो साध्य तुम्हीं आराध्य तुम्हीं, साधन तन को स्वीकार करो।
है शक्ति-भक्ति नहीं साम-गान, फिर भी मुझ पर उपकार करो॥
जब तक हम पहुँचें मंजिल तक, कण-कण में नव उल्लास मिले॥

अब लक्ष्य बने हर मानव का, धरती को स्वर्ग बनाना है।
धरती पर रहे न अन्धकार, ऐसा देवत्व जगाना है॥
जब तक इस तन में श्वाँस रहे, हे नाथ तुम्हारी भक्ति मिले॥

25. चर **-** अचर सभी जड़ चेतन में **,** हे नाथ तुम्हारा रूप दिखे — **English Meaning** / भावार्थ

In the animate and inanimate, the sentient and insentient, O Lord, may I behold Your divine form.
In the tears of the weeping and suffering, O Divine One, may I find Your sacred presence.

May my mind contemplate You every moment, and Your name dwell on my lips with every breath.
Even upon the dark pathways of life, may the awareness of my duty guide me.
Lest I grow weary on this long journey, O Divine One, grant me the shelter of Your refuge.

Whenever I am reborn upon this earth, may You be with me, and may I remain ever mindful of You.
In the physical, the subtle, and the causal realms, grant me the boon of uniting with You.
O Divine Guide, bless me with the unwavering faith that You are ever leading my way.

O Ocean of Compassion, Supreme Lord, fill my heart with unwavering, absolute faith.
May this body, mind, and life become pure, and fill me with the spirit of selfless service.
You are my life-force, You are my breath—O Lord, grant me this constant realization.

You are the ultimate Goal, You are the Adored One; accept this body as Your instrument.
I possess neither strength, nor devotion, nor the hymns of praise, yet bestow Your grace upon me.
Until we reach our final destination, may every atom resonate with a new, divine joy.

Let it now become the goal of every human being to transform this earth into heaven.
Let no darkness remain upon this earth; awaken such divinity within us.
As long as breath remains within this body, O Lord, grant me Your eternal devotion.

26. दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा, दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा।
मेरा तो कुछ नहीं जगत में, दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा॥
तन का दीप उमर की बाती, चहुँ दिशि में उजियार तुम्हारा॥

एक किरण में ज्योति पुँज तुम, भीतर-बाहर कहीं नहीं तम।
दृष्टि पंथ आलोकित तुमसे, ज्योतिर्मय श्रृंगार तुम्हारा॥

तुम निशि- दिन, तुम साँझ सकारे, तुमने आकुल हृदय उबारे।
तुम घट, पनघट, बंशीवट तुम, जीवन भर आभार तुम्हारा॥

धार अजानी निठुर किनारा, डूब रहे को तुम ही सहारा।
तट के बन्धन सभी तुम्हारे, सम्बल हर मझधार तुम्हारा॥

तुम घन-सावन, तुम मन भावन, तुम सा कौन जगत में पावन।
तुम वृन्दावन, तुम्हीं द्वारिका, अग-जग को आधार तुम्हारा॥

मन्दिर, मस्जिद हर गुरुद्वारे, हम भटके हैं द्वारे-द्वारे।
इस जीवन में रास न आया, भेद-भरा संसार तुम्हारा॥

26. दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा — **English Meaning** / भावार्थ

The pain is Yours, the love is Yours; the pain is Yours, the love is Yours.
Nothing in this world is mine; the pain is Yours, the love is Yours.

The body is the lamp, a lifetime the wick; the light in all directions is Yours.
In a single ray, You are the ocean of light; within or without, there is no darkness.
The path of my vision is illuminated by You; Your adornment is made of pure light.

You are night and day, You are dusk and dawn; You have delivered the anxious heart.
You are the vessel, the riverbank, the sacred grove of the flute; my life is filled with eternal gratitude to You.

The current is unknown, the shore is cruel; for the drowning soul, You are the only refuge.
All the bonds of the shore are Yours; Your support sustains in every midstream.

You are the monsoon cloud, You are the delight of the soul; who in this world is as pure as You?
You are Vrindavan, You are Dwarika; Your foundation sustains the entire creation.

At temples, mosques, and every Gurudwara, we have wandered from door to door.
In this life, I could never find peace in this world of Yours, so full of divisions.

27. दीपक सा तिल - तिल जलना ही   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

दीपक सा तिल-तिल जलना ही, मुझको है स्वीकार।
मैं मानव हूँ मेरा केवल, सेवा पर अधिकार॥

पूर्ण नहीं हूँ किन्तु मुझे है, इतना दृढ़ विश्वास।
अंश उसी का हूँ जिसके हैं, यह धरती आकाश॥
सृष्टि-प्रलय, उत्थान-पतन सब, उसके ही हैं खेल।
सुख–दुःख हैं उसको समान जो, रखता इससे मेल॥
उसका दिया सभी मुझको, लगता है उपहार॥
दीपक सा तिल-तिल जलना ही, मुझको है स्वीकार।
मैं मानव हूँ मेरा केवल, सेवा पर अधिकार॥

उसने इतना दिया कि वह ही, खर्च नहीं होता।
प्यार, ज्ञान, सहकार बाँटने से देना होता॥
दुनियावी दौलत तो केवल, प्रतिभा की छाया।
साथ नहीं कुछ जायेगा, कुछ साथ नहीं आया॥
उसे समर्पित हुआ सार्थक, बाकी सब बेकार॥
दीपक सा तिल-तिल जलना ही, मुझको है स्वीकार।
मैं मानव हूँ मेरा केवल, सेवा पर अधिकार॥

जीवन की डाली पर खिलते, रंग बिरंगे फूल।
कभी उन्हें सहलाता माली, कभी सताते शूल॥
मगर पुष्प तो दुःख सहकर भी, फैलाते मुस्कान।
उनकी इस महानता का, करते भौंरे गुणगान॥
इसीलिए तो उनसे करता, है सारा जग प्यार॥
दीपक सा तिल-तिल जलना ही, मुझको है स्वीकार।
मैं मानव हूँ मेरा केवल, सेवा पर अधिकार॥

27. दीपक सा तिल **-** तिल जलना ही — **English Meaning** / भावार्थ

> *To burn slowly, moment by moment like a lamp, is all I accept.*
> *I am but human, and service alone is my rightful duty.*
>
> *I am not perfect, yet I hold this firm belief,*
> *I am a part of the One to whom belong this earth and sky.*
> *Creation and dissolution, rise and fall, are all His divine play,*
> *Pleasure and pain are alike to one who remains in harmony with Him.*
> *Everything bestowed by Him feels like a blessed gift to me.*
>
> *To burn slowly, moment by moment like a lamp, is all I accept.*
> *I am but human, and service alone is my rightful duty.*
>
> *He has given so abundantly that it can never be exhausted,*
> *Love, wisdom, and cooperation are truly realized through sharing.*
> *Worldly wealth is merely a shadow of transient talent,*
> *Nothing will go with us, and nothing came with us.*
> *Only what is surrendered to Him is meaningful, all else is in vain.*
>
> *To burn slowly, moment by moment like a lamp, is all I accept.*
> *I am but human, and service alone is my rightful duty.*
>
> *Upon the branch of life bloom flowers of many colors,*
> *Sometimes the gardener caresses them, sometimes the thorns torment them.*
> *Yet the flowers, even while enduring pain, continue to spread their smiles,*
> *The bumblebees sing praises of this noble greatness of theirs.*
> *That is why the entire world showers them with love.*
>
> *To burn slowly, moment by moment like a lamp, is all I accept.*
> *I am but human, and service alone is my rightful duty.*

28. दीप हूँ जलता रहूँगा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

दीप हूँ जलता रहूँगा।
मैं प्रलय की आँधियों से, अन्त तक लड़ता रहूँगा॥

पार जाऊँगा मेरा साहस, कभी हारा नहीं है।
जो मिटा अस्तित्व दे, ऐसी कोई धारा नहीं है॥
कौन रोकेगा स्वयं तूफान, थककर रुक गये हैं।
हर लहर मेरा किनारा, ध्येय तक बढ़ता रहूँगा॥

दीप हूँ जलता रहूँगा।
मैं प्रलय की आँधियों से, अन्त तक लड़ता रहूँगा॥

तोड़ दी अवरोध की सारी, शिलाएँ एक क्षण में।
मैं धरा का प्यार मुझको, स्नेह देते सब डगर में॥
शीत वर्षा और आतप कर, न पाये क्षीण गति को।
बिजलियों की कौंध में भी, पंथ गढ़ता ही रहूँगा॥

दीप हूँ जलता रहूँगा।
मैं प्रलय की आँधियों से, अन्त तक लड़ता रहूँगा॥

कर लिया विषपान शिव हूँ, मृत्यु मेरा क्या करेगी।
मैं स्वयं जय हूँ, पराजय फिर मुझे क्यों कर वरेगी॥
बन स्वयं वरदान मैंने श्राप को दे दी चुनौती।
हूँ स्वयं संकल्प पथ पर सतत बढ़ता ही रहूँगा ॥

दीप हूँ जलता रहूँगा।
मैं प्रलय की आँधियों से, अन्त तक लड़ता रहूँगा॥

28. दीप हूँ जलता रहूँगा — **English Meaning / भावार्थ**

I am a lamp, I shall keep burning.
Against the cataclysmic storms, I shall fight till the very end.
I will cross over, my courage has never known defeat.
There is no such current that can erase my existence.
Who can stop me, when the tempests themselves have grown weary and ceased?
Every wave is my shore, I shall keep advancing toward my goal.
I am a lamp, I shall keep burning.
Against the cataclysmic storms, I shall fight till the very end.
I shattered all the boulders of obstacles in a single moment.
I am the beloved of the earth, everyone showers me with affection on every path.
Cold, rain, and scorching heat could not diminish my pace.
Even in the blinding flash of lightning, I shall keep forging my path.
I am a lamp, I shall keep burning.
Against the cataclysmic storms, I shall fight till the very end.
Having drunk the poison, I am Shiva; what can death do to me?
I am victory itself, why then would defeat ever claim me?
Becoming a boon myself, I have challenged the curse.
I am the resolve itself, on this path I shall keep moving forward eternally.
I am a lamp, I shall keep burning.
Against the cataclysmic storms, I shall fight till the very end.

29. देख खुला है द्वार पुजारी   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

देख खुला है द्वार पुजारी, देख खुला है द्वार पुजारी।
बैठ गया क्यों फेंक धूल में, फूलों का यह हार पुजारी॥

स्वर्ण कमल से खिले हुए हैं, मन्दिर के वे कलश मनोहर।
मृदुल पवन के शुभ अंचल में, फहर रहा पावन ध्वज सुंदर॥
नयन मूद तू सोच रहा क्या, देख तनिक उस पार पुजारी॥

क्या सहलाता इन छालों को, तू पूजा का थाल उठा ले।
देख रहा तू क्या पथ पर ये, पर्वत ये नदिया ये नाले॥
शीतल हो जायेंगे क्षण में, ये जलते अंगार पुजारी॥

भाव प्रवाह उमड़ने दे तू, लहराने दे पावन सागर।
मिल जायेगीं नदियाँ उसमें, डूबेंगे नभचुम्बी गिरिवर॥
रुक न सकी है अब तक जग में, शुद्ध प्रेम की धार पुजारी॥

थाल सजाए आज जा रहा, तू जिसकी पूजा करने को।
आयेगा वह स्वयं दौड़कर, तुझसे पथ में ही मिलने को॥
गूँथ हृदय के पुष्प तुझे वह, पहनाएगा हार पुजारी॥

29. देख खुला है द्वार पुजारी — **English Meaning** / भावार्थ

Behold, the door is open, O priest! Behold, the door is open, O priest!
Why have you sat down, casting into the dust this garland of flowers, O priest?

Blooming like golden lotuses are those enchanting spires of the temple.
In the auspicious embrace of the gentle breeze, the beautiful, sacred flag flutters.
With closed eyes, what do you ponder? Look just a little beyond, O priest!

Why do you caress these blisters? Lift up your platter of worship!
What are you staring at on the path—these mountains, these rivers, these streams?
They shall turn cool in an instant, these burning embers, O priest!

Let the torrent of devotion surge, let the sacred ocean wave and swell.
All rivers shall merge into it, and the sky-kissing mountains shall submerge.
Never has it been stopped in this world—the stream of pure love, O priest!

He, to worship whom you go today with a decorated platter,
Shall Himself come running to meet you right on the path.
Weaving the blossoms of your heart, He will adorn you with a garland, O priest!

30. दे प्रभो ! वरदान ऐसा , दे विभो वरदान ऐसा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

दे प्रभो! वरदान ऐसा, दे विभो वरदान ऐसा।
भूल जाऊँ भेद सब, अपना पराया मान कैसा॥

मुक्त होऊँ बन्धनों से, मोह माया पाश टूटे।
स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष आदिक, दुर्गुणों का संग छूटे॥
प्रेम मानस में भरा हो, हो हृदय में शान्ति छाई।
देखता होऊँ जिधर मैं, दे उधर तू ही दिखाई॥
नष्ट हो सब भिन्नता फिर, वैर और विरोध कैसा॥
भूल जाऊँ भेद सब, अपना पराया मान कैसा॥
दे प्रभो! वरदान ऐसा . . . .

ज्ञान के आलोक से, उज्ज्वल बने यह चित्त मेरा।
लुप्त हो अज्ञान का, अविचार का छाया अँधेरा॥
हो प्रभो परमार्थ के, शुभ कार्य में रुचि नित्य मेरी।
दीन-दुखियों की कुटी में, ही मिले अनुभूति तेरी॥
दूसरों के दुःख को, समझूँ सदा मैं आप जैसा॥
भूल जाऊँ भेद सब, अपना पराया मान कैसा॥
दे प्रभो! वरदान ऐसा . . . .

हो अभय, अविवेक तज, शुचि सत्य-पथ गामी बनूँ मैं।
आपदाओं से भला क्या, काल से भी ना डरूँ मैं॥
सत्य को ही धर्म मानूँ, सत्य की ही साधना में।
सत्य के ही रूप में, तेरी करूँ आराधना मैं॥
भूल जाऊँ भेद सब, अपना पराया मान कैसा॥
दे प्रभो! वरदान ऐसा . . . .

30. दे प्रभो **!** वरदान ऐसा **,** दे विभो वरदान ऐसा — **English Meaning** / भावार्थ

Grant me, O Lord, such a boon; grant me, O Divine Lord, such a boon.
May I forget all distinctions; what is this notion of 'mine' and 'thine'?
May I be liberated from all bonds, may the shackles of attachment and illusion shatter.
May the company of vices like selfishness, jealousy, and hatred be severed forever.
May my mind be filled with love, and may peace envelop my heart.
Whichever direction I look, may I behold only You.
May all sense of separation be destroyed; then what room is there for enmity and discord?
May I forget all distinctions; what is this notion of 'mine' and 'thine'?
Grant me, O Lord, such a boon . . . .
By the light of divine wisdom, may this consciousness of mine become radiant.
May the dark shadow of ignorance and thoughtlessness vanish away.
O Lord, may my heart always delight in the noble deeds of selfless service.
In the humble cottage of the poor and suffering, may I experience Your divine presence.
May I always feel the pain of others as if it were my very own.
May I forget all distinctions; what is this notion of 'mine' and 'thine'?
Grant me, O Lord, such a boon . . . .
Becoming fearless, shedding all delusion, may I walk the pure path of truth.
Why fear any calamity? May I not tremble even before death itself.
May I hold Truth alone as my righteousness, and in the devotion to Truth,
In the very form of Truth, may I worship You.
May I forget all distinctions; what is this notion of 'mine' and 'thine'?
Grant me, O Lord, such a boon . . . .

31. दिव्य अनुदान देने खड़े देवता , है ललक किन्तु उपकार कैसे करें ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

दिव्य अनुदान देने खड़े देवता, है ललक किन्तु उपकार कैसे करें।
लोभ मद-मोह की गन्दगी से भरे, पात्र में वे विमल नीर कैसे भरें॥

प्रभु कृपा को सुगन्धें मिलेंगी नहीं, तीव्र दुर्गन्ध से हो अगर मन भरा।
खिल सकेंगे भला स्वस्थ कैसे सुमन, यदि रहे घास से पूर्ण उपवन भरा॥
कंकड़ों पत्थरों का लिये बोझ हम, अब उफनता हुआ ज्वार कैसे तरें॥

हम बँधे कामनाओं की जंजीर से, हर समय नर्क की यातना सह रहे।
लोक-कल्याण की भावना के बिना, एक विकराल दावाग्नि में दह रहे॥
सिर्फ अपने दुःखों से दुखी जो रहे, अन्य की वे हृदय पीर कैसे हरें॥

दिव्य अनुदान पाना अगर चाहते, स्वच्छ पहले करें पात्र मन का स्वयं।
लोक-हित के प्रबल ताप में हम सभी, स्वार्थ अपना गला दें मिटा दें अहम्॥
स्वार्थ में श्रेष्ठ प्रतिभा सनी देखकर, देवता आज विश्वास किसका करें॥

माँग है आज इन्सानियत की यही, भाव-सम्वेदनाएँ न सूखी रहें।
प्रेम-सद्भावना की विमल गन्ध से, हर हृदय में उमंगें नयी फिर भरें॥
आज हमसे नियन्ता यही चाहता, दिव्यता की प्रबल साधना हम करें॥

दिव्य अनुदान देने खड़े देवता, है ललक किन्तु उपकार कैसे करें।
लोभ मद-मोह की गन्दगी से भरे, पात्र में वे विमल नीर कैसे भरें॥

31. दिव्य अनुदान देने खड़े देवता **,** है ललक किन्तु उपकार कैसे करें **— English Meaning /** भावार्थ

The deities stand ready to bestow divine blessings, they yearn to help, yet how can they confer their grace?
In a vessel filled with the filth of greed, pride, and attachment, how can they pour the pure, sacred water?

The fragrance of divine grace will find no place, if the mind remains filled with a foul stench.
How can healthy, beautiful flowers ever bloom, if the garden is overrun with wild weeds?
Carrying the heavy burden of pebbles and stones, how can we cross this surging, turbulent tide?

Bound by the chains of worldly desires, we suffer the torments of hell at every moment.
Without the spirit of selfless service to the world, we burn in a terrifying, raging forest fire.
Those who remain consumed only by their own sorrows, how can they heal the pain of another's heart?

If we truly wish to receive divine blessings, we must first purify the vessel of our own mind.
In the intense fire of working for the world's welfare, let us melt our selfishness and dissolve our ego.
Seeing the finest talents steeped in selfishness, whom can the deities trust today?

This is the urgent demand of humanity today, that our deep feelings and empathy must not run dry.
With the pure fragrance of love and goodwill, let us fill every heart with new enthusiasm once more.
Today, the Supreme Creator desires this of us, that we engage in the intense spiritual practice of divinity.

The deities stand ready to bestow divine blessings, they yearn to help, yet how can they confer their grace?
In a vessel filled with the filth of greed, pride, and attachment, how can they pour the pure, sacred water?

32. दुःखी चरण लम्बी मंजिल से , लेकिन तनिक नहीं कतराया   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

दुःखी चरण लम्बी मंजिल से, लेकिन तनिक नहीं कतराया।
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

आतुर लोचन लिए पन्थ में, बैठा हूँ चिर साधक तेरा।
तिमिरा छिन्न हुआ यह जीवन, छाया है अवसाद घनेरा॥
है तुझसे मिलने की आशा, तेरे दर्शन की अभिलाषा।
अजर-अमर विश्वास लिए हूँ, तो भी जी मेरा अकुलाया॥
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

यदि क्षण-भर भी पा जाता मैं, तेरा प्यार विकल जीवन में।
रह न सकेगी कंचन काया, वसुधा के विस्तृत अंचल में॥
भाव-भक्ति है बढ़ती जाती, नीर बिन्दु आँखें बरसाती।
जर्जर तन है दुःखमय जीवन, मैं तो जगती से उतकाया॥
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

तेरा दर्शन मिले अगर तो, इस जग का संहार मिटाऊँ।
तेरी करुणामय छवि जन-जन, के मन मन्दिर में बिठलाऊँ॥
होकर निडर अकेला चल दूँ, घर-घर प्रज्ञा ज्योति जलाने।
दिखला दूँ सारी दुनियाँ को, हर प्राणी में वही समाया॥
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

दानवपन जग ने अपनाया, यह मुझको अब नहीं सुहाता।
मैं तो विह्वल हुआ जगती में, चैन नहीं कुछ मन में पाता॥
सहता हूँ अब भी आघातें, बीत चुकी कितनी ही रातें।
गिन-गिन तारे नील गगन के, आँखों से था नीर बहाया॥
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

दुःखी चरण लम्बी मंजिल से, लेकिन तनिक नहीं कतराया।
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

32. दुःखी चरण लम्बी मंजिल से **,** लेकिन तनिक नहीं कतराया — **English Meaning** / भावार्थ

Weary are my feet from the long journey, yet they shrank not back even a little.
I have grown weary searching and searching, yet I found not Your abode.

With eager, longing eyes upon the path, I sit as Your eternal seeker.
This life is shattered by darkness, and a deep, heavy gloom has cast its shadow.
I hold the hope of meeting You, the deep yearning for Your divine vision.
I carry an ageless, immortal faith, yet my heart grows restless and anxious.
I have grown weary searching and searching, yet I found not Your abode.

If only for a single moment I could receive Your love in this restless life,
This golden body would no longer be bound to the vast lap of this earth.
My devotion and love keep overflowing, as my eyes rain down drops of tears.
My body is frail, my life is sorrowful, and I have grown weary of this world.
I have grown weary searching and searching, yet I found not Your abode.

If I could but receive Your vision, I would erase the destruction of this world.
I would enshrine Your compassionate form in the temple of every human heart.
Fearless and alone, I would set forth to light the lamp of wisdom in every home,
To show the entire world that the same Divine dwells within every living being.
I have grown weary searching and searching, yet I found not Your abode.

The world has embraced demoniac ways, which no longer pleases my soul.
I wander distressed in this world, finding no peace within my mind.
I still endure the blows of life, while countless nights have passed away,
Counting the stars of the blue sky, as tears streamed from my eyes.
I have grown weary searching and searching, yet I found not Your abode.

Weary are my feet from the long journey, yet they shrank not back even a little.
I have grown weary searching and searching, yet I found not Your abode.

33. गँवा दिया हमने जीवन में , धर्म और ईमान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

गँवा दिया हमने जीवन में,धर्म और ईमान।
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

हमको दिया बहुत ईश्वर ने, हमने नहीं सहेजा।
भूल गये किसलिए प्रभू ने, हमें धरा पर भेजा॥
कभी न मन से यहाँ सँवारा, ईश्वर का उद्यान।
किया इकट्ठा हमने केवल, अपना सुख सामान॥
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

पाई सुन्दर देह कि जैसे, नहीं किसी प्राणी की।
सत्कर्मों की कभी न हमने, इससे अगवानी की॥
नहीं किसी पल आया हमको, किसी दुखी का ध्यान।
दिया न तन से कभी किसी को, सुख-सेवा का दान॥
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

बिन सोचे सर्वदा स्वार्थ में, अपना समय गँवाया।
धन तो बहुत कमाया लेकिन, सुख-सन्तोष न पाया॥
लिया कष्ट में नाम राम का, किया न उसका काम।
भाग-दौड़ में यहाँ बिताये, हमने आठों याम॥
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

श्रम का कोई अंश न बिल्कुल, काम किसी के आया।
श्रम-सेवा का पंथ न हमने, कभी यहाँ अपनाया॥
किया यहाँ जो कुछ भी उसमें, भरा रहा अभिमान।
नहीं सहज की दिया किसी को, स्नेह और सम्मान॥
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

33. गँवा दिया हमने जीवन में , धर्म और ईमान — **English Meaning /** भावार्थ

We have squandered in this life, our righteousness and faith.
How then shall we meet God?

The Divine bestowed so much upon us, yet we failed to treasure it.
We forgot the very purpose for which the Lord sent us to this earth.
Never did we nurture with our heart, the sacred garden of God.
We gathered only the possessions of our own comfort and pleasure.
How then shall we meet God?

We received a beautiful body, unlike that of any other creature.
Yet we never used it to welcome righteous and noble deeds.
Never for a single moment did we think of those in distress.
We never offered to anyone the gift of comfort and service through this body.
How then shall we meet God?

Thoughtlessly, consumed by selfishness, we wasted our precious time.
We earned immense wealth, but found neither peace nor contentment.
We uttered the name of Ram only in distress, but never did His work.
In endless rushing, we spent all eight watches of the day.
How then shall we meet God?

Not a single fraction of our labor was of any use to others.
We never embraced the path of selfless toil and service here.
Whatever we did in this world was filled with vanity and pride.
We never freely and naturally offered love and respect to anyone.
How then shall we meet God?

34. गायत्री माँ की उपासना , ही जीवन का सार है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

गायत्री माँ की उपासना, ही जीवन का सार है।
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥
यह जीवन का सार है॥

इसी साधना के सम्बल से, सिद्ध समर्थ हुआ यह देश।
ऋतम्भरा प्रज्ञा का पाया, था हमने वरदान विशेष॥
था हमने वरदान विशेष॥

अमृजमय जीवन हो जाता, इनमें इतना प्यार है॥
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥

धर्म, अर्थ या काम मोक्ष, कोई भी इनसे दूर नहीं।
इनके ही प्रताप से रहती, सुख-सुविधा भरपूर मही॥
सुख-सुविधा भरपूर मही॥

यह मानस की मणि-मुक्ता यह ही सुमनों का हार है॥
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥

गायत्री से विमुख हुआ जो, उसने खोया बुद्धि विवेक।
सत्य ज्ञान का मर्म यही है, शुचिता की पावन अभिषेक॥
शुचिता की पावन अभिषेक॥

मानवता के हित का केवल, गायत्री आधार है॥
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥

गायत्री माँ की उपासना, ही जीवन का सार है।
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥
यह जीवन का सार है॥

34. गायत्री माँ की उपासना **,** ही जीवन का सार है — **English Meaning** / भावार्थ

Worship of Mother Gayatri is indeed the essence of life.
It is the foundational pillar for protecting the nation, righteousness, and culture.
This is the essence of life.

With the strength of this spiritual discipline, this nation became accomplished and empowered.
We received the supreme boon of truth-bearing cosmic intellect.
We received a supreme boon.
Life becomes filled with divine nectar, such is the love She bestows.
It is the foundational pillar for protecting the nation, righteousness, and culture.

Duty, wealth, desire, or liberation—none of these are far from Her.
By Her divine glory alone, the earth remains abundant with peace and prosperity.
The earth remains abundant with peace and prosperity.
She is the precious jewel of the mind, She is the garland of sacred blossoms.
It is the foundational pillar for protecting the nation, righteousness, and culture.

Whoever turned away from Gayatri, lost their wisdom and discernment.
This is the core of true knowledge, the sacred anointing of purity.
The sacred anointing of purity.
For the ultimate welfare of humanity, Gayatri alone is the foundation.
It is the foundational pillar for protecting the nation, righteousness, and culture.

Worship of Mother Gayatri is indeed the essence of life.
It is the foundational pillar for protecting the nation, righteousness, and culture.
This is the essence of life.

35. घट - घट में श्रीराम रमे हैं , जब चाहो दर्शन कर लेना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना।
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

रग-रग में वह रोम-रोम में, वह धरती में और व्योम में।
जड़-चेतन में व्याप्त वही है, निर्मल मन में प्राप्त वही है॥
बूँद-बूँद में, सागर में है, तुम उसका वन्दन कर लेना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

पतझर है वीरान उसी से, मधु ऋतु की मुस्कान उसी से।
सावन घन उससे ही झरते, सूखे ताल-सरोवर भरते॥
वह कल-कल जल निर्झर में है, मन अपना पावन कर लेना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

जग में जो उत्थान-पतन है, जो कुछ होता परिवर्तन है।
सुबह-शाम का वह कारण है, सब उसका ही अनुशासन है॥
वही चाँद में दिनकर में है, पल भर तुम चिन्तन कर लेना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

पाहन है चट्टान वही है, किन्तु सुगम आसान वही है।
हिम-शिखरों की शान उसी से, सरिता है गतिवान उसी से॥
श्रमिकों के श्रम सीकर में है, उसका ही पूजन कर लेना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

वह सबका पोषक-पालक है, वह जगती का संचालक है।
महाकाल से मन को जोड़ो, छोड़ो तुम हठ-धर्मी छोड़ो॥
सबका हित प्रभु के स्वर में है, उसपर मन अर्पण कर देना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

35. घट **-** घट में श्रीराम रमे हैं **,** जब चाहो दर्शन कर लेना — **English Meaning** / भावार्थ

In every heart and soul, Shri Ram resides; whenever you wish, behold His divine presence.
In every heart and soul, Shri Ram resides; whenever you wish, behold His divine presence.

In every vein and in every pore, in the earth and in the endless sky,
He pervades the lifeless and the living, attained only in a pure and spotless mind.
He is in every single drop and in the vast ocean; bow down and offer Him your adoration.
In every heart and soul, Shri Ram resides; whenever you wish, behold His divine presence.

The barren autumn is because of Him, the sweet smile of spring is because of Him.
The monsoon clouds pour down by His will, filling the dried-up lakes and ponds.
He is in the gentle murmur of the flowing stream; make your own heart pure and sacred.
In every heart and soul, Shri Ram resides; whenever you wish, behold His divine presence.

Every rise and fall in this world, every change that ever transpires,
He is the cause of dawn and dusk, all moves under His divine cosmic law.
He is in the glowing moon and the radiant sun; contemplate upon Him for just a moment.
In every heart and soul, Shri Ram resides; whenever you wish, behold His divine presence.

He is the hard stone and the mighty rock, yet He is simple and easily reached.
The majesty of the snow-capped peaks is His, the river flows swiftly by His grace.
He is in the sweat-drops of the laborer's toil; perform your worship of Him there.
In every heart and soul, Shri Ram resides; whenever you wish, behold His divine presence.

He is the nourisher and protector of all, He is the supreme ruler of the universe.
Unite your soul with the Eternal Time, let go of your stubborn pride and ego.
The welfare of all lies in the Lord's voice; surrender your heart and mind to Him.
In every heart and soul, Shri Ram resides; whenever you wish, behold His divine presence.

36. है उदास कुछ अन्तरतम यह , रत्नों का उपहार किसे दूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

है उदास कुछ अन्तरतम यह, रत्नों का उपहार किसे दूँ।
पात्र बहुत छोटे दिखते हैं, पावस की जल-धार किसे दूँ॥

सागर के तल तक जाकर ही, मुश्किल से ये आ पाये हैं।
किन्तु मिला न पहनने वाला, सोच हृदय तल घन छाये हैं॥
विजयी कण्ठ न दिखता कोई, रत्नों का यह हार किसे दूँ॥

हर मन की धरती प्यासी है, किन्तु न कोई पोली करता।
पर-हित के बीजों से कोई, अपना जीवन खेत न भरता॥
उमड़ रही अन्तर में लेकिन, मेघों की बौछार किसे दूँ॥

पीर पराई नहीं समझते, कैसे भाव मनों में जागे।
संवेदन की भाषा खोयी, टूटे सद्भावों के धागे॥
कौन लिखेगा गीत प्यार के, अन्तर के उद्गार किसे दूँ॥

भौतिकता के आकर्षण ने, मनुज मात्र को भरमाया है।
भक्ति-साधना औ संयम के, नाम मात्र से घबराया है॥
तप कर जिसे भरा जीवन भर, वह अक्षय भण्डार किसे दूँ॥

ले, पर लेकर के वह थाती, जो जन दीन-हीन को बाँटे।
जहाँ दरार दिखे उसको अपने, यत्नों से जो जन पाटे॥
मिल न सकेगा क्या ऐसा जन, अपना गुरुतर भार किसे दूँ॥

36. है उदास कुछ अन्तरतम यह **,** रत्नों का उपहार किसे दूँ **— English Meaning /** भावार्थ

My innermost soul is filled with a quiet sorrow, to whom shall I offer this gift of precious gems?
The vessels of seekers appear far too small, to whom shall I bestow this torrential downpour of the monsoon rain?

Only by diving deep to the ocean's floor have these been retrieved with immense struggle.
Yet, no worthy wearer could be found; reflecting on this, dark clouds of grief overshadow my heart.
No victorious neck is in sight, to whom shall I present this necklace of divine gems?

The soil of every heart is parched, yet no one tills it to make it receptive.
No one sows the seeds of altruism to cultivate the field of their own life.
Though surging within my inner being, to whom shall I release this shower of rain-bearing clouds?

They do not feel the pain of others, what strange emotions have awakened in their minds?
The language of empathy is lost, and the sacred threads of goodwill are broken.
Who will write the songs of love, to whom shall I offer these deep outpourings of my soul?

The allure of materialism has deluded the whole of humankind.
At the mere mention of devotion, spiritual practice, and self-restraint, they shrink in fear.
Amassed through a lifetime of rigorous penance, to whom shall I hand over this inexhaustible treasure?

Let someone receive it, but only one who, upon accepting this sacred trust, distributes it to the poor and needy.
Wherever a rift or crack is seen, one who mends it through their own dedicated efforts.
Will such a noble soul not be found? To whom shall I entrust this heavy, sacred responsibility?

37. है यह बात सखे , स्थिर हम - तुम सबके मन में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे॥

करुणापूर्ण हृदय उनका है, मधु ममत्व की राशि।
छोड़ हमें वे हो न सकेंगे, अन्य लोक के वासी॥
याद करो आ जायेंगे वे, अभी उदास नयन में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे॥

उनके जाने का न तनिक दुःख, हम निज मन में मानें
पूर्ण करें युग परिवर्तन का, कार्य उन्हें पहचानें
वे हैं शाश्वत दिव्यःज्योति नव, भर लें निज चेतन में
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे॥

केवल तन ने यात्रा की है, मन तो यहीं बँधा है।
सिर्फ न रोये हम उनका भी, व्यह्वल कण्ठ रुँधा है॥
रोज उतरते हैं प्रकाश बन, पूजा वाले क्षण में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे॥

आये थे वे हम सबकी ही, प्रज्ञा सुप्त जगाने।
और गए भी हम सबके ही, ब्रह्मकमल विकसाने॥
अतः अधिक तप पूजा लेने, पहुँचे नन्दनवन में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥ है यह बात सखे॥

37. है यह बात सखे **,** स्थिर हम **-** तुम सबके मन में — **English Meaning** / भावार्थ

This truth, O friend, is firmly established in the hearts of you, me, and everyone.
This truth, O friend, is firmly established in the hearts of you, me, and everyone.
Even now, He dwells every single moment in the very courtyard of Shantikunj.
This truth, O friend...

His heart is overflowing with compassion, a treasure of sweet, maternal love.
Leaving us behind, He can never become a resident of any other realm.
Just remember Him, and He will appear instantly in your sorrowful eyes.
This truth, O friend, is firmly established in the hearts of you, me, and everyone.
Even now, He dwells every single moment in the very courtyard of Shantikunj.
This truth, O friend...

Let us not harbor even a shred of grief over His departure in our minds,
Let us fulfill the task of Era Transformation, recognizing His true essence.
He is the eternal, ever-new divine light; let us fill our consciousness with Him.
This truth, O friend, is firmly established in the hearts of you, me, and everyone.
Even now, He dwells every single moment in the very courtyard of Shantikunj.
This truth, O friend...

Only His physical body has journeyed away; His heart remains bound right here.
It is not only we who weep; His choked throat too is filled with overwhelming love.
Every day He descends as divine light, in the sacred moments of our worship.
This truth, O friend, is firmly established in the hearts of you, me, and everyone.
Even now, He dwells every single moment in the very courtyard of Shantikunj.
This truth, O friend...

He had come to awaken the dormant wisdom within all of us,
And He departed only to make the Brahma-lotus of our souls bloom.
Therefore, to perform greater penance and worship, He has reached the celestial garden of Nandanvan.
This truth, O friend, is firmly established in the hearts of you, me, and everyone.
Even now, He dwells every single moment in the very courtyard of Shantikunj.
This truth, O friend, is firmly established in the hearts of you, me, and everyone.   This truth, O friend...

38. हम अपना सब कुछ सौंप चुके , हे नाथ तुम्हारे चरणों में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

हम अपना सब कुछ सौंप चुके, हे नाथ तुम्हारे चरणों में।
लौ लगी रहे निशदिन अब तो, हे नाथ तुम्हारे चरणों में॥

करुणाकर अब तो आ जाओ, इस मन मन्दिर में बस जाओ।
निष्काम दीप से सदा जलें, हे नाथ तुम्हारे चरणों में॥

दो वर, पर दुःख हम सदा हरें, केवल तेरे हित कर्म करें।
श्रद्धा के पावन सुमन धरें, हे नाथ तुम्हारे चरणों में॥

हों मंगलमय सबकी राहें, पूरी हों सबकी शुभ चाहें।
हो यह जीवन अर्पित केवल, हे नाथ तुम्हारे चरणों में॥

38. हम अपना सब कुछ सौंप चुके **,** हे नाथ तुम्हारे चरणों में — **English Meaning** / भावार्थ

We have surrendered our all, O Lord, at Your divine feet.
May the flame of our devotion burn night and day, O Lord, at Your divine feet.

O Compassionate One, come now, dwell within this temple of the mind.
May we burn eternally like a selfless lamp, O Lord, at Your divine feet.

Grant us the boon to always alleviate the pain of others, and perform actions solely for Your sake.
May we offer the sacred flowers of our faith, O Lord, at Your divine feet.

May the paths of all be blessed and auspicious, may everyone's noble desires be fulfilled.
May this life be dedicated entirely, O Lord, at Your divine feet.

39. हमने आँगन नहीं बुहारा , कैसे आयेंगे भगवान्   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेंगे भगवान्।
मन का मैल नहीं धोया तो, कैसे आयेंगे भगवान्॥

हर कोने कल्मष-कषाय की, लगी हुई है ढेरी।
नहीं ज्ञान की किरण कहीं है, हर कोठरी अँधेरी।
आँगन चौबारा अँधियारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

हृदय हमारा पिघल न पाया, जब देखा दुखियारा।
किसी पन्थ भूले ने हमसे, पाया नहीं सहारा।
सूखी है करुणा की धारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

अन्तर के पट खोल देख लो, ईश्वर पास मिलेगा।
हर प्राणी में ही परमेश्वर, का आभास मिलेगा।
सच्चे मन से नहीं पुकारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

निर्मल मन हो तो रघुनायक, शबरी के घर जाते।
श्याम सूर की बाँह पकड़ते, शाग विदुर घर खाते।
इस पर हमने नहीं विचारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

39. हमने आँगन नहीं बुहारा **,** कैसे आयेंगे भगवान् — **English Meaning /** भावार्थ

We have not swept the courtyard, how will the Lord come?
If we have not washed away the impurities of the mind, how will the Lord come?

In every corner, heaps of sins and passions lie gathered.
Not a single ray of wisdom shines, every chamber remains in darkness.
The courtyard and the terrace are shrouded in dark, how will the Lord come?

Our heart failed to melt upon seeing the suffering of the distressed.
Those who lost their way found no shelter or support from us.
The stream of compassion has run dry, how will the Lord come?

Open the inner doors of your heart and see, the Lord will be found close by.
In every living being, you will perceive the presence of the Supreme Divine.
We have not called upon Him with a sincere heart, how will the Lord come?

If the heart is pure, the Lord of the Raghus visits Shabari's humble home.
Shyam holds the hand of blind Surdas, and relishes simple greens at Vidur's home.
Upon this we have never contemplated, how will the Lord come?

40. हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥
हरि ओ३म तत्सत् हरि ओ३म तत्सत्, हरि ओ३म तत्सत् हरि ओ३म तत्सत्॥

दुष्टों ने लोहे का खम्भा रचा था, तो निर्दोष प्रह्लाद क्यों बचा था।
विनय एक स्वर से करी थी उसी ने॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

सभा में खड़ी द्रौपदी रो रही थी, लज्जा के आँसुओं से मुख धो रही थी।
बढ़ा चीर उसमें यही रंग रंगा था॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

लगी आग लंका में हलचल मचा था, तो घर फिर विभीषण का कैसे बचा था।
लिखा था यही मंत्र कुटिया में उसके॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

हलाहल का मीरा ने प्याला पिया था, तो विष से वो अमृत कैसे हुआ था।
दीवानी भी मीरा इसी नाम की थी॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

कहो नाथ शबरी के घर कैसे आये, आये तो फिर बेर जूठे क्यों खाये।
जबाँ में यही था हृदय में यही था॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

हरि ॐ की एक माला बनाकर, जपो रात दिन अपने चित्त को लगाकर।
करो साधना हर समय तुम इसी की॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

40. हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् — **English Meaning** / भावार्थ

Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat.
This is the supreme mantra, chant this and this alone, this is the supreme mantra, chant this and this alone.
Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat.

The wicked ones had fashioned a pillar of iron, yet how was the innocent Prahlada saved?
He had offered his prayer with a single, devoted voice.
Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat.
This is the supreme mantra, chant this and this alone, this is the supreme mantra, chant this and this alone.

Standing in the assembly, Draupadi was weeping, washing her face with tears of shame.
The endless garment that grew was imbued with this very hue.
Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat.
This is the supreme mantra, chant this and this alone, this is the supreme mantra, chant this and this alone.

When Lanka was set on fire and chaos erupted, how then was the home of Vibhishana saved?
This very mantra was inscribed upon his cottage.
Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat.
This is the supreme mantra, chant this and this alone, this is the supreme mantra, chant this and this alone.

Meera drank the cup of deadly poison, how then did that poison turn into nectar?
For Meera was ecstatically mad in love with this very Name.
Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat.
This is the supreme mantra, chant this and this alone, this is the supreme mantra, chant this and this alone.

Tell me, how did the Lord come to Shabari's home, and having come, why did He eat the tasted berries?
This was on her tongue, and this was in her heart.
Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat.
This is the supreme mantra, chant this and this alone, this is the supreme mantra, chant this and this alone.

Fashioning a rosary of Hari Om, chant it night and day, focusing your consciousness.
Perform your spiritual practice at all times with this alone.
Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat, Hari Om Tat Sat.
This is the supreme mantra, chant this and this alone, this is the supreme mantra, chant this and this alone.

41. हर विपदा में सृजन शिल्पियो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥

दिव्य शक्ति का वैसे तो, होगा हर पल आभास तुम्हें।
तुम्हें लगेगा जैसे छूकर, आती है हर साँस उन्हें॥
अगर कभी उनकी यादों में, फिर भी आँखें भर आएँ।
सृजन शावको! मेरी ममता, का तुम आँचल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।

समय कठिन है, आज पतन से, घिरा हुआ हर व्यक्ति यहाँ।
सिर्फ स्वार्थ में लगी हुई है, हर प्रतिभा हर शक्ति यहाँ॥
लिए आत्म-विश्वास चीरना, झोंके तेज हवाओं के।
मन में जब श्रद्धा उमड़ेगी, हमें उसी पल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।

इन विभीषिकाओं से लेकिन, जरा नहीं तुम घबराना।
यह है अन्तिम पहर रात का, बिना डरे बढ़ते जाना॥
छँटना ही है घना अँधेरा, सूर्य उदय होना ही है।
तुमने दी आवाज आज तो, श्रेय तुम्हीं कल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।

करना जो भी काम उसे तुम, त्याग भावना से करना।
हो अन्याय बड़ा पर्वत से, तो भी कभी नहीं डरना॥
इतना तपना स्वयं कि कुन्दन, बन जाए व्यक्तित्व प्रखर।
युग के फौलादी साँचे में, तात तभी ढल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।

41. हर विपदा में सृजन शिल्पियो — **English Meaning** / भावार्थ

In every adversity, O sculptors of creation! You shall find courage and strength.
In every adversity, O sculptors of creation! You shall find courage and strength.
Have eternal faith that on the path, you shall find my support.
Have eternal faith that on the path, you shall find my support.
Indeed, of the divine power, you shall feel the presence at every moment.
You will feel as though every breath comes having touched them.
If ever in their memories, your eyes still fill with tears,
O children of creation! You shall find the sheltering embrace of my motherly love.
Have eternal faith that on the path, you shall find my support.
In every adversity, O sculptors of creation! You shall find courage and strength.
The times are difficult, today every individual here is surrounded by moral decline.
Engaged solely in selfishness is every talent and every power here.
Armed with self-confidence, tear through the gusts of fierce winds.
When devotion wells up in your heart, you shall find me at that very moment.
Have eternal faith that on the path, you shall find my support.
In every adversity, O sculptors of creation! You shall find courage and strength.
Yet, by these terrifying horrors, do not be frightened at all.
This is the final watch of the night, keep moving forward without fear.
The dense darkness must disperse, the sun is bound to rise.
Since you have raised your voice today, the glory tomorrow shall be yours.
Have eternal faith that on the path, you shall find my support.
In every adversity, O sculptors of creation! You shall find courage and strength.
Whatever work you perform, do it with a spirit of sacrifice.
Even if injustice stands as colossal as a mountain, never harbor any fear.
Purify yourself in the fire so intensely that your brilliant personality becomes like pure gold.
Only then, dear ones, will you be cast into the steel mold of this era.
Have eternal faith that on the path, you shall find my support.
In every adversity, O sculptors of creation! You shall find courage and strength.

42. हे देव तुम्हारी पीड़ा का , मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

मेरे मन के दर्पण में प्रभु, प्रतिबिम्ब तुम्हारा सदा रहे।
हर भाव तुम्हारा अर्चन हो, हर क्षण अन्तर में रूप बसे॥
देखूँ स्वरूप बस तेरा ही, तुझको ही जन-जन में पाऊँ॥
हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

हे करुणा सिंधु-दयासागर, मुझमें वह दर्द जगा देना।
पी सकूँ हलाहल जन-हित में, वह करुणा धार बहा देना॥
तेरे मुरझाये उपवन को, बन स्नेह स्रोत मैं सरसाऊँ॥
हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

शुभ ज्योति जलाई जो तुमने, अपने जीवन की बाती से।
आलोक लुटाया जीवन भर, गाये शुभ गान प्रभाती के॥
बन शलभ तुम्हारी ज्योति में, तन-मन-धन आज चढ़ा जाऊँ॥
हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

हो सके समर्पण वह मेरा, हर साध्य तुम्हारा लक्ष्य रहे।
तेरी चाहों में, सपनों में, हर क्षण अर्पित सर्वस्व रहे॥
अभिनव अंकुर को सींच सकूँ, हिम भी हूँ तो गलती जाऊँ॥
हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

42. हे देव तुम्हारी पीड़ा का **,** मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ — **English Meaning** / भावार्थ

O Divine, may I become a tear of Your pain, gently flowing down.
Becoming a flower, may I scatter Your fragrance across the entire world.

In the mirror of my mind, O Lord, may Your reflection forever abide.
May my every emotion be Your worship, and Your form dwell in my heart every moment.
May I behold only Your divine form, and find You in each and every soul.

O Divine, may I become a tear of Your pain, gently flowing down.
Becoming a flower, may I scatter Your fragrance across the entire world.

O Ocean of Compassion, Ocean of Mercy, awaken that sacred pain within me.
That I may drink the poison for the welfare of all, let that stream of compassion flow.
To Your withered garden, becoming a spring of love, may I bring life and bloom.

O Divine, may I become a tear of Your pain, gently flowing down.
Becoming a flower, may I scatter Your fragrance across the entire world.

The auspicious light that You ignited, with the wick of Your own life,
Showering radiance throughout Your life, singing the sacred hymns of dawn.
Becoming a moth to Your divine flame, may I offer my body, mind, and wealth today.

O Divine, may I become a tear of Your pain, gently flowing down.
Becoming a flower, may I scatter Your fragrance across the entire world.

May my surrender be so complete, that Your every purpose becomes my goal.
In Your desires and in Your dreams, may my all be offered at every moment.
To nourish the tender new sprout, even if I am snow, may I melt away.

O Divine, may I become a tear of Your pain, gently flowing down.
Becoming a flower, may I scatter Your fragrance across the entire world.

43. हे हँसवाहिनी जगदम्बे गायत्री माँ तुझे ध्यान धरूँ   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥
हे सकल सृष्टि मा व्यापि रही, सावित्री तारूँ ध्यान धरूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

धरु हँसनु वाहन सा माटे, जे सात्विक नित आहार करे।
गुण-दोष समाजे निर में क्षीर तजि दोष, गुण स्वीकार करे॥
हूँ पात्र बनूँ तुझ वाहन में बस, एकज उर अरमान धरूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

कहिं एक मुँख कहिं पाँच मुँख, विविध स्वरूप तारूँ दी से।
कहिं पंच कोष के पंच प्राण के, पंच तत्त्व ना रूप दी से॥
त्वीं तत्त्व रूप आत्मा स्वरूप, मुझ अन्तर मा तुझ ध्यान धरूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

तुम अमृत छौं तारा पावे सो, अमर तत्त्व पावीं जाता।
ले विविध तापती मुक्ति बनी, थैं देव सवा सौ गीत गाता॥
तुम ज्ञान रूप अमृत धारा, हूँ एद सुधा रस पान करूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

तुम पारस छौ तारा इस पर, लो फन्न सुबाण बनी जातूँ।
होए पतीत मानव ते पर, देवन ने ते पामी जातूँ॥
तुम कामधेनु छौ जगदम्बे, तुम बालक तव पयपान करूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

तू कल्पवृक्ष छौ तुझ छाए, पेसीने से संकल्प करे।
भौतिक तो तू अध्यात्म पराते, उच्च शिखर ले पार करे॥
ना साधक माँगतो कँग दीजू, बस हर पल तुझ गुण-गाल करूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥
हे सकल सृष्टि मा व्यापि रही, सावित्री तारूँ ध्यान धरूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

43. हे हँसवाहिनी जगदम्बे गायत्री माँ तुझे ध्यान धरूँ — **English Meaning** / भावार्थ

O Swan-rider, Mother of the Universe, Mother Gayatri, I meditate upon You.
O Savitri, who pervades the entire creation, I meditate upon You.
O Swan-rider, Mother of the Universe, Mother Gayatri, I meditate upon You.

You ride the swan because it always partakes of pure, sacred food.
In the waters of virtues and vices, it separates milk from water, discarding the flaws and accepting the virtues.
May I become worthy of being Your vehicle; this is the sole desire I hold in my heart.
O Swan-rider, Mother of the Universe, Mother Gayatri, I meditate upon You.

Somewhere with one face, somewhere with five faces, Your diverse forms are seen.
Somewhere in the form of the five sheaths, the five vital breaths, and the five elements.
You are the essence of truth, the form of the Soul; within my heart, I meditate upon You.
O Swan-rider, Mother of the Universe, Mother Gayatri, I meditate upon You.

You are the nectar; whoever attains Your grace achieves the immortal essence.
Liberated from the various miseries of life, the gods sing hundreds of songs of Your glory.
You are the nectarine stream of knowledge; may I drink of this divine nectar.
O Swan-rider, Mother of the Universe, Mother Gayatri, I meditate upon You.

You are the touchstone; by Your touch, even iron turns into pure gold.
Even a fallen human being, by Your grace, attains the state of the gods.
You are the wish-fulfilling cow, O Mother of the Universe; as Your child, I drink Your nurturing milk.
O Swan-rider, Mother of the Universe, Mother Gayatri, I meditate upon You.

You are the wish-fulfilling tree; resting in Your shade, whatever resolve one makes,
From the material to the spiritual realms, You lead them to cross over to the highest peak.
This seeker asks for nothing else, O Mother; only that I may sing Your praises at every moment.
O Swan-rider, Mother of the Universe, Mother Gayatri, I meditate upon You.
O Savitri, who pervades the entire creation, I meditate upon You.
O Swan-rider, Mother of the Universe, Mother Gayatri, I meditate upon You.

44. हे नाथ याद तेरी , मन को सता रही है   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है।
हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है॥

क्या कुछ नहीं है पाया, आँचल में तेरे आके।
हम पा गये हैं सब कुछ, नजदीक तेरे आके॥
हँस-हँस के दे रहा है, कण-कण तेरी गवाही।
सर झुक गया हमारा, साकार तुझको पाके॥
तेरी ही ज्योति जग में, जीवन जगा रही है॥
हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है॥

सन्देश दे रहा तू, हर फूल में हँसी का।
सन्देश दे रहा तू, हर डाल में खुशी का॥
मस्ती से पात-पात में, ताली बजा रहा है।
चंचल हवा में भारी, आँचल उड़ा रहा है॥
ऐसी छटा निराली, हर ओर छा रही है।
हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है॥

थिरकन दिखाई तूने, बन कर मयूर वन में।
पंचम स्वरों में बोला, कोयल के श्याम तन में॥
बन के पपीहरा तू, पी-पी की रट लगाता।
मधुमास बन के मीठी, यादें सदा दिलाता॥
पुलकन पुनीत ऐसा, संगीत गा रही है।
हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है॥

44. हे नाथ याद तेरी , मन को सता रही है — **English Meaning** / भावार्थ

O Lord, the remembrance of You is yearningly pulling my heart.
O Lord, the remembrance of You is yearningly pulling my heart.
What is there that we have not found, coming under the shelter of Your embrace?
We have attained everything, by drawing close to You.
Smilingly, every single speck of creation bears witness to You.
Our heads bow in reverence, finding You manifest before us.
Your light alone is awakening life throughout the world.
O Lord, the remembrance of You is yearningly pulling my heart.
You are sending a message of smiles through every flower.
You are sending a message of joy through every branch.
In ecstatic bliss, You are clapping in every single leaf.
In the playful breeze, You are waving Your vast, divine veil.
Such a wondrous splendor is spreading in every direction.
O Lord, the remembrance of You is yearningly pulling my heart.
You showed Your dancing grace, becoming a peacock in the forest.
You sang in the sweetest fifth note, from within the dark form of the cuckoo.
Becoming the rain-bird, You incessantly call out the name of the Beloved.
Becoming the sweet spring season, You forever bring back sweet memories.
Such a sacred thrill is singing this divine music.
O Lord, the remembrance of You is yearningly pulling my heart.

45. हे प्रभु ! मानव हृदय को , गगन सा विस्तार दे दो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

हे प्रभु! मानव हृदय को, गगन सा विस्तार दे दो।
मानवों को मानवों के, प्रति असीमित प्यार दे दो॥

सीख जायें कष्ट से रोते हुए, जन को हँसाना।
दीन हीनों को उठाकर, प्यार से उर से लगाना॥
जो कभी खाली न हो, सद्भाव का भण्डार दे दो॥
हे प्रभु मानव हृदय को . . . . . .

भेद हम माने नहीं, छोटे-बड़े ऊँचे-गिरे का।
साथ दें बढ़कर सदा, संकट मुसीबत में घिरे का॥
खोल दो समदृष्टि, चिन्तन को यही आधार दे दो॥
हे प्रभु! मानव हृदय को . . . . .

प्रेम के मृदु सूत्रों में, बँध जाये धरती के निवासी।
हृदय में सबके खिली हो, भावना की पूर्णमासी॥
मेट दो सब दम्भ मन का, शील का उपहार दे दो॥
हे प्रभु मानव हृदय को . . . .

तोड़ दो संकीर्णता के, बन्ध जो मन पर लगे हैं।
मेट दो वह द्वेष-ईर्ष्या, हम सभी जिसमें पगे हैं॥
मेट कर दुष्वृत्ति की, दुनियाँ नया संसार दे दो॥
हे प्रभु! मानव हृदय को . . . .

अस्त हो जाये घृणा की, दुःखद भीषण रात काली।
और ऊगे प्यार की, मंगलमयी सुप्रभात लाली॥
खिल उठें मन के कमल, हमको वही व्यवहार दे दो॥

हे प्रभु! मानव हृदय को, गगन सा विस्तार दे दो।
मानवों को मानवों के, प्रति असीमित प्यार दे दो॥

45. हे प्रभु **!** मानव हृदय को **,** गगन सा विस्तार दे दो — **English Meaning** / भावार्थ

O Lord! Grant the human heart an expansion as vast as the sky.
Bestow upon humanity boundless love for one another.

May we learn to bring a smile to those weeping in pain,
To lift up the poor and downtrodden, and embrace them lovingly to our heart.
Grant us a treasury of goodwill that may never run empty.
O Lord! To the human heart . . . . . .

May we acknowledge no differences of high or low, great or small,
May we always step forward to support those beset by crisis and adversity.
Awaken our vision of equality, and grant this very foundation to our thoughts.
O Lord! To the human heart . . . . .

May all inhabitants of the earth be bound by the gentle threads of love,
May the full moon of pure feeling bloom in everyone's heart.
Erase all vanity of the mind, and grant us the gift of virtue.
O Lord! To the human heart . . . .

Break the shackles of narrow-mindedness that bind the mind,
Erase the malice and jealousy in which we are all steeped.
Dissolving this world of evil tendencies, grant us a new world.
O Lord! To the human heart . . . .

May the painful, dreadful dark night of hatred set forever,
And may the auspicious, crimson dawn of love arise.
May the lotuses of our minds bloom; grant us such conduct.
O Lord! Grant the human heart an expansion as vast as the sky.
Bestow upon humanity boundless love for one another.

46. हे प्रभु ! ध्यान में तुम समाए हुए   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं।

लक्ष्य हर हास-उल्लास के हो तुम्हीं, हो उमंगें तुम्हीं चाह में हो तुम्हीं।
हर क्रिया में तुम्हीं तो समाए हुए, औ हृदय के हरेक भाव में हो तुम्हीं॥
हर समय जल रही ज्योति बनकर प्रभो, कर रहे वास अन्तःकरण में तुम्हीं॥
हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं॥

मात्र तुम हर तरफ दीखते हो मुझे, व्यक्ति में वृक्ष में वायु में गन्ध में।
प्रभु तुम्हारा सुविस्तार पाकर यहाँ, डूब जाती व्यथा मेरी आनन्द में॥
प्रेरणा हर प्रबल यत्न की हो तुम्हीं, चेतना हो मेरे हर चरण में तुम्हीं॥
हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं॥

शक्ति दो काम निबटा सकूँ शीघ्र मैं, सौंपकर जो मुझे सूक्ष्म तुम हो गए।
खिल सकें फिर कमल दिव्य गन्धें लिए, नाथ जिसके स्वयं बीज तुम हो गए॥
देखकर काम पूरा मुझे ले सको, शान्ति सुखदायिनी निज शरण में तुम्हीं॥
हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं॥

जन्म-जन्मान्तरों से रहे साथ हम, मेरे भगवन सदा साथ देते रहो।
हाथ अपनी कृपा का दिया जो सदा, हर जनम में मुझे साथ देते रहो॥
भोर हो मुझे सूर्य से मिल सको, सत्य-युग के सुखद अवतरण में तुम्हीं॥
हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं।
हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं॥

46. हे प्रभु **!** ध्यान में तुम समाए हुए **— English Meaning /** भावार्थ

O Lord! You are absorbed in my meditation, You alone are in my eyes and You alone in my mind.
You are the goal of every joy and laughter, You are the enthusiasm, and You are in every desire.
You alone are pervading every action, and You are in every emotion of my heart.
Shining at all times as a constant flame, O Lord, You alone reside within my innermost soul.
O Lord! You are absorbed in my meditation, You alone are in my eyes and You alone in my mind.

I see only You in every direction, in every person, in the trees, in the wind, and in the fragrance.
Beholding Your vast expanse here, O Lord, my agony dissolves into supreme bliss.
You are the inspiration behind every mighty effort, You are the consciousness in my every step.
O Lord! You are absorbed in my meditation, You alone are in my eyes and You alone in my mind.

Give me strength that I may swiftly complete the tasks, which You entrusted to me before becoming subtle.
So that the lotuses may bloom again with divine fragrance, of which You Yourself, O Lord, became the seed.
Seeing the work completed, may You take me into Your blissful, peace-giving refuge.
O Lord! You are absorbed in my meditation, You alone are in my eyes and You alone in my mind.

We have been together through countless lifetimes, my Lord, continue to stand by me forever.
The hand of Your grace that You have always extended, keep supporting me in every birth.
May the dawn break and You meet me as the sun, You who are in the blissful descent of the Golden Age.
O Lord! You are absorbed in my meditation, You alone are in my eyes and You alone in my mind.
You alone are in my eyes and You alone in my mind, You alone are in my eyes and You alone in my mind.

47. हो गये बहुत सुराख नाव में , मत जा तू मझधार रे   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

हो गये बहुत सुराख नाव में, मत जा तू मझधार रे।
इस हालत में डूबेगा तू, डूबेगा परिवार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

बहुत किये सूराख काम ने, और किये अभिमान ने।
किये कई सूराख स्वार्थ में, डूबी हुई थकान ने॥
तली करी छलनी लिप्सा ने, क्रोध-जनित अज्ञान ने।
भीतर भरने लगी नाव के, अब तो जल की धार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

यदि मन हो बीमार, कहो क्या होगा सुन्दर देह का।
धरती हो दलदली अगर तो, क्या होगा फिर मेह का॥
अगर दिया रिसता हो तो, क्या होगा बाती-स्नेह का।
सबल बाँह क्या कर लेगी यदि, नाव हुई बेकार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

अन्तर्मन की तली अगर हो, स्वस्थ हमारी नाम में।
तूफानों के बीच सफल हम, होंगे हरेक बहाव में॥
बँधे सभी सहयात्री होंगे, एक सहज सद्भाव में।
नौका हो टूटी तो कोई, उतरे कैसे पार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

फूला-फूला फिरे व्यर्थ ही, तू अपने गुण-गान में।
बाहर की इस चमक-दमक का, क्या होगा तूफान में॥
कर्मों का फल सदा मिला है, प्रभु के दण्ड विधान में।
सत्कर्मों की इसीलिये तू, यहाँ पकड़ पतवार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

47. हो गये बहुत सुराख नाव में **,** मत जा तू मझधार रे — **English Meaning /** भावार्थ

> *Many holes have appeared in your boat, do not venture into the midstream.*
> *In this state you will drown, and your family will drown too.*
> *Do not go into the midstream, O boatman, do not go into the midstream.*
> *O boatman... O boatman...*
>
> *Many holes were made by lust, and many by pride.*
> *Many holes were carved by selfishness and drowning exhaustion.*
> *Greed has turned the bottom into a sieve, along with anger-born ignorance.*
> *Now, a stream of water has begun to flood inside the boat.*
> *Do not go into the midstream, O boatman, do not go into the midstream.*
> *O boatman... O boatman...*
>
> *If the mind is diseased, tell me, what will become of the beautiful body?*
> *If the earth is a swamp, what then will be the use of the rain?*
> *If the lamp itself is leaking, what will become of the wick and the oil?*
> *What can a strong arm achieve if the boat has become useless?*
> *Do not go into the midstream, O boatman, do not go into the midstream.*
> *O boatman... O boatman...*
>
> *If the bottom of our inner self is healthy and whole in our vessel,*
> *We shall succeed amidst the storms, in every single current.*
> *All fellow travelers will be bound in a natural, loving goodwill.*
> *But if the boat is broken, how will anyone cross over to the other shore?*
> *Do not go into the midstream, O boatman, do not go into the midstream.*
> *O boatman... O boatman...*
>
> *In vain do you wander puffed up with pride, singing your own praises.*
> *What will become of this external glitter and glamour in the storm?*
> *The fruit of karma is always delivered under the Lord's divine justice.*
> *Therefore, hold fast to the rudder of righteous deeds here.*
> *Do not go into the midstream, O boatman, do not go into the midstream.*
> *O boatman... O boatman...*

48. हो ईश्वर के अंश , आत्म - विश्वास जगाओ रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

हो ईश्वर के अंश, आत्म-विश्वास जगाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

दीन-हीन बनकर क्यों अपना, साहस खोते हो।
क्यों अशक्ति - अज्ञान - अभावों, को ही रोते हो॥
जगा आत्म-विश्वास, दैन्य को दूर भगाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

आत्म-बोध के बिना, सिंह-शावक सियार होता।
आत्म-बोध होने पर, वानर सिंधु पार होता
आत्म-शक्ति के धनी, न कायरता दिखलाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

जिसके बल पर नैपोलियन, आल्पस से टकराया।
जिसके बल पर ही प्रताप से, अकबर घबराया॥
उसके बल पर अपनी बिगड़ी, बात बनाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

सेनापति के बिना न सेना, लड़ने पाती है।
सेनापति का आत्म-समर्पण, हार कहाती है॥
गिरा आत्मबल जीती बाजी, हार न जाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

आज मनुजता अनगिन साधन की, अधिकारी है।
बिना आत्म-विश्वास मनुजता, किन्तु भिखारी है॥
अरे! आत्म-बल की पारस मणि, तनिक छुआओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

अडिग आत्म-विश्वास मनुज का, रूप निखरेगा।
उसका सम्बल मनुज धरा पर, स्वर्ग उतारेगा॥
उसके बल पर जो भी चाहो, कर दिखलाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

48. हो ईश्वर के अंश **,** आत्म **-** विश्वास जगाओ रे — **English Meaning** / भावार्थ

O spark of the Divine, awaken your self-confidence.
Being a prince, do not let yourself be called a pauper.

Why do you lose your courage by acting weak and helpless?
Why do you weep only over weakness, ignorance, and scarcity?
Awaken your self-confidence, banish this misery far away.
Being a prince, do not let yourself be called a pauper.

Without self-realization, a lion cub behaves like a jackal.
Upon gaining self-realization, even a monkey crosses the ocean.
O wealthy possessor of inner power, do not show cowardice.
Being a prince, do not let yourself be called a pauper.

On the strength of which Napoleon clashed with the Alps.
On the strength of which Akbar trembled before Pratap.
On that very strength, mend your ruined fortunes.
Being a prince, do not let yourself be called a pauper.

Without a commander, an army cannot fight.
The surrender of the commander is deemed a defeat.
Do not lose a won game by letting your inner strength fall.
Being a prince, do not let yourself be called a pauper.

Today, humanity is the master of countless resources.
Yet, without self-confidence, humanity is but a beggar.
Oh! Touch but a little the philosopher's stone of inner strength.
Being a prince, do not let yourself be called a pauper.

Unwavering self-confidence will refine the glory of man.
With its support, man will bring heaven down to earth.
On its strength, accomplish whatever you desire.
Being a prince, do not let yourself be called a pauper.

49. हृदय से लगा लो या आँचल हटा लो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

हृदय से लगा लो या आँचल हटा लो।
मगर भक्ति माँ तेरी करते रहेंगे॥

पड़े हैं पगों में यही आस लेकर,
कभी तो दया दृष्टि होगी तुम्हारी।
कभी शीश पर हाथ तेरा फिरेगा,
तुम्हारी चरण धूलि के हम भिखारी॥
हमें चाहे तारो कभी न उबारो,
मगर मंत्र जप तेरा करते रहेंगे॥

नमो वेद माता नमो विश्वमाता,
भला कौन जग में तुम्हें जो न भाता।
परम भक्त वत्सल परम ज्योति जननी,
हृदय में हमारे वही भाव आता॥
कि होकर रहेंगे कभी तो तुम्हारे,
कभी तो तुम्हीं में माँ खोकर रहेंगे॥

गहन वेदना से दुखी सारी दुनियाँ,
जगत के अँधेरे मिटाने चले हैं।
तुम्हारी कृपा की किरण के सहारे,
अमिट ज्ञान दीपक जलाने चले हैं॥
अगर मिल गया माँ तुम्हारा सहारा,
तो सचमुच ये व्रत पूर्ण करके रहेंगे॥

हृदय से लगा लो या आँचल हटा लो।
मगर भक्ति माँ तेरी करते रहेंगे॥

49. हृदय से लगा लो या आँचल हटा लो — **English Meaning** / भावार्थ

Embrace me to Your heart, or withdraw Your protective veil,
Yet, O Mother, I shall keep on offering my devotion to You.
I lie prostrate at Your feet with this single hope,
That someday Your glance of compassion will fall upon me.
Someday Your hand will caress my head,
We are but beggars seeking the dust of Your holy feet.
Whether You deliver us or never liberate us,
Yet we shall keep chanting Your sacred mantra.
Salutations to the Mother of Vedas, salutations to the Mother of the Universe,
Who is there in this world who does not love You?
O supreme lover of devotees, Mother of the supreme light,
The very same feeling arises in our hearts—
That someday we shall surely become Yours,
And someday, O Mother, we shall remain forever lost in You.
The entire world is suffering from deep agony,
We have set out to dispel the darkness of this world.
Guided by the ray of Your divine grace,
We have set out to light the eternal lamp of wisdom.
If we receive Your support, O Mother,
Then we shall truly fulfill this sacred vow.
Embrace me to Your heart, or withdraw Your protective veil,
Yet, O Mother, I shall keep on offering my devotion to You.

50. इन्सान मेरा देवता ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

मैं चाहती अगणित स्वरों में, विश्व को यह दूँ बता।
इन्सान मेरा देवता, इन्सान मेरा देवता॥

रवि के प्रबल तम ताप ने, श्रम को पसीना कर दिया।
हर किरण ने हर बूँद ने, जीवन धरा पर भर दिया॥
वह मूर्ति पौरुष की बने, चिर अर्चिता॥
इन्सान मेरा देवता, इन्सान मेरा देवता॥

घनघोर तप की धार से, कुविचार का लोहा कटा।
सद्भाव की शुभ ज्योति से, युग का भयानक तम कटा॥
इस साधना से भाग्य युग का बदलता॥
इन्सान मेरा देवता, इन्सान मेरा देवता॥

पुरुषार्थ अब जुड़ने लगा, शुभ कर्म से प्रकार्य से।
भगवान अब क्यों दूर होगा, लोक और समाज से॥
देवत्व का ही नाम होगा, मनुजता॥
इन्सान मेरा देवता, इन्सान मेरा देवता॥

50. इन्सान मेरा देवता — **English Meaning** / भावार्थ

I desire, in countless voices, to proclaim this to the world.
Humanity is my divinity, humanity is my divinity.

The intense, scorching heat of the sun turned labor into sweat.
Every ray and every drop filled the earth with life.
May that embodiment of human effort be eternally worshipped.
Humanity is my divinity, humanity is my divinity.

By the fierce torrent of intense penance, the iron of evil thoughts was severed.
By the auspicious light of goodwill, the terrible darkness of the age was dispelled.
Through this spiritual endeavor, the destiny of the era is transformed.
Humanity is my divinity, humanity is my divinity.

Human endeavor now unites with auspicious deeds and noble actions.
Why indeed would God remain distant now from the world and society?
The very name of divinity shall be humanity.
Humanity is my divinity, humanity is my divinity.

51. इस अखिल ब्रह्माण्ड में , बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

प्राण मेरे सूर्य मंडल में, प्रभा बन जगमगाते।
प्राण मेरे शून्य के शशि, तारकों में झिलमिलाते॥
प्राण की मदिरा पिये, दिन-रात पृथ्वी झूमती सी।
वायु बनकर प्राण मेरे, व्योम को सिर पर उठाते॥
है हुई उत्पन्न मुझसे, ही सकल हलचल जगत की।
विश्व की चैतन्यता है, प्राण की पहचान मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

प्राण मैं अपने सरित सर, सागरों में देखता हूँ।
प्राण मैं अपने विपिन गिरि, गह्वरों में देखता हूँ॥
योनियों में लाख चौरासी, बना बन्दी पड़ा मैं।
प्राण मैं निज व्योम जल-थल, चर नरों में देखता हूँ॥
सृष्टि के आरम्भ से ही, हर दिशा में हर तरफ से।
प्राण की झंकार आती, सुन रहे हैं कान मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

दीन-दुखियों की व्यथा है, वेदना मेरे हृदय की।
चिर वियोगिनि की कथा है, वेदना मेरे हृदय की॥
है सबल का विश्व साथी, किन्तु दुर्बल का न कोई।
मानवों की यह प्रथा है, वेदना मेरे हृदय की॥
हँस कभी पाया न सुख से, मैं अमर सहचर दुःखों का।
सिसकियाँ भरते इसी से, अश्रु सिंचित गान मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

सभ्यताएँ लुट चुकी हैं, उच्च उन्नति के शिखर पर।
जातियाँ सोई अनेकों, जागरण के गीत गाकर॥
आज के नृप-राज सम्भव, हैं बने कल के भिखारी।
पी सका अमरत्व का विष, कौन किस्मत का सिकन्दर॥
हैं सृजन-विध्वंस मेरे, भाग्य की लिपि में लिखे से।
खूब देखे हैं समय ने, सब पतन-उत्थान मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

51. इस अखिल ब्रह्माण्ड में **,** बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे — **English Meaning** / भावार्थ

In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos...

My life-force shines as radiance in the solar realm,
My life-force shimmers in the moon and stars of the void.
Drinking the wine of my life-force, day and night the Earth sways as if intoxicated,
Becoming the wind, my life-force lifts the sky upon its head.
From me alone has arisen all the movement of this world,
The consciousness of the universe is the very identity of my life-force.

In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos...

I see my life-force in rivers, lakes, and oceans,
I see my life-force in forests, mountains, and caves.
Imprisoned within the eighty-four lakh species of life, I lie captive,
I see my own life-force in the sky, water, land, and moving men.
Since the very dawn of creation, from every direction and every side,
Resounds the vibration of my life-force, which my ears continue to hear.

In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos...

The agony of the poor and suffering is the pain of my heart,
The tale of the eternally separated soul is the pain of my heart.
The world is a companion to the strong, but there is none for the weak,
This is the custom of mankind, which is the pain of my heart.
I could never laugh with joy, I am the immortal companion of sorrows,
And so, sobbing, my songs are drenched in tears.

In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos...

Civilizations have been plundered at the very peak of their high progress,
Countless races have fallen asleep after singing songs of awakening.
The kings and rulers of today may well become the beggars of tomorrow,
Who is such a conqueror of destiny that could drink the poison of immortality?
Creation and destruction seem written in the script of my fate,
Time has witnessed well all my rises and falls.

In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos, scattered lies my life-force.
In this entire cosmos...

52. जब - जब सौ - सौ बाँह पसारे , खड़ा तिमिर हो बीच डगर में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

जब-जब सौ-सौ बाँह पसारे, खड़ा तिमिर हो बीच डगर में।
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

उठते तूफानों को आखिर, इक दिन मिट जाना ही होगा।
बढ़े प्रलय तो उसे सहमकर, आखिर रुक जाना ही होगा॥
मंजिल दूर भले हो लेकिन, उर में दृढ़ विश्वास यही है।
दुःखी जगत के इस आँगन में, सुख को फिर आना ही होगा॥
पग-पग से तुम डगर नापते, अंगारों पर चलते जाओ॥
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

ज्योति तुम्हारी बिखरे जो, भूतल से अम्बर तक छा जाये।
और सिसकती मानवता फिर, हँसकर मंगल मोद मनाये॥
पाने को यह लक्ष्य तुम्हें नित, तिल-तिल करके जलना होगा।
हो सकता है क्रूर काल यह, तुमको ठोकर देता जाये॥
तुम गिरकर भी फिर उठ-उठकर, सतत लक्ष्य तक बढ़ते जाओ॥
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

जग में जीते वही परिस्थितियों से, जो टकराया करते हैं।
चट्टानों को तोड़ स्वयं ही, अपना मार्ग बनाया करते॥
उन फूलों की ही सुगन्ध तो, छायी है सारे उपवन में।
जो काँटों से बिंधते लेकिन, म्लान न हो मुस्काया करते॥
सौरभ बिखराना चाहो तो, काँटों में भी पलते जाओ॥
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

जब-जब सौ-सौ बाँह पसारे, खड़ा तिमिर हो बीच डगर में।
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

52. जब - जब सौ - सौ बाँह पसारे , खड़ा तिमिर हो बीच डगर में — **English Meaning** / भावार्थ

> *Whenever darkness stands in the middle of your path, spreading its hundred arms,*
> *Keep burning like a lamp. Keep burning like a lamp.*
>
> *The rising storms must ultimately fade away one day.*
> *Even if the deluge grows, it must shrink back and finally halt.*
> *Though the destination may be far, this firm faith resides within the heart:*
> *In this courtyard of a sorrowful world, joy must surely return once more.*
> *Measuring the path step by step, keep walking upon the burning embers.*
> *Keep burning like a lamp. Keep burning like a lamp.*
>
> *May your light scatter and spread from the earth to the heavens,*
> *And sobbing humanity may smile again, celebrating auspicious joy.*
> *To achieve this goal, you must burn daily, bit by bit, moment by moment.*
> *It may be that cruel time will keep dealing you blows and stumbling blocks.*
> *Even if you fall, rise again and again, and continuously march toward your goal.*
> *Keep burning like a lamp. Keep burning like a lamp.*
>
> *In this world, only those triumph over circumstances who dare to clash with them,*
> *Who shatter the rocks themselves to carve out their own path.*
> *The fragrance of only those flowers pervades the entire garden,*
> *Which are pierced by thorns, yet smile without ever fading.*
> *If you wish to scatter your fragrance, keep thriving even amidst the thorns.*
> *Keep burning like a lamp. Keep burning like a lamp.*
>
> *Whenever darkness stands in the middle of your path, spreading its hundred arms,*
> *Keep burning like a lamp. Keep burning like a lamp.*

53. जब स्वयं को विकल तुम अनुभव करोगे   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

जब स्वयं को विकल तुम अनुभव करोगे।
तब हमारा स्नेह देता साथ होगा॥
आर्त स्वर में जब कभी कुछ भी कहोगे।
घाव पर मरहम लगाता हाथ होगा॥

कष्ट या कठिनाइयों से तुम न डरना।
भंवर से मझधार से संघर्ष करना॥
जीत होगी जिन्दगी की हर डगर में।
लोक जीवन में नया उत्साह भरना॥
पुत्र तुमको जब अकेलापन खलेगा।
माँ- पिता का कवच भी तब साथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

हम तुम्हारी श्वाँस में ऊर्जा भरेंगे।
खून की हर बूँद तक नव प्राण देंगे॥
यह मधुर सम्बन्ध जन्मों तक निभेगा।
सूक्ष्म में रहकर तुम्हें वरदान देंगे॥
जब कभी हारे-थके अनुभव करोगे।
पीठ को थपकी लगाता हाथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

आस है तुम हर दुखी को प्यार दोगे।
आँसुओं को तुम नई मुस्कान दोगे॥
जो भटकते हैं यहाँ जीवन समर में।
दीप बनकर ज्योति का अनुदान दोगे॥
कार्य जब उत्साह से पूरा करोगे।
प्यार आशीर्वाद देता हाथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

पुत्र तुम मजबूत कन्धे हो हमारे।
अंग-अवयव हो तुम्हीं हो नयन प्यारे॥
भार तुम पर आज गुरुतर सौंपते हैं।
पूर्णतः निश्चिंत तुम सबके सहारे॥
शक्ति की तुमको कमी अनुभव न होगी।
ब्रह्मबल निश्चय तुम्हारे साथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

साधकों श्रम बिन्दु जब भूपर गिरेंगे।
तब धरा पर प्यार के उपवन खिलेंगे॥
उस सुवासित शान्ति के वातावरण में।
इस जगत को स्वर्ग जैसा सुख मिलेगा।
जब तुम्हारी ज्योति डग-मग सी दिखेगी।
दिव्य आँचल का सहारा साथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

एक थे पहले! पुनः अब एक होंगे।
द्वैत के बन्धन पुनः हम तोड़ देंगे॥
देह से हो दूर तुम आहें न भरना।
हम तुम्हारी चाह को पूरा करेंगे॥
चर्म के इन चक्षुओं को जब ढकोगे।
प्रखर सविता रूप का आभास होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

53. जब स्वयं को विकल तुम अनुभव करोगे — **English Meaning** / भावार्थ

When you find yourself restless and distressed,
At that moment, our affection will be there to accompany you.
Whenever you call out in a voice of deep anguish,
There will be a hand applying healing balm to your wounds.

Do not fear any pain or difficulties,
Fight through the whirlpools and the midstream currents.
Victory shall be yours on every path of life,
Fill the lives of the masses with a new enthusiasm.
O child, whenever loneliness begins to hurt you,
The protective shield of your mother and father will be with you.
When you find yourself restless and distressed... There will be a hand applying healing balm.

We shall infuse vital energy into your every breath,
We shall bestow new life-force to every drop of your blood.
This sweet relationship will endure across lifetimes,
Remaining in the subtle realm, we shall grant you blessings.
Whenever you feel defeated and exhausted,
There will be a hand gently patting your back in encouragement.
When you find yourself restless and distressed... There will be a hand applying healing balm.

It is our hope that you will give love to every grieving soul,
You will transform their tears into a new smile.
To those who wander lost in this battle of life,
You will become a lamp, offering the gift of light.
When you complete your tasks with great enthusiasm,
There will be a hand bestowing love and blessings.
When you find yourself restless and distressed... There will be a hand applying healing balm.

O child, you are our strong shoulders,
You are our very limbs, our beloved eyes.
Today we entrust you with a greater, heavier responsibility,
We are completely at peace, relying on you.
You shall never experience a lack of strength,
The divine spiritual power will surely be with you.
When you find yourself restless and distressed... There will be a hand applying healing balm.

O seekers, when the drops of your sweat fall upon the earth,
Then gardens of love will blossom upon this land.
In that fragrant atmosphere of profound peace,
This world will experience a joy akin to heaven.
Whenever your light appears to flicker and waver,
The support of the divine motherly embrace will be with you.
When you find yourself restless and distressed... There will be a hand applying healing balm.

We were one before! Now we shall be one again,
We shall break the bonds of duality once more.
Do not sigh because you are physically distant,
We shall fulfill your deepest spiritual yearning.
When you close these physical eyes of flesh,
You will perceive the radiant form of the brilliant Sun.
When you find yourself restless and distressed... There will be a hand applying healing balm.

54. जब तक है विश्वास लगन , दृढ़ - क्षमता की पतवार   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार।
माँझी भय क्या तुझे? भले ही, आँधी या मझधार॥

आज उदधि सीमा-बन्धन से, मुक्त हो रहा ले अँगड़ाई।
लहरों के विद्रोही उर में, जाग उठी सोई तरुणाई॥
जाने क्यों? विक्षुब्ध हृदय में, आया उसके ज्वार।
झूम-झूम कर खेते जाना, मत होना लाचार॥
जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार।
माँझी भय क्या तुझे? भले ही, आँधी या मझधार॥

खेल खेलने ही आता है, साहस से तूफान बिचारा।
जहाँ चाह है वहाँ राह है, निकट इसी से सदा किनारा॥
मंजिल स्वयं चली आयेगी, थककर तेरे द्वार।
झुका न देना भाल कहीं तू, इस जीवन में हार॥
जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार।
माँझी भय क्या तुझे? भले ही, आँधी या मझधार॥

थक जायेगी डगर एक दिन, गति में यदि आये न शिथिलता।
मिल जायेगी शान्ति सुनिश्चित, अधरों पर आये न विकलता॥
शूलों की नोकों पर खिलते, सुन्दर सुमन अपार।
भूल न जाना पंथ घिरा हो, चहुँ दिशि में अँधियार॥
जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार।
माँझी भय क्या तुझे? भले ही, आँधी या मझधार॥

54. जब तक है विश्वास लगन **,** दृढ़ **-** क्षमता की पतवार — **English Meaning** / भावार्थ

> *As long as there is faith, devotion, and the oar of resolute strength,*
> *O boatman, what fear have you? Be it a storm or the deep midstream.*
>
> *Today the ocean, stretching, breaks free from the bonds of its limits,*
> *In the rebellious heart of the waves, a sleeping youthfulness has awakened.*
> *Who knows why? In its turbulent heart, a high tide has arisen,*
> *Keep rowing, swaying with joy, never let yourself feel helpless.*
>
> *As long as there is faith, devotion, and the oar of resolute strength,*
> *O boatman, what fear have you? Be it a storm or the deep midstream.*
>
> *The poor storm comes only to play a game with your courage,*
> *Where there is a will, there is a way, and thus the shore is always near.*
> *The destination itself will come, weary, to your doorstep,*
> *Never bow your head in defeat anywhere in this life.*
>
> *As long as there is faith, devotion, and the oar of resolute strength,*
> *O boatman, what fear have you? Be it a storm or the deep midstream.*
>
> *The path itself will grow weary one day, if your pace does not falter,*
> *Peace will surely be attained, if no restlessness touches your lips.*
> *Upon the very tips of thorns bloom countless beautiful flowers,*
> *Do not lose your way, even if darkness surrounds you on all sides.*
>
> *As long as there is faith, devotion, and the oar of resolute strength,*
> *O boatman, what fear have you? Be it a storm or the deep midstream.*

55. जल रहे दीपक हजारों ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले।
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले॥

मृत्तिका ही देह जिसमें, वृत्तिका है प्राण की।
आयु का है स्नेह थोड़ा, लौ उठी मुस्कान की॥
रात लम्बी, स्नेह तिल-तिल घट रहा।
चन्द साँसों का, खजाना लुट रहा॥
गुनगुना लूँ गीत ऐसे, प्यार के दो क्षण जरा।
दूर तक फैली अमासव, की शिला का तन गले॥
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले।
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले॥

लोरियाँ सुनता चलूँ, तूफान की मँझधार की।
रोशनी बनता चलूँ मैं, हर गली हर द्वार की॥
हर नयन में ज्योति हो विश्वास की।
हर चरण में गति भरें उल्लास की॥
जिन्दगी के स्वप्न पाये, जागरण की नव-किरण।
डूबती हर नाव को, पतवार का सम्बल मिले॥
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले।
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले॥

टूट जाये स्वार्थ गढ़, संकल्प शर-सन्धान से।
जोड़ दे लौ प्रेम की, इन्सान को इन्सान से॥
हर दिशा से एक ही आवाज सुनने को मिले।
हों सभी के मन प्रफुल्लित और सबके दिल खिले॥
ज्योति की इस पुण्य-धारा, में लगाकर डुबकियाँ।
हर मनुज का मन सुमन सा, गन्ध बिखराता चले॥
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले।
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले॥

55. जल रहे दीपक हजारों — **English Meaning** / भावार्थ

Thousands of lamps are burning, may my lamp also burn.
Thousands of lamps are burning, may my lamp also burn.

This body is but clay, wherein the wick is of the life-force.
The oil of life's span is scarce, yet the flame of a smile has risen.
The night is long, the oil is depleting drop by drop.
The treasure of a few breaths is being spent away.
Let me hum such songs of just a few moments of love,
So that the rocky body of the far-stretching dark night may melt away.

Thousands of lamps are burning, may my lamp also burn.
Thousands of lamps are burning, may my lamp also burn.

May I walk listening to the lullabies of the storm's midstream,
May I go on becoming the light of every street and every door.
May there be the light of faith in every eye,
May every step be filled with the swiftness of joy.
May the dreams of life receive the new ray of awakening,
May every sinking boat find the support of an oar.

Thousands of lamps are burning, may my lamp also burn.
Thousands of lamps are burning, may my lamp also burn.

May the fortress of selfishness shatter by the arrow of resolve,
May the flame of love unite human with human.
May only one voice be heard echoing from every direction,
May everyone's mind be delighted and every heart blossom.
Taking a deep plunge into this sacred stream of light,
May the mind of every human, like a flower, scatter fragrance as they go.

Thousands of lamps are burning, may my lamp also burn.
Thousands of lamps are burning, may my lamp also burn.

56. जीवन का अनुदान बिन्दु ने , महासिन्धु से पाया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

जैसा जल से बाहर होती, है मछली की तड़पन।
मातृगोद से बिछुड़े नवशिशु, का देखा है क्रन्दन॥
विकल विरहिणी की आँखें ज्यों, छलकाती है पीड़ा।
होकर व्याकुल जिसे ढूँढ़ती, मीरा की मन वीणा॥
व्याकुल मन हो इसी वेदना, का अमृत चख पाया॥
जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

नाते-रिश्ते सारे जग के, व्यर्थ अरे तब लगते।
आँखों से आँसू अन्तर से, अमृत बिंदु बरसते॥
बिछुड़ गये जबसे भवसागर, में हम गोता खाते।
बहुत हो चुका देव नहीं अब, दर्द सहे हैं जाते॥
करुणाकर! करुणा कर अब तो, मेरा मन घबराया॥
जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

एक निमिष ले गोदी में तुम, दिखे हमें दुलराते।
लुप्त हुए क्यों अगले ही क्षण, विरह-व्यथा भर जाते॥
मिली तुम्हारी झाँकी पागल, हो यह मन खिल उठता।
किन्तु दूसरे पल माया का, पर्दा फिर हिल उठता॥
मेरे प्रभु! क्यों तूने मन को, इतना अधिक दुःखाया॥
जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

मेरा जीवन बना पतंगा, तुमको आज समर्पित।
सुख की पुलकन दुःख का क्रन्दन, सब तेरे ही अर्पित॥
स्वर्ग-मुक्ति या नर्क पुनर्भव, रही न चिन्ता बाकी।
एक कामना बस पा लूँ प्रभु, तेरी प्यारी झाँकी॥
तेरे चरण कमल पर मैंने, जीवन अर्घ्य चढ़ाया॥
जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

56. जीवन का अनुदान बिन्दु ने **,** महासिन्धु से पाया — **English Meaning** / भावार्थ

The tiny drop received the boon of life from the vast ocean.
To unite with the Supreme Life-Force today, the individual soul itself yearns in agony.

Just like the agonizing thrashing of a fish cast out of water,
Or the weeping of a newborn infant separated from its mother's lap.
Just as the eyes of a distressed, pining lover overflow with pain,
Whom the lute of Meera's heart searches for in restless longing.
Only through this restless yearning has the mind tasted the nectar of this pain.

The tiny drop received the boon of life from the vast ocean.
To unite with the Supreme Life-Force today, the individual soul itself yearns in agony.

All the relationships of this world then seem utterly futile,
Tears stream from the eyes, while drops of nectar rain from the inner soul.
Ever since we were separated, we have been plunging in this ocean of worldly existence,
It is now too much, O Lord, this pain can no longer be endured.
O Merciful One! Show mercy now, for my heart is trembling with despair.

The tiny drop received the boon of life from the vast ocean.
To unite with the Supreme Life-Force today, the individual soul itself yearns in agony.

For a single moment, taking me in your lap, you seemed to caress me,
Why did you vanish the very next instant, leaving me filled with the agony of separation?
Beholding your divine glimpse, this mad heart blooms with joy,
But in the very next moment, the veil of illusion sways once more.
My Lord! Why have you caused so much sorrow to this heart?

The tiny drop received the boon of life from the vast ocean.
To unite with the Supreme Life-Force today, the individual soul itself yearns in agony.

My life has become a moth, dedicated to you this day,
The thrill of joy, the weeping of sorrow, all are offered unto you.
Heaven, liberation, or hell and rebirth—no worry now remains,
Just one desire is left, O Lord, to behold your beloved glimpse.
At your lotus feet, I have offered the sacred oblation of my life.

The tiny drop received the boon of life from the vast ocean.
To unite with the Supreme Life-Force today, the individual soul itself yearns in agony.

57. जीवन के आधार तुम्हीं हो   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
विश्व-भुवन में मधुर-मनोरम, अनहद नाद सुनाते॥

तेरी ही छवि छिपी हुई है, सारे नील गगन में।
तुम्हीं प्रकाशित अखिल सृष्टि के, जड़-चेतन कण-कण में॥
विहस तुम्हीं खिल-खिला रहे हो, सौरभ भरे सुमन में।
मलयज से तुम बसे हुए हो, शीतल मंद पवन में॥
विश्व-रूप बन हर प्राणी में, दिखते तुम्हीं समाते॥
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते॥

तप पुँज तुमसे ही तापित, होता है यह दिनकर।
मधुर चाँदनी की शीतलता, पा जाता है शशिधर॥
ग्रह, नक्षत्र, ब्रह्माण्ड सभी, इंगित से चला रहे हो।
ज्योति पुँज! इन प्राण-ज्योति के, दीपक जला रहे हो॥
महाप्राण ये प्राण तुम्हीं से, गति चेतनता पाते॥
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते॥

हे प्रभु! अपना सारा जीवन, कर दूँ तुम्हें समर्पित।
सुख की सिहरन दुःख की तड़पन, हर्ष-शोक सब अर्पित॥
शुभ चरणों में लगा रहे अब, हर क्षण ध्यान हमारा।
भ्रमित न कर पाये हमको ये, गहन निशा अँधियारा॥
दिव्य प्रेरणा और शक्ति दे, रहना हमें चलाते॥
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते॥

जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
विश्व-भुवन में मधुर-मनोरम, अनहद नाद सुनाते॥

57. जीवन के आधार तुम्हीं हो — **English Meaning** / भावार्थ

You are the very foundation of life, smiling in every atom.
In the entire universe, You make the sweet, enchanting, unstruck melody resound.
Your image alone lies hidden across the vast blue sky.
You illuminate every atom, both animate and inanimate, of the entire creation.
Smiling, You bloom joyfully in the fragrance-filled flowers.
Like sandalwood, You dwell within the cool, gentle breeze.
Manifesting as the cosmic form, You are seen residing in every living being.
You are the very foundation of life, smiling in every atom.
You are the very foundation of life, smiling in every atom.

The sun, a mass of intense heat, is warmed by You alone.
The moon obtains the coolness of its sweet moonlight from You.
Planets, constellations, and the entire cosmos—You guide them all with a mere gesture.
O Mass of Effulgence! You light the lamps of these life-forces.
O Supreme Breath! From You, these life-breaths receive movement and consciousness.
You are the very foundation of life, smiling in every atom.
You are the very foundation of life, smiling in every atom.

O Lord! May I surrender my entire life to You.
The thrill of joy, the agony of sorrow, pleasure and grief—all are offered to You.
May our contemplation remain fixed upon Your auspicious feet at every moment.
May the deep darkness of this night never lead us astray.
Giving us divine inspiration and strength, keep us moving forward.
You are the very foundation of life, smiling in every atom.
You are the very foundation of life, smiling in every atom.

You are the very foundation of life, smiling in every atom.
In the entire universe, You make the sweet, enchanting, unstruck melody resound.

58. जीवन बन तू फूल समान   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

जीवन बन तू फूल समान, पर उपकार सुरभि से सुरभित।
सन्तत हो सुख दान, जीवन बन तू फूल समान॥

स्वच्छ हो खिल जा प्यारे, तू भी परम प्रेम को धारे।
सुखदाई हो सबका जग में, पा सबसे सम्मान॥
जीवन बन तू फूल समान॥

कठिन कण्टकों के घेरे में, दारुण दुखदाई फेरे में।
पड़कर विचलित कहीं न होना, बनना नहीं अंजान॥
जीवन बन तू फूल समान॥

शत्रु मित्र दोनों का हित हो, पावन यह तेरा शुभ व्रत हो।
मधु दाता बन सबका प्यारा, तजकर भेद-विधान॥
जीवन बन तू फूल समान॥

दे तू सुरभि टूटने पर भी, पैरों तले कुचलने पर भी।
इस विधि से प्रभु की माला में, पा ले प्रिय स्थान॥
जीवन बन तू फूल समान॥

जीवन बन तू फूल समान, पर उपकार सुरभि से सुरभित।
सन्तत हो सुख दान, जीवन बन तू फूल समान॥

58. जीवन बन तू फूल समान — **English Meaning** / भावार्थ

Let your life become like a flower, fragrant with the sweet scent of benevolence.
Constantly offering the gift of joy, let your life become like a flower.

Bloom pure and bright, O beloved, holding supreme love within your heart.
Bring happiness to everyone in the world, and earn the respect of all.
Let your life become like a flower.

Surrounded by sharp and painful thorns, amidst the agonizing cycles of sorrow.
Never waver when caught in them, nor lose your awareness.
Let your life become like a flower.

May the well-being of both friend and foe be your sacred and auspicious vow.
Become the sweet giver of nectar, beloved of all, discarding all sense of division.
Let your life become like a flower.

Give your fragrance even when plucked, even when crushed beneath the feet.
In this way, find a cherished place in the garland of the Lord.
Let your life become like a flower.

Let your life become like a flower, fragrant with the sweet scent of benevolence.
Constantly offering the gift of joy, let your life become like a flower.

59. जीवन्त है जगत में , कण - कण तुम्हीं से भगवन्   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन्।
हैं विद्यमान जड़ और चेतन तुम्हीं से भगवन्॥

आकाश में तुम्हीं से, संव्याप्त नीलिमा की।
तुम ताप सूर्य के हो, तुम शीत चन्द्रमा की॥
फूलों में पल्लवों में, पुलकन तुम्हीं से भगवन्॥
जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन्।

स्फूर्ति भोर की चिर, आकांक्षा तुम्हीं हो।
दिग्भ्रांत हर पथिक की, प्रेरक दिशा तुम्हीं हो॥
हैं प्राणतत्त्व तुमसे, जीवन तुम्हीं से भगवन्॥
जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन्।

अनुदान से प्रफुल्लित, होते कृतज्ञ प्राणी।
आभास पर तुम्हारा, पाते न अज्ञ प्राणी॥
निर्मित प्रकृति तुम्हीं से, हर क्षण तुम्हीं से भगवन्॥
जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन्।
हैं विद्यमान जड़ और चेतन तुम्हीं से भगवन्॥

59. जीवन्त है जगत में **,** कण **-** कण तुम्हीं से भगवन् — **English Meaning** / भावार्थ

Alive is this world, every single atom is vibrant with You, O Lord.
The inanimate and the animate exist only because of You, O Lord.

In the sky, the pervading blueness is because of You.
You are the warmth of the sun, You are the coolness of the moon.
In the flowers and the leaves, the joyful thrill is from You, O Lord.
Alive is this world, every single atom is vibrant with You, O Lord.

You are the eternal vitality of the dawn, the everlasting aspiration.
For every lost traveler, You are the guiding, inspiring direction.
The life-force is from You, life itself is because of You, O Lord.
Alive is this world, every single atom is vibrant with You, O Lord.

Rejoicing in Your bountiful grace, grateful souls blossom.
Yet Your divine presence, the ignorant fail to perceive.
Nature is fashioned by You, every moment is because of You, O Lord.
Alive is this world, every single atom is vibrant with You, O Lord.
The inanimate and the animate exist only because of You, O Lord.

60. झनझना दे चेतना के जड़ विनिर्मित तार को ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को।
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को॥
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

राग-रंजित प्राण हों अब, रंग कुछ ऐसा चढ़ा।
नेत्र अन्तर के खुलें अब, पाठ कुछ ऐसा पढ़ा॥
देख पाएँ रूप तेरा, पा सकें तव द्वार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

ज्ञान आभा बुद्धि में भर, हृदय में शुचि भावना।
कर्म पथ पर पग बढ़ें, कर्तव्य की हो साधना॥
हम समझ लें आज से, प्रतिबिम्ब तव संसार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

पीड़ितों को बाँटकर, ममता हृदय की हम खिलें।
प्यार का सागर भरे, उर में सभी से हम मिलें॥
खोल दे माँ आत्मा की, रुद्ध सी इस धार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

है नहीं कुछ पास, पूजा थाल हम किससे भरें
झर चुके सद्गुण सुमन, अर्पित तुझे अब क्या करें॥
आज तो स्वीकार ले, आँसू भरी मनुहार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

60. झनझना दे चेतना के जड़ विनिर्मित तार को — **English Meaning** / भावार्थ

Vibrate the inertly-fashioned strings of consciousness.
O Mother, awaken today, the sleeping love of my heart.
Vibrate the inertly-fashioned strings of consciousness.

May my life-force be steeped in divine love, cast such a hue upon me.
May the inner eyes open now, teach me such a lesson.
That I may behold Your form, and reach Your threshold.
O Mother, awaken today, the sleeping love of my heart.
Vibrate the inertly-fashioned strings of consciousness.

Fill my intellect with the light of wisdom, and my heart with pure devotion.
May my steps advance on the path of action, may duty be my spiritual practice.
May we realize from this day on, that this world is Your reflection.
O Mother, awaken today, the sleeping love of my heart.
Vibrate the inertly-fashioned strings of consciousness.

By sharing the maternal love of our hearts with the suffering, may we blossom.
With an ocean of love filling our hearts, may we meet one and all.
Unleash, O Mother, this blocked stream of the soul.
O Mother, awaken today, the sleeping love of my heart.
Vibrate the inertly-fashioned strings of consciousness.

I have nothing with me, with what shall I fill the worship platter?
The flowers of virtues have withered and fallen, what shall I offer You now?
Accept today, this tear-filled, humble entreaty.
O Mother, awaken today, the sleeping love of my heart.
Vibrate the inertly-fashioned strings of consciousness.

O Mother, awaken today, the sleeping love of my heart.
Vibrate the inertly-fashioned strings of consciousness.
O Mother, awaken today, the sleeping love of my heart.
Vibrate the inertly-fashioned strings of consciousness.

61. झीनी **-** झीनी बीनी चदरिया   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया, झीनी-झीनी बीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया॥
ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया॥

दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।
झीनी-झीनी बीनी चदरिया, ज्यों की त्यों रख दीनी चदरिया॥

दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।
झीनी-झीनी बीनी चदरिया, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया॥

दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों रख दीनी चदरिया।
झीनी-झीनी बीनी चदरिया, ज्यों की त्यों रख दीनी चदरिया॥

61. झीनी - झीनी बीनी चदरिया — **English Meaning** / भावार्थ

> *Just as it was, I laid down the shawl, this finely and delicately woven shawl.*
> *Servant Kabir wore it with utmost care, and laid it down just as it was.*
> *Just as it was, I laid down the shawl, just as it was, I laid down the shawl.*
> *Servant Kabir wore it with utmost care, and laid it down just as it was.*
> *This finely and delicately woven shawl, I laid it down just as it was.*
> *Servant Kabir wore it with utmost care, and laid it down just as it was.*
> *This finely and delicately woven shawl, I laid it down just as it was.*
> *Servant Kabir wore it with utmost care, and laid it down just as it was.*
> *This finely and delicately woven shawl, I laid it down just as it was.*

62. जो हिमालय सा उठे जीवन , धरा पर नर वही है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

आपदा के अग्नि-पथ पर, जो कभी रुकना न जाने।
दैन्य के अभिशाप में भी, जो कभी झुकना न जाने॥
प्रलय झंझावात में भी, भँवर में फँसना न जाने
गीतमय जीवन बना ले, गीत को ही धर्म माने॥
गा सके संघर्ष में हँसकर, सदा जो स्वर वही है॥
जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है।

मेघ सा झर-झर बरस जो, नेह से जग सिक्त कर दे।
फूल सा खिल सुरभि बिखरा, जो स्वयं को रिक्त कर दे॥
देवता पत्थर नहीं है, मनुज में ही देवता है।
आँसुओं के अर्घ्य से जो, मनुज को अभिषिक्त कर दे॥
चीर कर चट्टान जो आगे बढ़े, निर्झर वही है॥
जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है।

जो सदा श्रम सीकरों से, मोतियों को तोलता हो।
स्वयं हँसकर पी हलाहल, निज सुधा-रस घोलता हो॥
तप्त सूरज की किरण से, जागरण की ज्योति लेकर।
मौन करुणा के स्वरों में, मनुजता से बोलता हो॥
युग-युगों की मरु पिपासा सोख ले, सागर वही है॥
जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है।

तारकों की झिलमिली से, सुख कभी मिलता नहीं है।
बिना रवि का ताप झेले, सुमन मन खिलता नहीं है॥
तारकों की छाँह तज जो, धूप में आँखें पसारे।
कर्म के गाण्डीव से जो, स्वर्ग को भू पर उतारे॥
वज्र सा टूटे सदा निज लक्ष्य पर जो, शर वही है॥
जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है।

62. जो हिमालय सा उठे जीवन **,** धरा पर नर वही है — **English Meaning** / भावार्थ

He who knows not how to halt upon the fiery path of adversity,
He who knows not how to bow, even under the curse of wretched misery,
He who knows not how to get trapped in the whirlpool, even amidst the tempest of destruction,
Who makes his life a song, and holds that song as his sole sacred duty,
The true voice is that which can sing with a smile amidst the struggle,
The one whose life rises like the Himalayas, he alone is a true man on this earth.

He who pours down like a cloud, drenching the world with the rain of love,
Who blooms like a flower, scattering fragrance, and empties himself completely,
Divinity is not made of stone; the divine resides within man himself,
He who anoints humanity with the sacred offering of his tears,
The true mountain stream is that which cleaves through solid rock to forge ahead,
The one whose life rises like the Himalayas, he alone is a true man on this earth.

He who always weighs pearls against the sweat-drops of his labor,
Who drinks the deadly poison with a smile, and dissolves his own nectar of sweetness for others,
Drawing the flame of awakening from the scorching rays of the sun,
Who speaks to humanity in the gentle tones of silent compassion,
The true ocean is that which quenches the desert thirst of ages,
The one whose life rises like the Himalayas, he alone is a true man on this earth.

True happiness is never found in the mere shimmering of stars,
Without enduring the scorching heat of the sun, the flower of the mind cannot bloom,
He who leaves the cool shade of stars to open his eyes wide in the blazing sun,
Who brings heaven down to earth with the mighty Gandiva bow of his actions,
The true arrow is that which strikes its target with the force of a thunderbolt,
The one whose life rises like the Himalayas, he alone is a true man on this earth.

63. ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक , जलाओ ऐसा दीपक एक ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक।
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥

बुझे जो तूफानों में नहीं, जले अविराम, तिमिर कर दूर।
धरा पर लाये पुण्य प्रकाश, स्नेह तुम दो इतना भरपूर॥
पंथ ज्योतित हो उठें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक।
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥

प्रलय की झंझा में बुझ गये, न जाने कितने दीपक अजान।
जला दो गाकर दीपक राग, बावरे बैजू की बन तान॥
प्रेरणा भर दो ऐसी एक, स्वतः जागृत हों उठें अनेक॥
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक।
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥

सृजन हो नया, सृष्टि हो नई, लगन हो नई, नया विश्वास।
हृदय में ले अदम्य उत्साह, रचें फिर से नूतन इतिहास॥
पीर यदि भर दो ऐसी एक, कंठ से निकलें गीत अनेक॥
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक।
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥

63. ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक **,** जलाओ ऐसा दीपक एक — **English Meaning** / भावार्थ

Light such a single lamp, from which many other lights may be lit.
Light such a single lamp, from which many other lights may be lit.
One that does not extinguish in storms, burns ceaselessly, dispelling the darkness.
Brings sacred light upon the earth, pour into it such abundant love.
So that many paths may become illuminated, light such a single lamp.
Light such a single lamp, from which many other lights may be lit.
Light such a single lamp, from which many other lights may be lit.
In the tempest of destruction, who knows how many innocent lamps were extinguished.
Relight them by singing the Deepak Raga, becoming the melody of the ecstatic Baiju.
Infuse such a single inspiration, that many may awaken on their own.
Light such a single lamp, from which many other lights may be lit.
Light such a single lamp, from which many other lights may be lit.
Let there be a new creation, a new world, a new devotion, a new faith.
With indomitable enthusiasm in the heart, let us write a new history once again.
If you infuse such a single sacred pain, many songs will flow from the throat.
Light such a single lamp, from which many other lights may be lit.
Light such a single lamp, from which many other lights may be lit.

64. कैसे दें हम तुम्हें विदाई ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

तुमने कोटि पुण्य फल पाये, चलकर बहुत दूर से आये।
चेहरे थके हुए मुरझाये, फिर भी है उल्लास समाये॥
गुरुसत्ता ने टेर लगाई, तुमने मिलकर शपथ उठाई।
पथ में आयेगी कठिनाई, कैसे दे हम तुम्हें विदाई॥
जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

जग में पीड़ा बढ़ती जाती, आँखें हैं भर-भर कर आती।
दुनिया नहीं समझ कुछ पाती, शक्ति कहाँ से मन में आती॥
हमने सारी शक्ति लगाई, ऐसी ज्योति अखण्ड जलाई।
हाथ में तुम्हें मशाल थमाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥
जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

कल का दिन ऐसा आयेगा, सूना आँगन हो जायेगा।
मन रोयेगा पछतायेगा, अन्धकार सा छा जायेगा॥
हमको देने लगी दिखाई, अपनी पीड़ा की परछाई।
हैं दोनों आँखें भर आई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥
जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

साथ में हैं गुरुदेव तुम्हारे, अपनी हिम्मत कभी न हारें।
पग भी पीछे कभी न डारें, फिर से यह संसार सुधारें॥
देव संस्कृति है अकुलाई, जाये शपथ न कभी भुलाई।
है यह शुभकामना सुहाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥
जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

64. कैसे दें हम तुम्हें विदाई — **English Meaning** / भावार्थ

Just like a mother cow with her newborn, unable to bear her calf's pain,
Such profound, overwhelming agony has spread; how do we bid you farewell?
You have reaped the fruits of millions of virtues, having journeyed from so far away,
Though your faces are weary and worn, they are still filled with radiant joy.
The Divine Guru Authority called out, and together you took a sacred oath,
Though hardships will arise on the path, how do we bid you farewell?

Just like a mother cow with her newborn, unable to bear her calf's pain,
Such profound, overwhelming agony has spread; how do we bid you farewell?
The suffering in this world continues to grow, and our eyes keep filling with tears,
The world understands nothing of this, from where does this inner strength arise?
We have poured in all our energy, and lit such an eternal flame,
We have placed the torch of light in your hands; how do we bid you farewell?

Just like a mother cow with her newborn, unable to bear her calf's pain,
Such profound, overwhelming agony has spread; how do we bid you farewell?
Tomorrow will bring such a day, when this courtyard will become desolate and empty,
The heart will weep and yearn in longing, and a shadow of darkness will descend.
We have begun to clearly perceive the shadow of our impending grief,
Both of our eyes are brimming with tears; how do we bid you farewell?

Just like a mother cow with her newborn, unable to bear her calf's pain,
Such profound, overwhelming agony has spread; how do we bid you farewell?
Your Gurudev is forever by your side, may you never lose your courage,
Never take a single step backward, and uplift this world once again.
The divine culture yearns for revival, may this sacred oath never be forgotten,
This is our beautiful, auspicious blessing; how do we bid you farewell?

Just like a mother cow with her newborn, unable to bear her calf's pain,
Such profound, overwhelming agony has spread; how do we bid you farewell?

65. कण - कण में मुस्काता है , मेरा प्यारा भगवान   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
साँस-साँस में होता उसकी, चेतनता का भान॥

मानव का अस्तित्व विलक्षण, उसने गढ़ा महान।
पाँचों तत्त्व बने हैं पावन, चेतन की पहचान॥
मानव को ही दिया स्वयं को, पा जाने का ज्ञान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

हर चेहरे के भोलेपन में, उसका ही प्रतिबिम्ब।
करुणा जागे फिर न उसे, पाने में तनिक विलम्ब॥
जो भी है चर-अचर सभी में, मेरे प्रभु का प्राण॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

हृदय गुहा में वही बसा है, बिल्कुल अपने पास।
जनहित के प्रत्येक कृत्य में, उसकी मधुर सुवास॥
झाँक रहा आँखों से बनकर, प्रेममयी पहचान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

छोटे-बड़े सभी घटकों में, उसका ही है अंश।
आदि समय से वर्तमान तक, चलता उसका वंश॥
रात्रि रूप विश्राम वही, कर्मठता रूप विहान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

सद्विचार कल्याण भावना, बनकर रहता पास।
उर का प्यार न बाँट सके तो, होता हृदय उदास॥
इस निःस्वार्थ प्यार से ही, जागते भक्ति और ज्ञान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

अधिक निकट से उसे देखने, की उमड़े जब चाह।
तब गह लेना दीन-दुःखी, पीड़ित के, घर की राह॥
संवेदन की गंगा बन फूटता, वही कविमान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
साँस-साँस में होता उसकी, चेतनता का भान॥

65. कण - कण में मुस्काता है , मेरा प्यारा भगवान — **English Meaning** / भावार्थ

In every particle smiles my beloved Lord.
In every breath is felt the awareness of His divine consciousness.
Human existence is extraordinary, crafted so grandly by Him.
The five elements have become sacred, the signature of the conscious spirit.
To humanity alone He granted the wisdom to realize Himself.
In every particle smiles my beloved Lord.
In every particle smiles my beloved Lord.

In the innocence of every face lies His reflection.
Once compassion awakens, there is not a moment's delay in attaining Him.
In all that is animate and inanimate, dwells the life-force of my Lord.
In every particle smiles my beloved Lord.
In every particle smiles my beloved Lord.

In the cave of the heart He dwells, so very close to us.
In every deed of public welfare lies His sweet fragrance.
He peers through the eyes, manifesting as a loving presence.
In every particle smiles my beloved Lord.
In every particle smiles my beloved Lord.

In all elements, great and small, resides His divine spark.
From the dawn of time to the present day, His lineage endures.
He is the rest in the form of night, and the dawn in the form of diligent action.
In every particle smiles my beloved Lord.
In every particle smiles my beloved Lord.

As noble thoughts and the spirit of benevolence, He remains close.
If we cannot share the love of our heart, the soul grows sorrowful.
Through this selfless love alone, devotion and wisdom awaken.
In every particle smiles my beloved Lord.
In every particle smiles my beloved Lord.

When the yearning surges to behold Him from even closer,
Then take the path that leads to the homes of the poor and the suffering.
Flowing as the Ganges of deep empathy, He bursts forth as the poetic soul.
In every particle smiles my beloved Lord.
In every particle smiles my beloved Lord.

In every particle smiles my beloved Lord.
In every breath is felt the awareness of His divine consciousness.

66. कण - कण में समाए तुम , तुम्हें हमने पहचाना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है।
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है॥

कर्तव्यों के व्यस्त पथों पर, भूले थे हम याद।
आ न सका था मुख पर मन के, भावों का अनुवाद॥
जाना है वहीं जिसकी, शरण में ठौर ठिकाना है॥
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है।
कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है॥

पूर्ण करेंगे सीख रहे जो, शेष तुम्हारे काम।
हर प्यासे मन को भर देंगे, ममता से अविराम॥
व्याकुल मानवता का, हमें दुःख दर्द मिटाना है॥
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है।
कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है॥

कारण है साकार तुम्हारा, नवयुग का अनुमान।
कोष तुम्हारे से देने हैं, इस जग को अनुदान॥
हर बंजर धरती पर, सजल सावन बरसाना है॥
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है।
कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है॥

पहले पीछे छुटे हुओं का, करना है आह्वान।
हमें अभी सजवाना जो भी, बिखरा है सामान॥
दायित्व निभाना है, सफर पर तब ही जाना है॥
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है।
कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है॥

66. कण - कण में समाए तुम , तुम्हें हमने पहचाना है — **English Meaning** / भावार्थ

Pervading every atom, You are the One we have recognized.
To meet You, O Lord! This mind has become ecstatic.

On the busy paths of duties, we had forgotten Your remembrance.
The translation of the heart's deep feelings could not reach our lips.
We must go to that very place, in whose refuge lies our true abode.
To meet You, O Lord! This mind has become ecstatic.
Pervading every atom, You are the One we have recognized.

We shall complete Your remaining works, which we are learning to do.
We will fill every thirsty soul with ceaseless, maternal love.
We must erase the pain and suffering of restless humanity.
To meet You, O Lord! This mind has become ecstatic.
Pervading every atom, You are the One we have recognized.

Your manifest form is the cause, the harbinger of the new era.
From Your divine treasury, we must bestow blessings upon this world.
Upon every barren land, we must rain the life-giving monsoon.
To meet You, O Lord! This mind has become ecstatic.
Pervading every atom, You are the One we have recognized.

First, we must call upon those who have been left behind.
We must now arrange all that lies scattered and in disarray.
We must fulfill our responsibilities, only then can we embark on the journey.
To meet You, O Lord! This mind has become ecstatic.
Pervading every atom, You are the One we have recognized.

67. कौन है किसका यहाँ पर , हैं सभी आते अकेले   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

कौन है किसका यहाँ पर, हैं सभी आते अकेले।
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥

मोह के बन्धन न पड़ तू, कौन अपना या पराया।
कर भला फिर भूल जग को, छोड़ दे सब मोह माया॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, ...

जग तुझे समझे या न समझे, कर नहीं परवाह इसकी।
चार दिन की वाह-वाही, कर नहीं तू चाह इसकी॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, ...

मस्त रह, बस मस्त रह, अपनी फकीरी शान में तू।
यश-अपयश निन्दा-प्रशंसा, रख नहीं कुछ ध्यान में तू॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, ...

सत्य प्रभु का ध्यान रख बस, छोड़ दे सारी निराशा।
क्या अकेला क्या दुकेला, साथ है जब अमर आशा॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, ...

दस कदम के साथियों का, योग और वियोग क्या रे।
भक्त तू भगवान का, तब व्यर्थ चिन्ता रोग क्या रे॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, ...

देख तू सत्येश मन्दिर, विश्व का कल्याण जिसमें।
विश्व की सेवा जहाँ है, और तेरा प्राण जिसमें॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, ...

उस तरफ ही बढ़ वही है, प्राण का आधार तेरा।
तू अकेला है यहाँ पर, है वहाँ संसार तेरा॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, ...

67. कौन है किसका यहाँ पर **,** हैं सभी आते अकेले — **English Meaning** / भावार्थ

Who belongs to whom in this world? All arrive here alone.
Who accompanies whom along the way? All depart from here alone.
Do not fall into the bonds of attachment; who is your own, and who is a stranger?
Do good and then forget the world; renounce all worldly illusion and attachment.
Who accompanies whom along the way? All depart from here alone.
Who belongs to whom in this world, ...

Whether the world understands you or not, do not care for its opinion.
This fleeting praise of just a few days, do not harbor a desire for it.
Who accompanies whom along the way? All depart from here alone.
Who belongs to whom in this world, ...

Remain ecstatic, just remain ecstatic, in the majestic glory of your ascetic detachment.
Fame or infamy, criticism or praise, pay no heed to any of these.
Who accompanies whom along the way? All depart from here alone.
Who belongs to whom in this world, …..

Just meditate on the True Lord, and cast away all despair.
What matters being alone or with another, when immortal hope is your companion?
Who accompanies whom along the way? All depart from here alone.
Who belongs to whom in this world, …..

For companions of just ten steps, why grieve over union and separation?
You are a devotee of the Divine, so why suffer from this futile disease of worry?
Who accompanies whom along the way? All depart from here alone.
Who belongs to whom in this world, …..

Behold the temple of the Lord of Truth, wherein lies the welfare of the universe.
Where the service of the world resides, and wherein lies your very life-breath.
Who accompanies whom along the way? All depart from here alone.
Who belongs to whom in this world, …..

Advance in that direction alone, for that is the very foundation of your life.
You are alone here in this world, but your true universe lies there.
Who accompanies whom along the way? All depart from here alone.
Who belongs to whom in this world, ...

68. किसी के काम जो आये , उसे इन्सान कहते हैं   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है, कभी दुःख है, इसी का नाम जीवन है॥
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं॥
किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

यह दुनियाँ एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रोकर॥
जो गिरकर फिर सँभल जाये, उसे इन्सान कहते हैं॥
किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

अगर गलती रुलाती है, तो राहें भी दिखाती है।
मनुज गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती है॥
जो कर ले ठीक गलती को, उसे इन्सान कहते हैं॥
किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

यों भरने को तो दुनियाँ में, पशु भी पेट भरते हैं।
लिये इन्सान का दिल जो, वो नर परमार्थ करते हैं॥
पथिक जो बाँट कर खाये, उसे इन्सान कहते हैं॥
किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

68. किसी के काम जो आये **,** उसे इन्सान कहते हैं — **English Meaning** **/** भावार्थ

One who comes to the aid of others, is called a true human.
One who embraces another's pain as their own, is called a true human.

Sometimes one is immensely wealthy, sometimes a human is poor.
Sometimes there is joy, sometimes sorrow, this alone is called life.
One who does not falter in times of adversity, is called a true human.

One who comes to the aid of others, is called a true human.
One who embraces another's pain as their own, is called a true human.

This world is a tangled maze, full of deception here and stumbles there.
Some live laughing through it all, while others live weeping.
One who falls and gathers themselves again, is called a true human.

One who comes to the aid of others, is called a true human.
One who embraces another's pain as their own, is called a true human.

If a mistake makes one weep, it also shows the path forward.
Man is but a vessel of errors, mistakes are bound to happen.
One who corrects their mistakes, is called a true human.

One who comes to the aid of others, is called a true human.
One who embraces another's pain as their own, is called a true human.

To merely fill their bellies, even animals manage in this world.
Those who carry a human heart, those souls perform selfless service.
The traveler who shares what they have before eating, is called a true human.

One who comes to the aid of others, is called a true human.
One who embraces another's pain as their own, is called a true human.

69. किये मंत्र जप माला फेरी , पूजन आठों याम का ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का।
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का॥

हर पूनो हर पर्व नहाये, गंगाजी के नीर में।
पर मन डूब न पाया बिल्कुल, किसी दुखी की पीर में॥
करते रहे सफर हम निष्ठुर, मन से चारों धाम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

ईश्वर ने जो दिया लगाया, केवल अपने वास्ते।
स्वार्थ-पूर्ति हो जिनसे हमने, चुने वही सब रास्ते॥
किया यत्न हर पल-छिन हमने, अपने सुख-आराम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

प्रगति देखकर औरों की हम, भरे द्वेष में लोभ में।
पूर्ण न हो पायी इच्छा तो, भरे तीव्र विक्षोभ में॥
ध्यान रहा हर समय हमें तो, अपने ही धन-धाम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

व्यर्थ ऐंठना अहंकार में भरकर झूठी शान से।
किन्तु माँगते रहना खुद के लिये सदा भगवान से॥
द्वार-द्वार दौड़ना व्यर्थ में यहाँ सुबह औ शाम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

जितना गड्ढा किया कि उतनी, मिट्टी डालो खेत में।
प्रायश्चित का सूत्र दिया यह, गुरुवर ने संकेत में॥
ध्यान न रह पाया यदि हमको, पापों के परिणाम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

69. किये मंत्र जप माला फेरी **,** पूजन आठों याम का — **English Meaning** / भावार्थ

We chanted mantras, turned the rosary beads, and worshipped through all eight watches of the day.
If our inner feelings remain narrow, then of what avail is this worship?

We bathed on every full moon and festival in the sacred waters of the Ganges,
Yet our hearts could not immerse themselves at all in the pain of the suffering.
With a cold heart, we kept making pilgrimages to the four sacred abodes.
If our inner feelings remain narrow, then of what avail is this worship?
We chanted mantras, turned the rosary beads, and worshipped through all eight watches of the day.

Whatever God bestowed upon us, we spent only on ourselves,
We chose only those paths that would serve our own self-interest.
Every single moment, we strived only for our own comfort and ease.
If our inner feelings remain narrow, then of what avail is this worship?
We chanted mantras, turned the rosary beads, and worshipped through all eight watches of the day.

Seeing the progress of others, we were filled with envy and greed,
When our desires remained unfulfilled, we were filled with intense agitation.
At all times, we remained mindful only of our own wealth and home.
If our inner feelings remain narrow, then of what avail is this worship?
We chanted mantras, turned the rosary beads, and worshipped through all eight watches of the day.

Strutting in vain, filled with ego and false pride,
Yet constantly begging from God only for our own sake.
Running from door to door in vain, morning and evening.
If our inner feelings remain narrow, then of what avail is this worship?
We chanted mantras, turned the rosary beads, and worshipped through all eight watches of the day.

"Fill the field with as much soil as the depth of the pit you dug,"
This formula of atonement was given by the revered Guru in a subtle hint.
If we failed to remain mindful of the consequences of our sins.
If our inner feelings remain narrow, then of what avail is this worship?
We chanted mantras, turned the rosary beads, and worshipped through all eight watches of the day.

If our inner feelings remain narrow, then of what avail is this worship?
We chanted mantras, turned the rosary beads, and worshipped through all eight watches of the day.

70. कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे , कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
तुम बुलाते हो उसे यदि भावना से, कौन जाने कब निमन्त्रण मान बैठे?

दर्द यदि उभरे कभी मन में तुम्हारे, खर्च मत करना बिना सोचे विचारे।
दर्द से रिश्ता सदा प्रभु का रहा है, नाम करुणा सिन्धु ही उसका रहा है॥
एक भी आँसू न कर बरबाद बन्दे, कौन जाने कब समन्दर माँग बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, ...

चाह हो तो राह बन जाती गगन में, चाह से उत्साह भरता मन बदन में।
चाह पूरी हो यही सब माँगते हैं, किन्तु उसका मर्म कब पहचानते हैं?
स्वर्ग भूतल पर गढ़े कैसे विधाता, नर्क में ही सुख मनुज यदि मान बैठे।
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, ...

रोज मानव कर रहा दुःख की शिकायत, दुष्टता की कर रहा फिर क्यों हिमायत?
दुःख हरेंगे प्रभु स्वयं अवतार लेकर, मानवी पुरुषार्थ को पर साथ लेकर॥
सूर्य उगकर भी भला क्या हित करेगा, आँख से पट्टी अगर हम बाँध बैठें।
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, ...

माँगने की रीति सी कुछ चल पड़ी है, कृपणता से प्रीति सी कुछ चली है।
क्यों नहीं परमार्थ पथ का मान रखते, क्यों नहीं इंसानियत की शान रखते?
है तुम्हें दाता विधाता ने बनाया, क्यों अरे खुद को भिखारी मान बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?

कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
तुम बुलाते हो उसे यदि भावना से, कौन जाने कब निमन्त्रण मान बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, ...
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, ...
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, ...

70. कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे **,** कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे — **English Meaning** / भावार्थ

Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, who knows when the Lord Himself might come and sit?
If you call Him with true devotion, who knows when He might accept your invitation?
If pain ever arises within your heart, do not spend it thoughtlessly.
The Lord has always had a relationship with pain, for His very name has been the Ocean of Compassion.
Do not waste even a single tear, O seeker, who knows when the Ocean might demand it?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, who knows when the Lord Himself might come and sit?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, ……

If there is a deep yearning, a path is made even in the heavens; yearning fills the mind and body with enthusiasm.
Everyone prays for their desires to be fulfilled, but when do they ever understand its true essence?
How can the Creator fashion heaven upon this earth, if humanity chooses to find its happiness in hell itself?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, who knows when the Lord Himself might come and sit?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, ...

Every day humanity complains of its suffering, yet why does it continue to advocate for wickedness?
The Lord Himself will incarnate to dispel your grief, but only by taking human endeavor along with Him.
What good will even the rising sun do, if we choose to keep our eyes blindfolded?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, who knows when the Lord Himself might come and sit?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, ……

A custom of begging seems to have set in, and a fondness for miserliness has taken hold.
Why do you not honor the path of supreme benevolence? Why do you not uphold the glory of humanity?
The Creator has made you a giver, why, oh why, have you resigned yourself to being a beggar?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, who knows when the Lord Himself might come and sit?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, who knows when the Lord Himself might come and sit?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, who knows when the Lord Himself might come and sit?
If you call Him with true devotion, who knows when He might accept your invitation?
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, ...
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, ...
Keep the chamber of your mind ever clean, O seeker, ...

71. क्यों रुके हो ? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

क्यों प्रगति पथ में तुम्हारे, हो रहा उत्पन्न भय?
श्रम बिना ही चाहते हो, क्या सफलता पर विजय?
सोचते हो क्या? गिने क्षण ही तुम्हारे पास हैं।
हाथ में आया हुआ क्यों, खो रहे हो अब समय?
बढ़ चलो निर्द्वन्द्व, कोरी कल्पनाएँ मत गढ़ो॥
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

कुछ नहीं बिगड़ा अभी, सब कुछ तुम्हारे साथ है।
भाग्य के निर्माण का, अवसर तुम्हारे हाथ है॥
मुश्किलों को हराकर जो, बढ़ गये निज लक्ष्य तक।
विजयी वही है विश्व में, ऊँचा उन्हीं का माथ है॥
मत रहो आश्रित, विजय अपनी भुजाओं से गढ़ो॥
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

आपदायें जो पड़ें यदि, राह में परवाह क्या?
ध्येय हो अपना अटल, फिर चोट क्या है, आह क्या?
बीच में ही टूट जाये, वह प्रबल उत्साह क्या?
धार से जो हार जाये, वह प्रबल मल्लाह क्या?
नीचे गिरो मत, हर घड़ी ऊँचे उठो, ऊँचे चढ़ो॥
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

रिक्त लौटा है न कोई, साधना के द्वार से।
सब समय सब कुछ मिला, सबको इसी भण्डार से॥
साम्राज्य सारी सिद्धियों का, है सुरक्षित सर्वदा।
फिर तुम्हीं वंचित रहो क्यों, दिव्य निज अधिकार से॥
छोड़ो अतीत, भविष्य का इतिहास अब आगे बढ़ो॥
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

71. क्यों रुके हो **?** साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो — **English Meaning** / भावार्थ

Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.
Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.

Why does fear arise upon your path of progress?
Do you seek victory and success without any toil?
What are you pondering? Only a few counted moments are yours.
Why do you now waste the precious time that has come into your hands?
March forward free of conflict, do not weave mere illusions.

Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.
Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.

Nothing is lost yet, everything is still in your favor.
The opportunity to forge your destiny lies in your own hands.
Those who conquered obstacles and pressed on toward their goal,
They alone are victorious in this world, their heads held high in honor.
Do not remain dependent, carve out victory with your own mighty arms.

Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.
Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.

If calamities fall upon your path, what does it matter?
If your goal is unwavering, then what is a wound, what is a sigh?
What kind of great enthusiasm is it that shatters midway?
What kind of mighty helmsman is he who is defeated by the current?
Do not fall, rise higher at every moment, ascend to the heights.

Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.
Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.

No one has ever returned empty-handed from the portal of spiritual practice.
At all times, everyone received everything from this very treasury.
The empire of all spiritual attainments is eternally secured.
Then why should you remain deprived of your own divine birthright?
Leave the past behind, write the history of the future, now march forward.

Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.
Why have you stopped? Move forward in the realm of spiritual practice.

72. महामिलन की आशा मुझको , शरण तुम्हारे लाई है   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

जब से हम बिछुड़े हैं तुम से, दर्शन की चिर आस है।
रोती आँखें, व्याकुल अन्तर, तेरे बिना उदास है॥
अविरल अश्रुधार ने मेरी, प्यास और भड़काई है। ...प्यास और भड़काई है।
अविरल अश्रुधार ने मेरी, प्यास और भड़काई है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

माटी के ये खेल खिलौने, अब न हमें बहलाएँगे।
प्राण तड़पते सदा रहेंगे, जब तक तुम्हें न पायेंगे॥
अमर तुम्हीं से प्यार किया है, नश्वरता ठुकराई है। ..नश्वरता ठुकराई है।
अमर तुम्हीं से प्यार किया है, नश्वरता ठुकराई है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

आँखें अर्घ्य चढ़ाती निशि दिन, हृदय फटा ही जाता है।
दर्शन के चिर प्यासे हम तो, नहीं और कुछ भाता है॥
विकल वेदना मेरे उर में, बनकर बदली छाई है। ...बनकर बदली छाई है।
विकल वेदना मेरे उर में, बनकर बदली छाई है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

अँधियारे को ज्योतित करती, कृपा किरण की आस है।
स्नेह सिंधु तेरी करुणा का, हमको दृढ़ विश्वास है॥
अन्तर की यह आशा ही तो, हमें यहाँ तक लायी है। ...हमें यहाँ तक लायी है।
अन्तर की यह आशा ही तो, हमें यहाँ तक लायी है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

नश्वरता को प्रभु तेरा ही, फिर शाश्वत आधार मिले।
डूब रही जीवन नौका को, तेरी दृढ़ पतवार मिले॥
युगों-युगों से यह अभिलाषा, हमने प्रभु जगायी है। ...हमने प्रभु जगायी है।
युगों-युगों से यह अभिलाषा, हमने प्रभु जगायी है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

72. महामिलन की आशा मुझको **,** शरण तुम्हारे लाई है **— English Meaning /** भावार्थ

> *The hope of the supreme union has brought me to Your sanctuary.*
> *It has awakened such a thirst, in which even pain is sweet.*
> *Ever since we parted from You, there is an eternal longing for Your sight.*
> *Weeping eyes, a restless soul, are desolate without You.*
> *The ceaseless stream of my tears has further inflamed my thirst. ...has further inflamed my thirst.*
> *The ceaseless stream of my tears has further inflamed my thirst.*
> *The hope of the supreme union has brought me to Your sanctuary.*
> *It has awakened such a thirst, in which even pain is sweet.*
> *These playthings of clay will no longer amuse me.*
> *My life-breath will forever writhe in agony, until I attain You.*
> *I have loved You, the Immortal One, and rejected all transience. ...rejected all transience.*
> *I have loved You, the Immortal One, and rejected all transience.*
> *The hope of the supreme union has brought me to Your sanctuary.*
> *It has awakened such a thirst, in which even pain is sweet.*
> *My eyes offer the oblation of tears night and day, my heart is tearing apart.*
> *Eternally thirsty for Your divine vision, nothing else pleases me.*
> *The restless agony in my heart has gathered like a dark cloud. ...gathered like a dark cloud.*
> *The restless agony in my heart has gathered like a dark cloud.*
> *The hope of the supreme union has brought me to Your sanctuary.*
> *It has awakened such a thirst, in which even pain is sweet.*
> *Illuminating the darkness, there is hope for the ray of Your grace.*
> *In the ocean of love that is Your compassion, I have unwavering faith.*
> *It is this hope of the inner soul that has brought us this far. ...has brought us this far.*
> *It is this hope of the inner soul that has brought us this far.*
> *The hope of the supreme union has brought me to Your sanctuary.*
> *It has awakened such a thirst, in which even pain is sweet.*
> *May this transient existence, O Lord, find Your eternal support once more.*
> *May my sinking boat of life find Your strong, guiding oar.*
> *For ages upon ages, O Lord, we have awakened this deep desire. ...we have awakened this deep desire.*
> *For ages upon ages, O Lord, we have awakened this deep desire.*
> *The hope of the supreme union has brought me to Your sanctuary.*
> *It has awakened such a thirst, in which even pain is sweet.*

73. मैं ढूँढ़ता तुझे था , जब कुञ्ज और वन में   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में॥

तू आह बन किसी की, मुझको पुकारता था।
मैं था तुझे बुलाता, संगीत में भजन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

मेरे लिए खड़ा था, दुःखियों के द्वार पर तू।
मैं बाट जोहता था, तेरी किसी चमन में॥
बनकर किसी के आँसू, मेरे लिए बहा तू।
आँखें लगीं थीं मेरी, तब अपने सुख सदन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

बाजे बजा-बजा के, मैं था तुझे रिझाता।
तब तू लगा हुआ था, पतितों के संगठन में॥
मैं था विरक्त तुझसे, जग की अनित्यता पर।
उत्थान भर रहा था, तब तू किसी पतन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

बेबस गिरे हुओं के, तू बीच में खड़ा है।
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरण में॥
तूने दिये अनेकों, अवसर न मिल सका मैं।
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

हरिश्चन्द्र और ध्रुव ने, कुछ और ही बताया।
मैं तो समझ रहा था, तेरा प्रताप धन में॥
मैं सोचता तुझे था, रावण की लालसा में।
पर था दधीचि के तू, परमार्थ रूप तन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में॥

73. मैं ढूँढ़ता तुझे था **,** जब कुञ्ज और वन में **— English Meaning** / भावार्थ

I was searching for You in the groves and forests,
While You were seeking me in the abode of the poor.
Becoming someone's sigh, You were calling out to me,
While I was calling You through music and hymns.
I was searching for You in the groves and forests,
I was searching for You in the groves and forests.

For my sake, You stood at the door of the suffering,
While I was awaiting You in some garden.
Flowing as someone's tears, You wept for me,
While my eyes were fixed on my own abode of pleasure.
I was searching for You in the groves and forests,
I was searching for You in the groves and forests.

Playing musical instruments, I was trying to please You,
While You were busy uplifting and uniting the fallen.
I was detached from You, pondering the world's transience,
While You were breathing elevation into someone's downfall.
I was searching for You in the groves and forests,
I was searching for You in the groves and forests.

You stand in the midst of the helpless and the fallen,
While I was gazing at heaven; how could I bow at Your feet?
You gave me countless opportunities, yet I could not meet You,
You were absorbed in action, while I was busy in mere words.
I was searching for You in the groves and forests,
I was searching for You in the groves and forests.

Harishchandra and Dhruva revealed something else entirely,
While I believed Your glory lay in wealth.
I was looking for You in Ravana's ambition,
But You resided in Dadhichi's benevolent body of supreme sacrifice.
I was searching for You in the groves and forests,
I was searching for You in the groves and forests.

I was searching for You in the groves and forests,
While You were seeking me in the abode of the poor.

74. मैंने तेरी गीता गाई   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

मैंने तेरी गीता गाई। मैंने तेरी गीता गाई॥
टूटी-फूटी भाषा में भर, जग के कानों तक पहुँचाई।
मैंने तेरी गीता गाई॥

तेरे द्वार लगाया डेरा, जीवन सफल हुआ सब मेरा।
तेरे चरणों की रज लेकर, अंग-अंग में भस्म रमाई॥
मैंने तेरी गीता गाई॥

अश्रु बहाये चरणों पर जब, सत्यामृत की धार बही तब।
अपने छोटे से चम्मच से, प्यासे जग की प्यास बुझाई॥
मैंने तेरी गीता गाई॥

अल्प शक्ति धारी मैं प्राणी, बच्चे के समान है वाणी।
गागर में सागर भरने की, पर मैंने हिम्मत दिखलाई॥
मैंने तेरी गीता गाई॥

तेरी करुणा से जो पाया, वह इस अंजलि में ले आया।
गंगा से गंगाजल लेकर, गंगा को जलधार चढ़ाई॥
मैंने तेरी गीता गाई॥

74. मैंने तेरी गीता गाई — **English Meaning** / भावार्थ

I have sung Your Gita. I have sung Your Gita.
Filling it with my broken, faltering words, I delivered it to the ears of the world.
I have sung Your Gita.

I set up my camp at Your doorstep, and my entire life became fulfilled.
Taking the dust of Your lotus feet, I smeared it like sacred ash over every limb of my body.
I have sung Your Gita.

When I shed tears upon Your feet, a stream of the nectar of truth flowed forth.
With my tiny spoon, I quenched the thirst of a parched world.
I have sung Your Gita.

I am a creature of meager strength, my speech is like that of a child.
Yet, I showed the courage to contain the vast ocean within a tiny clay pot.
I have sung Your Gita.

Whatever I received through Your grace, I have brought in these cupped hands.
Taking the sacred water from the Ganges, I offered that very stream back to the Ganges.
I have sung Your Gita.

75. मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ , पहचान सको तो पहचानो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं सबका परम हितैषी हूँ, चाहे मानो या न मानो॥

मेरे चिन्तन से वेद बने, शुभ धर्म-सूत्र निज-कर्म बने।
मैंने संकल्प किये जग हित, युग परिवर्तन के मर्म बने॥
संकेतों को समझो मेरे, युग धर्म सुनिश्चित पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

जग हित युग सिंधु मथा मैंने, शुभ रत्न अनेकों प्रकट हुए।
अमृत बाँटा सारे जग को, मैं नीलकंठ विषपान किए॥
मेरी छवि है तप की गरिमा, परमार्थ रूप मुझको जानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

मुझको अरूप तुम कहो भले, मैं हर निष्ठा में चमक रहा।
मैं अगम शक्ति का स्रोत बना, सबकी श्रद्धा में महक रहा॥
मैं हूँ पावन प्रज्ञा-प्रवाह, मुझको विवेक का स्वर मानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

मैं महाकाल का रूप धरे, अब बदल रहा हूँ काल चक्र।
होगा भीषणतम शिव-ताण्डव, यदि होगी मेरी दृष्टि वक्र॥
अच्छा हो मेरे इंगित पर, तुम कर्म-यज्ञ निश्चित ठानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

तुम कहो बूँद या सिंधु मुझे, मैं तो पावन निर्मल जल हूँ।
तुम भले मनुज या देव कहो, मैं तो ऋषि-सत्ता का बल हूँ॥
मैं हूँ सविता का तेज प्रखर, सत्ता विराट मुझको जानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं सबका परम हितैषी हूँ, चाहे मानो या न मानो।
मैं सबका परम हितैषी हूँ, चाहे मानो या न मानो॥

मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

75. मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ **,** पहचान सको तो पहचानो — **English Meaning** / भावार्थ

I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I am the ultimate well-wisher of all, whether you believe it or not.
From My contemplation the Vedas arose, and auspicious codes of righteousness and duty were formed.
I made resolves for the welfare of the world, which became the essence of the transition of eras.
Understand My subtle signs, and recognize with certainty the duty of this age.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you.

For the world's welfare, I churned the ocean of the era, and many auspicious gems emerged.
I distributed the nectar of immortality to the entire world, while I, the blue-throated one, drank the poison.
My image is the dignity of penance; know Me as the embodiment of supreme altruism.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you.

Though you may call Me formless, I shine in every devotion.
I have become the source of unfathomable power, diffusing fragrance in everyone's faith.
I am the sacred flow of divine wisdom; recognize Me as the voice of conscience.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you.

Assuming the form of Mahakal, I am now changing the wheel of time.
The most fierce Shiva-Tandava shall occur, if My gaze turns askance.
It would be best if, at My gesture, you resolutely undertake the sacrifice of righteous action.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you.

Whether you call Me a drop or the ocean, I am the pure, pristine water.
Whether you call Me human or divine, I am the strength of the sage-consciousness.
I am the brilliant radiance of Savitur; know Me as the cosmic, infinite existence.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I am the ultimate well-wisher of all, whether you believe it or not.
I am the ultimate well-wisher of all, whether you believe it or not.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you, recognize Me if you can.
I dwell forever with you.

76. मन मैला ही रहा अगर तो उजला तन बेकार है   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

शक्ति और सौन्दर्य प्रदर्शन, में भी कोई शान है।
जिसने थामी बाँह दुःखी की, धन्य वही इन्सान है॥
पक्ष न्याय का लिया कि जिसने, वही भुजा बलवान है।
अपने हित जो लगा रहा वह, धन-वैभव बेकार है॥
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

रूप देखते रहे मुग्ध बन, तुम दर्पण के सामने।
वृद्धावस्था आने वाली है, कब सोचा आपने॥
याद न आया कभी तुम्हें जो, काम दिया था भगवान ने।
दिखा सका जो मैल न मन का, वह दर्पण बेकार है॥
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

व्यर्थ परिश्रम किया जुटाया, धन-वैभव बेकार में।
जन-मंगल के लिये न कोई, अंश लगा संसार में॥
शत्रु बनाया है अपनों को, धन के इस अम्बार ने।
यह असीम सम्पदा और यह, सुख-साधन बेकार है॥
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

यह सारी सम्पत्ति दिखावा, कहीं न जाना साथ में।
जिसे दिन जायेंगे उस दिन कुछ, नहीं रहेगा हाथ में॥
केवल पुण्य चमकते होंगे, कल की काली रात में।
जिसके लिये गँवाया जीवन, धन-कंचन बेकार है॥
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥
वह जीवन बेकार है, वह जीवन बेकार है, वह जीवन बेकार है॥

76. मन मैला ही रहा अगर तो उजला तन बेकार है — **English Meaning** / भावार्थ

If the mind remains soiled, then a radiant body is of no use.
The life that is not dedicated to the welfare of humanity, that life is in vain.

Is there any true glory in the display of power and beauty?
Blessed is that human being who holds the hand of the suffering.
The arm that stood on the side of justice is the one that is truly strong.
The wealth and grandeur spent only on oneself is utterly useless.
The life that is not dedicated to the welfare of humanity, that life is in vain.

If the mind remains soiled, then a radiant body is of no use.
The life that is not dedicated to the welfare of humanity, that life is in vain.

You kept gazing at your beauty, captivated, before the mirror.
When did you ever ponder that old age is fast approaching?
You never remembered the sacred task assigned to you by God.
The mirror that could not reveal the impurity of the mind, that mirror is useless.
The life that is not dedicated to the welfare of humanity, that life is in vain.

If the mind remains soiled, then a radiant body is of no use.
The life that is not dedicated to the welfare of humanity, that life is in vain.

In vain you labored to amass wealth and grandeur to no purpose.
Not a single portion of it was offered for the well-being of the world.
This mountain of wealth has turned your own loved ones into enemies.
This boundless fortune and these luxuries of life are utterly useless.
The life that is not dedicated to the welfare of humanity, that life is in vain.

If the mind remains soiled, then a radiant body is of no use.
The life that is not dedicated to the welfare of humanity, that life is in vain.

All this wealth is mere pretense, it will accompany you nowhere.
On the day you depart, nothing at all will remain in your hands.
Only your virtuous deeds will shine in the dark night of tomorrow.
The gold and riches for which you squandered your life are useless.
The life that is not dedicated to the welfare of humanity, that life is in vain.

If the mind remains soiled, then a radiant body is of no use.
The life that is not dedicated to the welfare of humanity, that life is in vain.
That life is in vain, that life is in vain, that life is in vain.

77. मत अंगार बिखेरो , वसुधा आज माँगती पानी ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

मत अंगार बिखेरो, मत अंगार बिखेरो।
मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी॥
मत अंगार बिखेरो॥

अभी-अभी पागलपन ने थी, गाई मृत्यु-प्रभाती।
जलती हुई दिशाओं की, शीतल न हो सकी छाती॥
मानवता को अब न अधिक तुम, शोणित से नहलाओ।
पशुता के मरघट में अपने, गौरव को न जलाओ॥
क्रौंच-रुदन को सुनकर सहसा, कवि बन जाने वाली।
सुन न रहे क्यों 'तमसा-तट' से, दलित विश्व की वाणी॥
वसुधा आज माँगती पानी, वसुधा आज माँगती पानी॥

मत अंगार बिखेरो, मत अंगार बिखेरो।
मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी॥
मत अंगार बिखेरो॥

भौतिकता के मद में मत दो, निज संस्कृति को पीड़ा।
मनु की सन्तानें के शोणित, से न करो अब क्रीड़ा॥
रक्तपान से भला समझ लो, अपने आँसू पीना।
मानव बनकर सफल विश्व में, दो दिन का भी जीना॥
बीज रूप में सृष्टि बचा कर, प्रलय काल से खेले।
आज उसी के ध्वंस हेतु क्यों, तुमने भृकुटी तानी॥
वसुधा आज माँगती पानी, वसुधा आज माँगती पानी॥

मत अंगार बिखेरो, मत अंगार बिखेरो।
मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी॥
मत अंगार बिखेरो॥

'गौतम' जागो अखिल विश्व में, छाया घोर अँधेरा।
'महावीर' चल पड़ो तपस्या, को हिंसा ने घेरा॥
थकी समर से वसुधा रोती, इसका भार सम्हालो।
कालकूट लख काँप उठेगी, मुख में अमृत डालो॥
भौतिकता के आवेशों में, कितने बापू खोये।
उन्हें मार देने की करता, रहा विश्व नादानी॥
वसुधा आज माँगती पानी, वसुधा आज माँगती पानी॥

मत अंगार बिखेरो, मत अंगार बिखेरो।
मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी॥
मत अंगार बिखेरो॥

77. मत अंगार बिखेरो **,** वसुधा आज माँगती पानी — **English Meaning /** भावार्थ

Do not scatter burning embers, do not scatter burning embers.
Do not scatter burning embers, the earth today pleads for water.
Do not scatter burning embers.

Just recently, madness had sung the morning-hymn of death.
The burning breast of the horizons could not yet be cooled.
Bathe humanity no longer in the torrents of blood.
Do not cremate your own glory in the graveyard of animality.
O soul, that once turned into a poet upon hearing the wail of the Krauncha bird,
Why do you not hear from the 'banks of Tamasa' the voice of the oppressed world?
The earth today pleads for water, the earth today pleads for water.

Do not scatter burning embers, do not scatter burning embers.
Do not scatter burning embers, the earth today pleads for water.
Do not scatter burning embers.

In the intoxication of materialism, do not inflict pain upon your own culture.
Do not play sports now with the blood of the children of Manu.
Deem it far better to drink your own tears than to drink blood.
To live even for two days in this world as a true human is a life fulfilled.
Having saved creation in the form of a seed, you played with the cosmic deluge,
Why then have you furrowed your brow today for its utter destruction?
The earth today pleads for water, the earth today pleads for water.

Do not scatter burning embers, do not scatter burning embers.
Do not scatter burning embers, the earth today pleads for water.
Do not scatter burning embers.

Awaken, 'Gautama', for a profound darkness has enveloped the entire world.
Set forth, 'Mahavira', for violence has besieged the path of penance.
Weary of war, the earth weeps; come, sustain her heavy burden.
Beholding the deadly poison she will tremble; pour nectar into her mouth.
In the frenzies of materialism, how many 'Bapus' have we lost?
The world kept committing the foolishness of putting them to death.
The earth today pleads for water, the earth today pleads for water.

Do not scatter burning embers, do not scatter burning embers.
Do not scatter burning embers, the earth today pleads for water.
Do not scatter burning embers.

78. मेरा परिचय क्या पूछ रहे , रचयिता - रक्षक - पोषक हूँ   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ।
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥

मैं एक, किन्तु संकल्प किया तो, एकोऽहम् बहुस्याम हुआ,
मैंने विस्तार किया अपना, ब्रह्माण्ड उसी का नाम हुआ।
ये चाँद और सूरज मेरी, आँखों में उगने वाले हैं,
है एक आँख में प्यार और, दूजी में प्रखर उजाले हैं॥
मनचाही सृष्टि रचाने की, क्षमता वाला मैं कौशिक हूँ॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

जिसमें मणि-मुक्ता छिपे हुए, वह सागर की गहराई हूँ,
जिसकी करुणा सुरसरि बनती, उस हिमनग की ऊँचाई हूँ।
मेरा संगीत छिड़ा करता, कल-कल करते इन झरनों में,
मैं सौरभ बिखराता रहता, इन रंग-बिरंगे सुमनों में॥
यह प्रकृति छटा मेरा ही है, इतना सुन्दर मनमोहक॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

मेरे चिन्तन की धारा से, ऋषियों का प्रादुर्भाव हुआ,
मैंने जब ऋचा उचारी तो, सुर-संस्कृति का फैलाव हुआ।
मैं याज्ञवल्क्य मैं ही वशिष्ठ, मैं परशुराम भागीरथ हूँ,
जो कभी अधूरा रहा नहीं, मैं ऐसा प्रबल मनोरथ हूँ॥
प्रण पूरा करने महाकाल हूँ, काल चक्र अवरोधक हूँ॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

जनहित में विष पीने वाली, विषपायी मेरी क्षमता है,
जनपीड़ा से विगलित होती, ऐसी करुणा है ममता है।
मैंने साधारण वानर को, बजरंग बनाकर खड़ा किया,
मेरी गीता ने अर्जुन को, अन्याय मिटाने खड़ा दिया॥
विकृतियों से लोहा लेने, सुर-संस्कृति का संयोजक हूँ॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ॠचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

मैंने संकल्प किया है फिर, मानव को देव बनाऊँगा,
फिर प्यार और सहकार जगा, धरती पर स्वर्ग बनाऊँगा।
लाऊँगा मैं उज्ज्वल भविष्य, इसका साक्षी यह दिनकर है,
मेरे संग सविता के साधक, गायत्री वाला परिकर है॥
मैं युग-दृष्टा, युग-सृष्टा हूँ, युग परिवर्तन उद्घोषक हूँ॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ॠचा उद्घोषक हूँ।
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ॠचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ।
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

78. मेरा परिचय क्या पूछ रहे **,** रचयिता **-** रक्षक **-** पोषक हूँ — **English Meaning** / भावार्थ

Why do you ask for my identity? I am the Creator, Protector, and Sustainer.
I am the Void, yet infinitely vast; I am the proclaimer of the primordial hymns.
I am One, but when I willed, "I am One, let me become many" came to be,
I expanded my own self, and the universe became its name.
This moon and sun are those that rise within my eyes,
In one eye is love, and in the other is brilliant, intense light.
I am Kaushik, possessing the power to manifest creation at my will.
I am the Void, yet infinitely vast; I am the proclaimer of the primordial hymns.
Why do you ask for my identity? I am the Creator, Protector, and Sustainer.

I am the depth of the ocean, wherein gems and pearls lie hidden,
I am the height of the snow-capped mountain, whose compassion flows as the divine Ganges.
My music resonates in the gentle murmur of these cascading streams,
I continuously scatter fragrance through these multi-colored blossoms.
This splendor of nature is mine alone, so beautiful and enchanting.
I am the Void, yet infinitely vast; I am the proclaimer of the primordial hymns.
Why do you ask for my identity? I am the Creator, Protector, and Sustainer.

From the stream of my contemplation, the sages manifested,
When I chanted the sacred hymns, the divine culture spread far and wide.
I am Yajnavalkya, I am Vashistha, I am Parashurama and Bhagiratha,
I am that powerful, unyielding resolve which has never remained unfulfilled.
To fulfill my vow, I am Mahakala, the one who halts the wheel of time.
I am the Void, yet infinitely vast; I am the proclaimer of the primordial hymns.
Why do you ask for my identity? I am the Creator, Protector, and Sustainer.

Mine is the poison-drinking capacity that drinks venom for the welfare of humanity,
Such is my compassion and motherly love, which melts at the suffering of the people.
I raised an ordinary monkey and made him stand tall as Bajrang,
My Gita made Arjuna stand up to eradicate injustice.
To battle against corruptions, I am the unifier of the divine culture.
I am the Void, yet infinitely vast; I am the proclaimer of the primordial hymns.
Why do you ask for my identity? I am the Creator, Protector, and Sustainer.

I have resolved once again to transform humans into divine beings,
Awakening love and cooperation once more, I will build heaven on earth.
I shall usher in a bright future, to which this sun is the witness,
With me are the seekers of Savitur, the spiritual family of Gayatri.
I am the visionary of the era, the creator of the era, the herald of the changing epoch.
I am the Void, yet infinitely vast; I am the proclaimer of the primordial hymns.
I am the Void, yet infinitely vast; I am the proclaimer of the primordial hymns.
Why do you ask for my identity? I am the Creator, Protector, and Sustainer.
Why do you ask for my identity? I am the Creator, Protector, and Sustainer.

79. मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

कितने युग बीते इस पंथी को राह में।
फिर भी आई न कमी अपनी इस चाह में॥
अब भी तो महामिलन की निश्चित आस है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

यह डोर थमी है हाथ उसी आराध्य के।
सब कार्य साध्य कर दिये कि जो दुःसाध्य थे॥
आत्मा का पंथी कभी न हुआ निराश है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

मेरा भगवन् त्रिकालदर्शी और युगदृष्टा।
वह ही मेरा अतीत स्वर्णिम भविष्य सृष्टा।
वह ही तो मेरे वर्तमान का हास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

वह बसता है तन में मन में और आत्मा में।
जो कुछ उसमें वह नहीं किसी परमात्मा में।
वह ही तो मेरे जीवन का पूर्ण विकास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

साँसों में जीवित है बन्दी है प्राण में।
बनकर सुवास छाया रहता है घ्राण में॥
तन में चेतनता मन में मधुमय रास है॥
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

सुख में वह हँसता साथ मेरे दुःख में रोता।
नित प्रति वह उठता साथ-साथ ही है सोता॥
ममता का हास करुणिमा का निःश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

है अमिट चाह पूरी भी हो ही जायेगी।
यह आत्मा अन्तिम गति उसमें ही पायेगी॥
मेरी सरिता को सागर का विश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

बस थोड़ा सा जीवन ही और बिताना है।
इस कर्मक्षेत्र में निज कर्तव्य निभाना है॥
प्रतिक्षण, प्रतियुग, प्रतिजन्म यही उल्लास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥
मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

79. मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है — **English Meaning** / भावार्थ

This is the faith of my eternal soul.
My Adored One is close to me at every single moment.

Countless eras have passed for this traveler on the path,
Yet there has been no decline in this yearning of mine.
Even now, there remains the certain hope of the ultimate union.
My Adored One is close to me at every single moment.

This thread is held in the hands of that very Adored Lord,
Who made possible all those tasks that were once impossible.
The traveler of the soul has never known despair,
My Adored One is close to me at every single moment.

My Lord is the Knower of the three times and the Visionary of the eras,
He alone is my past and the creator of my golden future.
He alone is the joy and laughter of my present,
My Adored One is close to me at every single moment.

He dwells in my body, in my mind, and in my soul,
Whatever lies within Him is not found in any other supreme deity.
He alone is the complete evolution and fulfillment of my life,
My Adored One is close to me at every single moment.

He lives in my breaths, He is held captive in my life-force,
Pervading my senses as a sweet, divine fragrance.
He is the consciousness in my body, the sweet, ecstatic dance in my mind,
My Adored One is close to me at every single moment.

He laughs with me in my joy, and weeps with me in my sorrow,
Every single day He awakens with me, and together with me He sleeps.
He is the smile of maternal love, the sigh of deep compassion,
My Adored One is close to me at every single moment.

This is an indelible yearning, and it will surely be fulfilled,
This soul will find its ultimate destination in Him alone.
My river possesses the absolute faith of merging into the ocean,
My Adored One is close to me at every single moment.

Just a little more of this life remains to be spent,
In this field of action, I must fulfill my designated duty.
Every moment, every era, every birth, this same ecstasy abides,
My Adored One is close to me at every single moment.

This is the faith of my eternal soul.
My Adored One is close to me at every single moment.

This is the faith of my eternal soul.
My Adored One is close to me at every single moment.

80. मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

प्रभो अपनी शरण में ले लो नाथ, मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ।
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

जीवन भर हम एक बने हैं, नहीं कभी भी अलग हुए हैं।
वचन निभाओ मेरे स्वामी, पद वन्दन में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

साध्य बनो तुम इस साधन में, प्राण बनो तुम इस तन-मन में।
बंशी है यह जीवन मेरा, स्वर गुँजन में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

तन-मन है तुम्हें समर्पित, करूँ प्राण मैं किसको अर्पित।
यज्ञ रूप हो पावन ईश्वर, पूर्णाहुति में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

सागर हो तुम दिव्य ज्ञान के, वाणी हो तुम ईश गान के।
मेघ रूप मैं बन जाऊँगी, अब सागर में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

करुणामय है रूप तुम्हारा, करुणामय सम्बन्ध हमारा।
करुणा मेरी तभी जगेगी, जब सुमिरन में ले लो नाथ॥

80. मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ — **English Meaning** / भावार्थ

O Lord, take me into Your refuge, O Master, take me into Your refuge.
Filled with hope, I sit waiting; take me into the shelter of Your feet, O Master.
Take me into Your refuge, O Master.

Throughout life, we have been one; we have never been separated.
Fulfill Your promise, my Lord; accept me in the worship of Your feet, O Master.
Filled with hope, I sit waiting; take me into the shelter of Your feet, O Master.
Take me into Your refuge, O Master.

Become the ultimate goal of this spiritual practice, become the life-breath in this body and mind.
This life of mine is a flute; take me into the resonance of Your melody, O Master.
Filled with hope, I sit waiting; take me into the shelter of Your feet, O Master.
Take me into Your refuge, O Master.

Body and mind are surrendered to You; to whom else shall I offer my life-breath?
You are the embodiment of the sacred sacrifice, O Holy Lord; accept me as the final offering, O Master.
Filled with hope, I sit waiting; take me into the shelter of Your feet, O Master.
Take me into Your refuge, O Master.

You are the ocean of divine wisdom; You are the voice of the divine song.
I shall become like a cloud; now merge me into the ocean, O Master.
Filled with hope, I sit waiting; take me into the shelter of Your feet, O Master.
Take me into Your refuge, O Master.

Filled with hope, I sit waiting; take me into the shelter of Your feet, O Master.
Take me into Your refuge, O Master.
Compassionate is Your form; compassionate is our relationship.
My own compassion will awaken only when You take me into Your remembrance, O Master.

81. मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन , तुम्हारी शरण की मुझे कामना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है।
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

तुम्हारे बनाए जगत के लिए मैं, रहूँ हर समय मेरे भगवन समर्पित।
रुधिर की हरेक बूँद हर अंग मेरा, हरेक श्वाँस हर एक धड़कन समर्पित॥
किसी के न जो आ सके काम ऐसे, किसी भी न क्षण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

मुझे भार सौंपा गया जो यहाँ पर, उसे साहसी बन उठाती रहूँ मैं।
निरन्तर उसे ले स्वयं बढ़ सकूँ मैं, सभी को सुपथ पर बढ़ाती रहूँ मैं॥
सरल प्यार सबको सदा दे सकूँ मैं, न अब आवरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

जहाँ स्वार्थ का सूखता हो मरुस्थल, वहीं भाव-सम्वेदनाएँ जगाऊँ।
जहाँ की हवा में घुटन भर गयी हो, वहीं प्राण भरती हवाएँ बहाऊँ॥
जहाँ स्वस्थ मन स्वस्थ तन जी सकें सब, सुवातावरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

करूँ काम ऐसे कि जिनसे जगत में, बढ़े आस्थाएँ सुविस्वास फैले।
कपट, दम्भ, पाखण्ड की हो न छाया, अधर पर मधुर हास-उल्लास फैले॥
उचित मान हो पर ना अभिमान होए, विमल आचरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

डगर हो न वंचित खुली रोशनी से, न कोई गली भी अँधेरी यहाँ हो
किसी का न आँगन उदासी भरा हो, कहीं पर कलुष की न ढेरी यहाँ हो
सभी ओर हों स्वच्छता औ सुगन्धें, सुनहरी किरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥
तुम्हारी शरण की मुझे कामना है, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

81. मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन **,** तुम्हारी शरण की मुझे कामना है **— English Meaning /** भावार्थ

I desire nothing else at all, O Lord, I only yearn for the refuge of Your shelter.
I desire nothing else at all, O Lord, I only yearn for the refuge of Your shelter.

For this world created by You, may I remain dedicated at all times, my Lord.
Every drop of my blood, every limb of mine, every breath and every heartbeat is surrendered.
A moment that cannot be of service to anyone—I have no desire for any such moment.
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

Whatever responsibility has been entrusted to me here, may I continue to bear it with courage.
Carrying it, may I constantly move forward myself, and keep guiding everyone on the righteous path.
May I always give simple, pure love to all; I no longer desire any veil or pretense.
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

Where the dry desert of selfishness spreads, there may I awaken deep feelings and empathy.
Where the air has become filled with suffocation, there may I blow life-giving breezes.
Where everyone can live with a healthy mind and a healthy body—I yearn for such a pure environment.
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

May I perform such deeds by which faith increases and deep trust spreads throughout the world.
May there be no shadow of deceit, pride, or hypocrisy; may sweet laughter and joy spread upon every lip.
May there be rightful honor but never any arrogance; I yearn for pure and stainless conduct.
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

May no path be deprived of open light, nor any alleyway remain dark here.
May no one's courtyard be filled with sadness, nor any pile of impurity or malice exist anywhere.
May there be cleanliness and fragrance on all sides; I yearn for the golden ray of light.
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥
तुम्हारी शरण की मुझे कामना है, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

82. ना चाहें वरदान कोई हम , न चाहें अनुदान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान।
भटक न जायें सत्पथ से प्रभु, दो विवेक वह भान॥

नहीं चाहते धन या दौलत, ऋद्धि-सिद्धि हम भारी भी।
ठुकराते हैं अखिल विश्व की, विभूतियाँ भी सारी ही॥
त्रास कर सकें पर पीड़ा का, दो वह मधुरिम तान॥
ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान॥

क्षुद्र आज सब लगती हमको, अभिलाषाएँ ये संसारी।
दीन दुखी की पूजा ही बस, चाह रहा है आज पुजारी॥
पीड़ित जग की पीड़ा बाँटें, दो इतना सा ज्ञान॥
ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान॥

संघर्षों से डरें नहीं हम, कभी नहीं धीरज त्यागें।
कष्ट भले कितने ही पायें, शूल बिछें हों पथ में आगे॥
कभी न विचलित हों दुख में भी, दो ऐसी मुस्कान॥
ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान।
भटक न जायें सत्पथ से प्रभु, दो विवेक वह भान॥

ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान।
भटक न जायें सत्पथ से प्रभु, दो विवेक वह भान॥

82. ना चाहें वरदान कोई हम **,** न चाहें अनुदान — **English Meaning** **/** भावार्थ

> *We desire no boons, nor do we seek any favors.*
> *Lest we stray from the path of truth, O Lord, grant us that wisdom and awareness.*
> *We desire neither wealth nor riches, nor even the grandest spiritual powers and prosperity.*
> *We renounce all the glories and splendors of the entire universe.*
> *To soothe and dispel the pain of others, grant us that sweet, melodious strain.*
> *We desire no boons, nor do we seek any favors.*
> *Today, all these worldly desires seem utterly trivial to us.*
> *To serve and worship the poor and suffering is all this priest desires today.*
> *To share the pain of this suffering world, grant us just this much wisdom.*
> *We desire no boons, nor do we seek any favors.*
> *May we never fear struggles, nor ever abandon our patience.*
> *No matter how much we may suffer, even if thorns are strewn across our path ahead.*
> *May we never be shaken even in sorrow, grant us such a resilient smile.*
> *We desire no boons, nor do we seek any favors.*
> *Lest we stray from the path of truth, O Lord, grant us that wisdom and awareness.*
> *We desire no boons, nor do we seek any favors.*
> *Lest we stray from the path of truth, O Lord, grant us that wisdom and awareness.*

83. न हो ओ साधक तू लाचार , मिलेगा नव बल का संचार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

न हो ओ साधक तू लाचार, मिलेगा नव बल का संचार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

दिखता कोई नहीं मीत, इससे तुझको है भीत।
फिर भी चिन्ता मत करना, तेरी होनी है जीत॥
तपस्या है तेरा हथियार, लक्ष्य है तेरा पर उपकार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

भारी शत्रु है विकार, तेरा छोटा है आकार।
फिर भी रुक न सकेगी, तेरी निष्ठा की धार॥
हटा दे मन से सब कुविचार, बढ़ा सद्भावना का संचार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

माना असुरता है क्रूर, तेरा लक्ष्य अभी दूर।
फिर भी हक जो तुम्हारा, है वो मिलेगा जरूर॥
बाँटता चल तू सबको प्यार, बनेगा श्रेष्ठ सुखी संसार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

न हो ओ साधक तू लाचार, मिलेगा नव बल का संचार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

83. न हो ओ साधक तू लाचार **,** मिलेगा नव बल का संचार — **English Meaning** / भावार्थ

> *O spiritual seeker, do not feel helpless, a surge of new strength shall flow within you.*
> *To protect you is the Mother's tender love, you are the prince of the Divine Lord.*
>
> *No companion is seen by your side, and this fills you with fear.*
> *Yet, do not worry at all, for victory is destined to be yours.*
>
> *Spiritual penance is your weapon, and your goal is the welfare of others.*
> *To protect you is the Mother's tender love, you are the prince of the Divine Lord.*
>
> *Formidable is the enemy of inner vices, and small is your physical form.*
> *Yet, the powerful current of your devotion can never be stopped.*
>
> *Cast away all negative thoughts from your mind, and let goodwill flow and expand.*
> *To protect you is the Mother's tender love, you are the prince of the Divine Lord.*
>
> *Granted, the dark forces are cruel, and your destination is still far away.*
> *Yet, that which is rightfully yours, you shall surely receive.*
>
> *Keep sharing love with one and all, and a noble, happy world will be created.*
> *To protect you is the Mother's tender love, you are the prince of the Divine Lord.*
>
> *O spiritual seeker, do not feel helpless, a surge of new strength shall flow within you.*
> *To protect you is the Mother's tender love, you are the prince of the Divine Lord.*

84. न मैं धाम - धरती न धन चाहती हूँ   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ।

रटे नाम तेरा वो चाहूँ मैं रसना,
सुने यश तेरा वह श्रवण चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

विमल ज्ञान धारा से मस्तिष्क उर्वर,
व श्रद्धा से भरपूर मन चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

करे दिव्य दर्शन जो तेरा निरन्तर,
वही भाग्यशाली नयन चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

नहीं चाहना है मुझे स्वर्ग छवि की,
मैं केवल तुम्हें प्राण धन चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

प्रकाश आत्मा में अलौकिक तेरा है,
परम ज्योति प्रत्येक क्षण चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

84. न मैं धाम - धरती न धन चाहती हूँ — **English Meaning** / भावार्थ

Neither do I desire earthly domains, land, nor wealth,
I yearn only for a single speck of Your grace.
I desire a tongue that ceaselessly chants Your name,
I desire ears that listen only to Your glory.
Neither do I desire earthly domains, land, nor wealth,
I yearn only for a single speck of Your grace.

An intellect made fertile by the pure stream of divine wisdom,
And a heart overflowing with deep devotion is what I desire.
Neither do I desire earthly domains, land, nor wealth,
I yearn only for a single speck of Your grace.

Eyes that constantly behold Your divine presence,
Those very blessed eyes are what I desire.
Neither do I desire earthly domains, land, nor wealth,
I yearn only for a single speck of Your grace.

I have no desire for the beautiful visions of heaven,
I desire only You as the ultimate treasure of my soul.
Neither do I desire earthly domains, land, nor wealth,
I yearn only for a single speck of Your grace.

Your transcendental light shines within the soul,
I yearn for that supreme illumination at every single moment.
Neither do I desire earthly domains, land, nor wealth,
I yearn only for a single speck of Your grace.

Neither do I desire earthly domains, land, nor wealth,
I yearn only for a single speck of Your grace.

85. न मैं स्वर्ग - मुक्ति न यश चाहती हूँ , मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ।

समर्पित हो तन-मन समर्पित हो जीवन,
समर्पण हो सर्वस्व यही चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

बनूँ वंशी तेरी, बजे स्वर तुम्हारा,
तड़पते हृदय की व्यथा चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

किरणें बनूँ मैं सविता बनो तुम,
जले ज्योति तेरी चमक चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

मिले जन्म जब भी वरण हो तुम्हारा,
बिछुड़न नहीं अब मिलन चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

रहो तुम कहीं भी भुलाओ न मुझको,
मिलें फिर से हम-तुम वचन चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

तुम्हीं मेघ हो प्रभु बनूँ बूँद मैं भी,
बरसूँ मैं अविरल प्रण ठानती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ।
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

85. न मैं स्वर्ग **-** मुक्ति न यश चाहती हूँ **,** मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ **— English Meaning /** भावार्थ

Neither heaven, liberation, nor fame do I desire,
To merge into You, O Lord, is the boon I seek.
May body and mind be surrendered, may life be surrendered,
May my everything be surrendered, this alone I desire.
Neither heaven, liberation, nor fame do I desire,
To merge into You, O Lord, is the boon I seek.

May I become Your flute, and may Your melody play,
I desire the yearning pain of a longing heart.
Neither heaven, liberation, nor fame do I desire,
To merge into You, O Lord, is the boon I seek.

May I become the rays, and You the sun,
May Your light burn, I desire to be its radiance.
Neither heaven, liberation, nor fame do I desire,
To merge into You, O Lord, is the boon I seek.

Whenever I take birth, may I choose only You,
No separation now, I desire only union.
Neither heaven, liberation, nor fame do I desire,
To merge into You, O Lord, is the boon I seek.

Wherever You may be, do not forget me,
That we shall meet again, this promise I desire.
Neither heaven, liberation, nor fame do I desire,
To merge into You, O Lord, is the boon I seek.

You alone are the cloud, O Lord, may I become a droplet,
To rain incessantly is the vow I make.
Neither heaven, liberation, nor fame do I desire,
To merge into You, O Lord, is the boon I seek.
To merge into You, O Lord, is the boon I seek.
To merge into You, O Lord, is the boon I seek.

86. नयन - नयन में हृदय - हृदय में विकल वेदना छाई [ऑनलाइन ऑडियो सुनें] [ऑनलाइन वीडियो देखें]

.

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

तिनके-तिनके जोड़ बया जो, अपना नीड़ बनाती।
आपने छौनों को पावस से, जननी बया बचाती॥
एक-एक कर उसी तरह तुम, सबको यहाँ बुलाया।
भव की उमस भरी पावस से, तुमको तात बचाया॥
अपने प्राण जलाये लेकिन, तुमको राह दिखाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

चारों ओर विषमताओं के, लगे हुए हैं डेरे।
मानव मन को कुण्ठाओं के, दुर्गम सैनिक घेरे॥
पाप-ताप की काल कोठरी में, यह जीव बिचारा।
पड़ा कराह रहा पर कोई, देता नहीं सहारा॥
देना उन्हें प्रकाश विश्व में, अन्ध तमिस्रा छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

कर अपना उद्धार दूसरों, को जो राह दिखाते।
इस धरती पर धन्य वही तो, महापुरुष कहलाते॥
सुप्त तुम्हारी उसी प्राण-प्रतिभा को, यहाँ जगाया।
अन्तःस्थल के पावन गंगा-जल से है नहलाया॥
घर-घर बँटे पुण्य पावनता, यह प्रसाद की नाईं।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

अपना देश महान बने फिर, सुख-सम्पदा सुहाये।
पुण्य तिलक अपनी संस्कृति के, माथे में लग जाये॥
सभ्य समाज बने अपना सब, भव-बन्धन मिट जाये।
ज्ञान और विज्ञान सभी में, उन्नत ध्वज लहराये॥
विश्व-शान्ति की दसों-दिशाओं, में गूँजे शहनाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

जाओ मेरे लाल! दुआएँ, तुम लाखों ले जाओ।
भटकी हुई आत्माओं को, नूतन राह दिखाओ॥
आये थे तुम एकाकी पर, अब यह नहीं कहोगे।
साथ तुम्हारे अन्तःस्थल में, हम भी सदा रहेंगे॥
कैसी भी हो घड़ी साथ बन, होंगे हम परछाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥
कैसी भी हो घड़ी साथ बन, होंगे हम परछाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

86. नयन - नयन में हृदय - हृदय में विकल वेदना छाई — **English Meaning** / भावार्थ

In every eye, in every heart, a restless sorrow has spread.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
Gathering straw by straw, the weaver bird builds her nest.
The mother bird protects her little ones from the monsoon rains.
In the very same way, one by one, you were all summoned here.
And protected, dear ones, from the sweltering rains of worldly existence.
Burning his own life-breath, he showed you the path.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
In every eye, in every heart, a restless sorrow has spread.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
All around, the camps of adversities have pitched their tents.
The human mind is besieged by the impenetrable soldiers of frustrations.
In the dark dungeon of sin and suffering, this poor soul
Lies groaning, yet there is no one to offer support.
Bestow upon them light in this world where blind darkness has spread.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
In every eye, in every heart, a restless sorrow has spread.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
Those who, achieving their own liberation, show the path to others,
They alone are blessed on this earth, revered as great souls.
Your dormant spiritual potential was awakened here,
Bathed in the sacred Ganges water of the innermost soul.
May virtue and purity be distributed to every home like a sacred offering.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
In every eye, in every heart, a restless sorrow has spread.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
May our nation become great again, adorned with joy and prosperity.
May the sacred mark of our culture be anointed upon its forehead.
May our society become civilized, and all worldly bondages be dissolved.
In both spiritual wisdom and science, may our triumphant flag fly high.
May the sacred shehnai of world peace echo in all ten directions.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
In every eye, in every heart, a restless sorrow has spread.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
Go, my beloved child! Take millions of blessings with you.
Show a new path to the wandering souls.
You arrived here all alone, but you shall say this no more,
For we shall always dwell with you in your innermost heart.
Whatever the hour may be, we will walk with you like a shadow.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
Whatever the hour may be, we will walk with you like a shadow.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.
In every eye, in every heart, a restless sorrow has spread.
The inner heart overflows, tears roll down, in this compassion-filled farewell.

87. नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा , कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा॥

जगा देश सारा मिट्टी कालिमा है,
गगन में छिटकने लगी लालिमा है।
निशा नाथ सोये जगा अंशुमाली,
पथिक ने नये लक्ष्य की राह पा ली॥
प्रगति पंथ पर वेग से बढ़ चले जो,
करोड़ों पगों को नयी शक्ति दूँगा॥
नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
नये देश को मैं॥

न होगा कभी दृष्टि से लक्ष्य ओझल,
मनोबल हमारा बनेगा सुसम्बल।
अथक शक्ति ले पग हुए आज गतिमय,
झुकेगा किसी दिन इन्हीं पर हिमालय॥
धरा पर नया स्वर्ग बसकर रहेगा,
मनुज को विवशताओं से मुक्ति दूँगा॥

मनुज अब रुकेगा नहीं आँधियों से,
मनुजता सहमती न बरबादियों से।
जो चाहा मनुज ने वही करके छोड़ा,
दनुजता से डरकर कभी मुँह न मोड़ा॥
मनुज जब चलेगा सृजन की शपथ ले,
मैं उनको शहीदों सी आसक्ति दूँगा॥
नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
नये देश को मैं॥

अभी कल्पना हो सकी है न पूरी,
अभी साधना रह गयी है अधूरी।
अभी तो प्रगति का खुला द्वार केवल,
अभी लक्ष्य में शेष है और दूरी॥
बिना लक्ष्य की प्राप्ति के जो न लौटे,
मैं ऐसी प्रखर शक्ति के व्यक्ति दूँगा॥
नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा॥

नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
नये देश को मैं॥

87. नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा , कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा — **English Meaning** / भावार्थ

To the new nation, I shall give a new devotion, I shall give a new devotion.
And to this era, I shall give a new expression.
The entire nation has awakened, the darkness of the earth is dispelled,
A crimson glow has begun to scatter across the sky.
The lord of the night has gone to sleep, the sun has awakened,
The traveler has found the path to a new destination.
To those who march swiftly upon the path of progress,
To those millions of footsteps, I shall give a new strength.
To the new nation, I shall give a new devotion, I shall give a new devotion.
To the new nation, I...

Never shall the goal fade from our sight,
Our inner resolve shall become our great support.
With tireless strength, our feet have become dynamic today,
One day, even the mighty Himalayas shall bow down before them.
A new heaven shall surely be established upon this earth,
I shall liberate humanity from all helplessness.
Man shall no longer be stopped by the storms,
Humanity does not cower before destruction.
Whatever man has resolved, he has accomplished,
He has never turned his face away in fear of demonic forces.
When man marches forward taking the oath of creation,
I shall grant them a devotion as profound as that of the martyrs.
To the new nation, I shall give a new devotion, I shall give a new devotion.
To the new nation, I...

The vision has not yet been fully realized,
The spiritual practice still remains incomplete.
As yet, only the gateway of progress has opened,
There is still a distance left to reach the goal.
Those who do not return without achieving their goal,
I shall give rise to individuals of such fierce and radiant power.
To the new nation, I shall give a new devotion, I shall give a new devotion.
And to this era, I shall give a new expression.
To the new nation, I shall give a new devotion, I shall give a new devotion.
To the new nation, I...

88. निंदिया बाई घर जइयो , जा घर राम भजन नहीं होय   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

कै कोई जागे रोगी-भोगी, कै कोई जागे चोर।
कै कोई जागे सन्त महात्मा, लगी हरि से डोर॥
निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

चार पहर धंधे में बीते, चार पहर गई सोय।
घड़ी एक हरि नाम न लीनो, मुक्ति कहाँ से होय॥
निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

स्वर्ग अटारी चढ़ गई और, रही करम को रोय।
कहत कबीर सुनो भई साधो, अब गति कैसी होय॥
निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

88. निंदिया बाई घर जइयो **,** जा घर राम भजन नहीं होय — **English Meaning** / भावार्थ

O Sister Sleep, go to that home where the praise of Ram is not sung.
Where the praise of Ram is not sung, where the praise of Shyam is not sung.

Either the sick and the pleasure-seeker stay awake, or the thief keeps vigil.
Or the saintly, noble souls stay awake, whose hearts are bound to the Divine Lord.

O Sister Sleep, go to that home where the praise of Ram is not sung.
Where the praise of Ram is not sung, where the praise of Shyam is not sung.

Four watches of the day are spent in worldly chores, and four watches are lost in sleep.
Not for a single moment was the Lord's name uttered; how then shall liberation be attained?

O Sister Sleep, go to that home where the praise of Ram is not sung.
Where the praise of Ram is not sung, where the praise of Shyam is not sung.

One may ascend to the high mansion of heaven, yet still weep over one's fate.
Says Kabir, listen O seekers, what will be your ultimate destiny now?

O Sister Sleep, go to that home where the praise of Ram is not sung.
Where the praise of Ram is not sung, where the praise of Shyam is not sung.

O Sister Sleep, go to that home where the praise of Ram is not sung.
Where the praise of Ram is not sung, where the praise of Shyam is not sung.

89. ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तूने हमें जनम दिया, पालन कर रही हो तुम।
तुमसे ही पाते प्राण हम, कष्टों को हर रही हो तुम॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी जहान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, हो रही हो विद्यमान॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
हे माँ! हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

89. ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् — **English Meaning** / भावार्थ

> *Om, Earth, Atmosphere, and Heavens! We meditate upon the supreme, adorable splendor of that Divine Creator; may That illumine and inspire our intellect.*
> *Om, Earth, Atmosphere, and Heavens! We meditate upon the supreme, adorable splendor of that Divine Creator; may That illumine and inspire our intellect.*
> *You have given us birth, and You are nurturing us.*
> *From You alone we receive our life-breath, and You dispel all our sufferings.*
> *Om, Earth, Atmosphere, and Heavens! We meditate upon the supreme, adorable splendor of that Divine Creator; may That illumine and inspire our intellect.*
> *Your magnificent radiance is spread across the entire universe.*
> *In every single object of creation, You are eternally present.*
> *Om, Earth, Atmosphere, and Heavens! We meditate upon the supreme, adorable splendor of that Divine Creator; may That illumine and inspire our intellect.*
> *Upon You alone we meditate, and we pray for Your grace.*
> *O Mother! Guide our intellect and lead us upon the righteous path.*
> *Om, Earth, Atmosphere, and Heavens! We meditate upon the supreme, adorable splendor of that Divine Creator; may That illumine and inspire our intellect.*

90. पर - पीड़ा से द्रवित हो उठा , जिसका तन - मन - जीवन सारा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

पर-पीड़ा से द्रवित हो उठा, जिसका तन-मन-जीवन सारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥

नीलकंठ बन पिया हलाहल, जिसने जन कल्याण में।
परम शान्ति सुख मिला अलौकिक, जिसे आत्म-बलिदान में॥
जिसने इस सारी धरती को, ही अपना कुटुम्ब है माना।
बुनता रहा सदैव मानवी, आस्थाओं का ताना बाना॥
जो युग-प्यास बुझाने लाया, दिव्य ज्ञान-गंगा की धारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥
पर पीड़ा से द्रवित हो उठा. . . . . .

जिसने दिया निमन्त्रण हँसकर, आँधी-पानी तूफानों को।
जड़-जीवन को जागृत करने, होम दिया जिसने प्राणों को॥
जाति-पाति की खाई पाटी, जिसने पावन प्यार से।
दुखियों के घावों को धोया, जिसने दृग जल धार से॥
सिर पर कफन बाँधकर जिसने, अभिमानी तम को ललकारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥
पर पीड़ा से द्रवित हो उठा. . . . . .

पौरुष की प्रतिमा पर जिसने, हँसकर श्रद्धा सुमन चढ़ाया।
ममता का आँचल फैलाकर, जिसने पीड़ा को दुलराया॥
जिसने नई चेतना भर दी, तन-मन-जीवन, प्राण में।
जिसने हँसते-हँसते दे दीं, वज्र अस्थियाँ दान में॥
जिसने अभिनव ज्योति जलाई, तोड़-तोड़कर तम की कारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥
पर पीड़ा से द्रवित हो उठा. . . . . .

भूल-भटकी मानवता की, सुन न सके जो कठिन कराहें।
तड़प उठे जिसका अन्तर्मन, सुनकर दीन-दुखी की आहें॥
हिमगिरि सी विपदाओं में भी, खोये जो न विवेक को।
ज्ञान-चक्षु से देखे हरदम, जो अनेक में एक को॥
राजपाट को तजकर जिसने, ताज कंटकों का स्वीकारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥
पर पीड़ा से द्रवित हो उठा, जिसका तन-मन जीवन सारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥

90. पर **-** पीड़ा से द्रवित हो उठा **,** जिसका तन **-** मन **-** जीवन सारा — **English Meaning** / भावार्थ

He whose entire body, mind, and life melted with the pain of others,
Who carved a path even through thorns, to those feet we bow.

Becoming the blue-throated Lord, who drank the deadly poison for the welfare of humanity,
Who found supreme peace and divine bliss in self-sacrifice,
Who considered this entire earth as his own family,
Who kept weaving forever the warp and weft of human faith,
Who brought the flow of the divine Ganges of wisdom to quench the thirst of the ages,
Who carved a path even through thorns, to those feet we bow.
He whose entire body, mind, and life melted with the pain of others. . . . . .

Who smilingly invited the storms, rain, and tempests,
Who sacrificed his very life to awaken the inert existence,
Who bridged the chasm of caste and creed with sacred love,
Who washed the wounds of the suffering with the stream of tears from his eyes,
Who, binding a shroud upon his head, challenged the arrogant darkness,
Who carved a path even through thorns, to those feet we bow.
He whose entire body, mind, and life melted with the pain of others. . . . . .

Who smilingly offered flowers of devotion upon the altar of valor,
Who, spreading the mantle of motherly affection, caressed and comforted pain,
Who infused a new consciousness into body, mind, life, and breath,
Who, with a smile, donated his thunderbolt-like bones in charity,
Who lit a novel flame of light, shattering the prison of darkness,
Who carved a path even through thorns, to those feet we bow.
He whose entire body, mind, and life melted with the pain of others. . . . . .

Who could not bear to hear the painful groans of lost and wandering humanity,
Whose innermost soul writhed in agony, hearing the sighs of the poor and suffering,
Who, even amidst Himalayan adversities, did not lose his wisdom,
Who always perceived the One in the many through the eyes of knowledge,
Who, renouncing the kingdom, accepted the crown of thorns,
Who carved a path even through thorns, to those feet we bow.
He whose entire body, mind, and life melted with the pain of others,
Who carved a path even through thorns, to those feet we bow.

91. पावन प्रीति लुटाते चलें , प्रेम की धारा बहाते चलें ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें।
सुरभित हो जिससे जगती, ऐसे सुमन सजाते चलें॥

मुस्कायें बन भुवन-भास्कर, ज्योति भरे जन-जन में।
मिट जाये सारा अँधियारा, विमल विभा हो मन में॥
जीवन धन्य बनाते चलें, सृजन प्रभाती सुनाते चलें॥
पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें॥

विमल चन्द्र की शुचि आभा ले, रजनी से टकराएँ।
तेरी दिव्य-ज्योति से ज्योतित, कण-कण को कर जाएँ॥
शीतलता बरसाते चलें, सबकी क्लान्ति मिटाते चलें॥
पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें॥

प्यासे अन्तर में प्रभु तेरी, प्रेम-सुधा यदि सरसे।
स्नेह सिक्त घन बन जन-हित में, बन फिर सावन बरसे॥
रस की धार बहाते चलें, सेवा पुष्प चढ़ाते चलें॥
पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें॥

सतत साधना हो यह जीवन, हर क्षण तुझको अर्पण।
लुटा सकें सर्वस्व स्वयं का, कर हम मूक समर्पण॥
सबका दर्द बँटाते चलें, जीवन-ज्योति जलाते चलें॥
पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें।
सुरभित हो जिससे जगती, ऐसे सुमन सजाते चलें॥

पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें।
सुरभित हो जिससे जगती, ऐसे सुमन सजाते चलें॥

91. पावन प्रीति लुटाते चलें , प्रेम की धारा बहाते चलें — **English Meaning** / भावार्थ

Let us go forth showering sacred love, let us flow the stream of divine affection.
Let us adorn the world with such blossoms that fill the earth with fragrance.

Let us smile as the sun of the universe, filling every soul with light.
May all darkness be dispelled, and pure radiance shine within the mind.
Let us make life blessed as we go, singing the morning song of creation.
Let us go forth showering sacred love, let us flow the stream of divine affection.

Taking the pure radiance of the spotless moon, let us confront the dark night.
Illumined by Your divine light, let us light up every single particle.
Let us shower soothing coolness, erasing everyone's weariness.
Let us go forth showering sacred love, let us flow the stream of divine affection.

O Lord, if the nectar of Your love overflows in the thirsty heart,
Let us become clouds drenched in affection, raining like the monsoon for the welfare of all.
Let us flow the stream of divine nectar, offering the flowers of selfless service.
Let us go forth showering sacred love, let us flow the stream of divine affection.

May this life be a continuous spiritual practice, offering every moment to You.
May we surrender our entire self, making a silent offering of devotion.
Let us share everyone's pain, lighting the flame of life as we go.
Let us go forth showering sacred love, let us flow the stream of divine affection.
Let us adorn the world with such blossoms that fill the earth with fragrance.
Let us go forth showering sacred love, let us flow the stream of divine affection.
Let us adorn the world with such blossoms that fill the earth with fragrance.

92. पितु - मातु सहायक स्वामि सखा , तुम ही एक नाथ हमारे हो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

प्रति पालक हो सारे जग के, अतिशय करुणा उर धारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

भूले हैं हम तुमको तुम तो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

महाराज! महा महिमा तुम्हरी, समझे विरले बुधिवारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

तुम से प्रभु की नर पाय झलक, केहि के अब और सहारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

सुख शान्ति-निकेतन प्रेम निधे, मन-मन्दिर के उजियारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

92. पितु - मातु सहायक स्वामि सखा , तुम ही एक नाथ हमारे हो — English Meaning / भावार्थ

Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
For those who have no other support, You alone are the guardian and savior.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
You are the sustainer of the entire universe, carrying boundless compassion in Your heart.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
Though we have forgotten You, You have never cast us out of Your remembrance.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
There is no end to Your countless blessings, which unfold and expand moment by moment.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
O Sovereign King! Your supreme glory is comprehended only by a rare few wise souls.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
You are the very life of this life, the most beloved of our vital breath.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
Having caught a glimpse of a Lord like You, whose other support would a soul ever seek?
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
Abode of joy and peace, ocean of divine love, You are the light of the temple of our mind.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.
Father, mother, helper, master, and friend, You alone are our sole Lord and Protector.

93. प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ , यह सुमन चढ़ाऊँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ।
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
यह सुमन चढ़ाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥

केवल एक यही है इच्छा, शरण रहूँ मैं तेरी।
साँस-साँस में तुम्हीं विराजो, टेर सुनो अब मेरी॥
अन्तर में तुम्हें समाऊँ, हर पल तुझको ही ध्याऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ।
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
यह सुमन चढ़ाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥

दीन दुःखी की सेवा में ही, शेष कटे यह जीवन।
हर आँसू मुस्कान बना दूँ, ऐसा हो अब हर क्षण॥
गिरतों को पुनः उठाऊँ, विश्राम इसी में पाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ।
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
यह सुमन चढ़ाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥

आस यही है मेरे स्वामी, साथ सदा ही रहना।
थक जाऊँ मैं जब भी पथ में, हाथ हमारे गहना॥
आशीष तुम्हारा पाऊँ, छाया तेरी बन जाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ।
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
यह सुमन चढ़ाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥

93. प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ , यह सुमन चढ़ाऊँ — **English Meaning** / भावार्थ

O Lord, may I merge into You, this flower I offer.
O Lord, may I merge into You, this flower I offer.
This flower I offer, this flower I offer.
O Lord, may I merge into You, this flower I offer.

This is my only desire, to remain in Your refuge.
May You reside in my every breath, hear my calling now.
May I enshrine You within my heart, and meditate on You every moment.

O Lord, may I merge into You, this flower I offer.
O Lord, may I merge into You, this flower I offer.
This flower I offer, this flower I offer.
O Lord, may I merge into You, this flower I offer.

In the service of the poor and suffering, may the rest of this life be spent.
May I turn every tear into a smile, let every moment be such.
May I lift up those who fall, and find my peace in this alone.

O Lord, may I merge into You, this flower I offer.
O Lord, may I merge into You, this flower I offer.
This flower I offer, this flower I offer.
O Lord, may I merge into You, this flower I offer.

This is my only hope, my Lord, always stay with me.
Whenever I grow weary on the path, hold my hand.
May I receive Your blessings, and become Your shadow.

O Lord, may I merge into You, this flower I offer.
O Lord, may I merge into You, this flower I offer.
This flower I offer, this flower I offer.
O Lord, may I merge into You, this flower I offer.

94. प्रवासी रुक नहीं सकते , कभी मन के इशारे पर   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर।
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर॥

बढ़े चलते, बढ़े चलते, न चिन्ता दूर मंजिल की।
कभी तो पार पायेंगे, मनोबल के सहारे पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

न मुड़कर देखते देखते पीछे, कठिन मंजिल सतत साथी।
जिन्हें कुछ काम करना है, नहीं मिटते मिटाने पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

अमिट विश्वास का बल ले, कुटिल जग में उतरते हैं।
वही तो सिद्ध कहलाते, बराबर आजमाने पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

यही तो इतिहास कहता है, चढ़ा दो प्राण जन-हित में।
सफलता तो सदा मिलती, स्वयं को ही मिटाने पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

अचल निज ध्येय पर होकर, मिला सम्मान था हमको।
कमर कस ली अरे हमने, नया मानव बनाने पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

94. प्रवासी रुक नहीं सकते **,** कभी मन के इशारे पर — **English Meaning /** भावार्थ

The travelers cannot halt, ever at the whim of the mind.
Their steps never retreat, they reach the shore.

They keep marching forward, keep marching forward, unconcerned by the distant destination.
Someday they shall cross over, sustained by the strength of their resolve.
Their steps never retreat, they reach the shore.
The travelers cannot halt, ever at the whim of the mind.

They never turn back to look behind, the arduous destination is their constant companion.
Those who are destined to achieve great deeds, cannot be erased even when attempts are made to erase them.
Their steps never retreat, they reach the shore.
The travelers cannot halt, ever at the whim of the mind.

Armed with the power of indelible faith, they descend into this devious world.
They alone are hailed as the perfected ones, when tested time and again.
Their steps never retreat, they reach the shore.
The travelers cannot halt, ever at the whim of the mind.

This is what history proclaims: sacrifice your life for the welfare of all.
Success is always attained, only upon effacing one's own self.
Their steps never retreat, they reach the shore.
The travelers cannot halt, ever at the whim of the mind.

Remaining steadfast on our ultimate goal, we were bestowed with honor.
Lo, we have girded our loins, to forge a new humanity.
Their steps never retreat, they reach the shore.
The travelers cannot halt, ever at the whim of the mind.

Their steps never retreat, they reach the shore.
The travelers cannot halt, ever at the whim of the mind.

95. प्रेमी भर तू प्रेम में , ईश्वर के गुण गाया कर ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद तू बन्दे, करता अपना आप रहा॥
प्रातः समय उठ ध्यान से, सत्संग में तू जाया कर॥
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥
प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

नर-तन के चोले को पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, होता जब तक मेल नहीं॥
नर तन पाने के लिए, उत्तम कर्म कमाया कर॥
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥
प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

पास तेरे है दुखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या?
भूखा-प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या?
पहले सबसे पूछकर, भोजन को तू खाया कर॥
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥
प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

देख दया परमेश्वर की, वेदों का जिसने ज्ञान दिया।
बन्दे मन में सोच जरा तो, कितना है कल्याण किया॥
सब कामों को छोड़कर, ईश्वर नाम ध्याया कर॥
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥
प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

95. प्रेमी भर तू प्रेम में **,** ईश्वर के गुण गाया कर **— English Meaning /** भावार्थ

O lover, fill yourself with love, and sing the glories of the Lord.
O oblivious soul, sweep the temple of your mind daily.

You spent the night in sleep, and remained engaged in sin all day.
In this very way, O mortal, you have been ruining your own self.
Rise early in the morning with devotion, and go to the holy gathering.
O oblivious soul, sweep the temple of your mind daily.

O lover, fill yourself with love, and sing the glories of the Lord.
O oblivious soul, sweep the temple of your mind daily.

To obtain this human form is no child's play.
Until the virtuous deeds of many lifetimes come together.
To earn this human body, perform noble deeds.
O oblivious soul, sweep the temple of your mind daily.

O lover, fill yourself with love, and sing the glories of the Lord.
O oblivious soul, sweep the temple of your mind daily.

While someone near you is in sorrow, how can you indulge in pleasures?
While your neighbor lies hungry and thirsty, how can you eat your bread?
First inquire about everyone, and only then partake of your food.
O oblivious soul, sweep the temple of your mind daily.

O lover, fill yourself with love, and sing the glories of the Lord.
O oblivious soul, sweep the temple of your mind daily.

Behold the mercy of the Supreme Lord, who bestowed the wisdom of the Vedas.
O mortal, ponder in your mind, how much He has blessed your well-being.
Leaving all other tasks aside, meditate upon the name of the Lord.
O oblivious soul, sweep the temple of your mind daily.

O lover, fill yourself with love, and sing the glories of the Lord.
O oblivious soul, sweep the temple of your mind daily.

96. राही जाना पथ मत भूल   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल।
चाहे फूल बिछें हो मग में, चाहे अनगिन शूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

चहुँ-दिशि छाये अँधियारा, गरजे धन बरसे जल-धारा।
धीरज से ले काम अभय तू, निज साहस मत भूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

अनगिन आकर्षण आ जायें, स्वर्ण-शैल बहु पथ मिल जायें।
प्रीति उर्वशी को पाकर भी, तनिक न जाना भूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

चलना तेरा काम अकेला, यह जग तो कुछ दिन का मेला।
तेरा ही बलिदान बनेगा, नव जागृति का मूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

पर हित शिव-सा विष पी जाना, स्वार्थ-सुधा को हँस ठुकराना।
प्रेम शान्ति समता के बोना, सारे जग में फूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

96. राही जाना पथ मत भूल — **English Meaning** / भावार्थ

O traveler, do not forget your path, O traveler, do not forget your path.
Whether flowers are strewn along the way, or countless thorns.
O traveler, do not forget your path, O traveler, do not forget your path.

Though darkness envelops all four directions, clouds thunder, and torrents of rain pour down.
Act with patience and remain fearless, do not forget your own courage.
O traveler, do not forget your path, O traveler, do not forget your path.

Countless allurements may arise, and golden peaks may appear on the way.
Even if you win the love of Urvashi, do not be swayed even for a moment.
O traveler, do not forget your path, O traveler, do not forget your path.

To walk alone is your destiny, this world is but a fair of a few days.
Your sacrifice alone shall become the foundation of a new awakening.
O traveler, do not forget your path, O traveler, do not forget your path.

For the welfare of others, drink poison like Shiva, and laughingly reject the nectar of selfishness.
Sow the flowers of love, peace, and equality throughout the entire world.
O traveler, do not forget your path, O traveler, do not forget your path.

97. राम का नाम लेकर न जो पा सके , राम का काम करके वही पाओगे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

राम का नाम लेकर न जो पा सके,
राम का काम करके वही पाओगे।
राम का नाम लेकर न जो पा सके,
राम का काम करके वही पाओगे॥

राम का काम है लोकसेवा करो,
राम से तो मिलन फिर असम्भव नहीं
छोड़ वैभव यहाँ भाव से जो भरा,
देख पाया पतन या पराभव नहीं॥
शान-अभिमान में जो न तुम पा सके,
त्याग-तप में निखर के वही पाओगे॥
राम का काम करके वही पाओगे॥

प्यार-ममता जिन्हें मिल न पाई कभी,
हर्ष-उल्लास का एक क्षण दो उन्हें।
जो घिरे हैं अँधेरे पथों में यहाँ,
प्रेरणा से भरी तुम किरण दो उन्हें॥
बुद्धि के दंभ में तुम न जो पा सके,
भाव से किन्तु भर के वही पाओगे॥
राम का काम करके वही पाओगे॥

भाव-सम्वेदना के बिना मूल्य क्या,
यज्ञ, जप, जागरण या अनुष्ठान का।
जो न करुणा हृदय बीच उमड़ी कभी,
बोझ बेकार है ज्ञान-विज्ञान का॥
मिल सका जो न अब तक गहन ज्ञान से,
स्नेह से तुम सँवर के वहीं पाओगे॥
राम का काम करके वही पाओगे॥

धर्म से भी अधिक धर्म की भावना,
है जरूरी बहुत व्यक्ति के वास्ते।
जिस तरह देह-बल से अधिक आत्मबल,
है जरूरी अतुल शक्ति के वास्ते॥
धर्म का जो कलेवर नहीं दे सका,
कर्म तुम श्रेष्ठ करके वही पाओगे॥
राम का काम करके वही पाओगे॥

राम का काम करके वही पाओगे।
राम का काम करके वही पाओगे॥

97. राम का नाम लेकर न जो पा सके **,** राम का काम करके वही पाओगे — **English Meaning** / भावार्थ

What you could not attain by chanting the name of Ram,
You shall attain by doing the work of Ram.
What you could not attain by chanting the name of Ram,
You shall attain by doing the work of Ram.

The work of Ram is to serve the world,
Then, union with Ram is no longer impossible.
Leaving behind grandeur, one who is filled with devotion here,
Has never seen downfall or defeat.
What you could not attain in glory and pride,
You shall attain by refining yourself through sacrifice and penance.
You shall attain by doing the work of Ram.

To those who never received love and affection,
Give them a single moment of joy and cheer.
Those who are surrounded by dark paths here,
Give them a ray filled with inspiration.
What you could not attain in the arrogance of intellect,
You shall attain by filling yourself with devotion.
You shall attain by doing the work of Ram.

Without feeling and empathy, what is the value
Of rituals, chanting, vigils, or ceremonies?
If compassion has never welled up within the heart,
The burden of knowledge and science is useless.
What could not be attained so far through deep knowledge,
You shall attain there, adorned with love.
You shall attain by doing the work of Ram.

Even more than religion, the spirit of righteousness
Is highly essential for an individual.
Just as soul-force, more than physical strength,
Is necessary for boundless power.
What the outer form of religion could not give,
You shall attain by performing noble deeds.
You shall attain by doing the work of Ram.
You shall attain by doing the work of Ram.
You shall attain by doing the work of Ram.

98. राम नाम का अर्थ यही है , काम करें हम राम का   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का।
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का॥
काम करें हम राम का॥

हो ऊँचा आदर्श सामने, हमें स्वयं का बोध हो।
सफर नहीं रुक पाये चाहे, कितना प्रबल विरोध हो॥
लोभ न मन में रहे सुखों का, वैभव का, धन-धाम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥

जब तक दुष्प्रवृत्ति के दानव, का फैला आतंक हो।
ईश्वर की सन्तान स्वयं को, समझे बैठा रंक हो॥
तब तक कभी न होगा अब तो, कोई पल विश्राम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥

उदासीन हम रहें न जब भी, होता अत्याचार हो।
कुछ ऐसा हम करें कि जिससे, सजग सकल संसार हो॥
त्यागें सब आलस्य चल पड़ें, जन-जन हो फिर काम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥

हो न जरा अभिमान हृदय में, सरल मधुर व्यवहार हो।
जन-जन में विश्वास जगाएँ, जन-जन के प्रति प्यार हो॥
ध्यान नहीं रह पाये हमको, फिर ऊँचे पद-नाम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥

जनमंगल के लिए समर्पित, हों मन में सद्भाव हो।
छल-छद्मों से दूर रहें हम, बिल्कुल नहीं दुराव हो॥
सबकी सेवा करें सभी को, रूप समझकर राम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का।
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥
काम करें हम राम का॥

98. राम नाम का अर्थ यही है **,** काम करें हम राम का — **English Meaning** / भावार्थ

This is the true meaning of the name of Ram: that we do the work of Ram.
Heedless of the night, heedless of the day, of morning or of evening time.
Let us do the work of Ram.

May a lofty ideal stand before us, and may we realize our own true self.
May our journey never halt, no matter how fierce the opposition.
May no greed dwell in our hearts for pleasures, grandeur, wealth, or estate.
Heedless of the night, heedless of the day, of morning or of evening time.
Let us do the work of Ram.
This is the true meaning of the name of Ram: that we do the work of Ram.

As long as the demon of evil tendencies spreads its terror,
And the children of God sit idle, deeming themselves helpless and poor,
Until then, there shall never be a single moment of rest.
Heedless of the night, heedless of the day, of morning or of evening time.
Let us do the work of Ram.
This is the true meaning of the name of Ram: that we do the work of Ram.

May we never remain indifferent whenever oppression occurs.
Let us act in such a way that the entire world is awakened.
Let us cast off all laziness and march forward, so that every soul becomes purposeful.
Heedless of the night, heedless of the day, of morning or of evening time.
Let us do the work of Ram.
This is the true meaning of the name of Ram: that we do the work of Ram.

May there be not a speck of pride in our hearts; let our conduct be simple and sweet.
Let us awaken faith in every heart, and harbor love for one and all.
May we pay no heed to high positions or titles.
Heedless of the night, heedless of the day, of morning or of evening time.
Let us do the work of Ram.
This is the true meaning of the name of Ram: that we do the work of Ram.

Dedicated to the welfare of humanity, may our minds be filled with goodwill.
Let us stay far away from deceit and hypocrisy, with absolutely no estrangement.
Let us serve everyone, beholding in each the very form of Ram.
Heedless of the night, heedless of the day, of morning or of evening time.
Let us do the work of Ram.
This is the true meaning of the name of Ram: that we do the work of Ram.
This is the true meaning of the name of Ram: that we do the work of Ram.
Let us do the work of Ram.

99. रात भर भोगा अँधेरा , घुटन अन्धापन झराने   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने॥

जल रही है सृष्टि सारी, आग के बादल बरसते।
गन्ध के अस्तित्व तो जीवन मृदुलता को तरसते॥
है तू ही वह तत्त्व जो बन, फूल नित-प्रति खिल रहा है॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा॥

थे अकेले तुम हुई इच्छा, कि निज विस्तार कर लूँ।
और अपनी प्राण-सत्ता को, हृदय में आप भर लूँ॥
है तू ही क्रम सृष्टि का, जाने न कब से चल रहा है॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा॥

ढूँढ़ते तुझको रहे संसार में, कब जन्म बीता।
किन्तु जीवन बन नहीं पाया, कभी भी कर्म गीता॥
है तू ही जो हृदय में कुछ, ज्योति जैसा जल रहा है॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा॥

स्वप्नवत संसार लेकिन, लग रहा है सत्य जीवन।
लिप्त सबमें किन्तु सबसे, दूर होता विप्र है मन॥
है तू ही जैसे सरोवर, में कमल-दल खिल रहा है॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा॥

99. रात भर भोगा अँधेरा **,** घुटन अन्धापन झराने **— English Meaning /** भावार्थ

All night long I endured the darkness, to shed the suffocation and blindness.
All night long I endured the darkness, to shed the suffocation and blindness.
It is You alone who, in the eastern sky, rises eternally as the sun.
All night long I endured the darkness, to shed the suffocation and blindness.
All night long I endured the darkness, to shed the suffocation and blindness.
The entire creation is burning, as clouds of fire pour down.
The very essence of fragrance and life yearn for tenderness.
It is You alone who, becoming that divine element, blooms daily as a flower.
It is You alone who, in the eastern sky, rises eternally as the sun.
All night long I endured the darkness, to shed the suffocation and blindness.
All night long I endured the darkness...
You were alone, then arose the desire to expand Your own self.
And to fill the heart with Your very own life-force.
It is You alone, this cosmic cycle of creation, unfolding since time immemorial.
It is You alone who, in the eastern sky, rises eternally as the sun.
All night long I endured the darkness, to shed the suffocation and blindness.
All night long I endured the darkness...
Searching for You in this world, lifetimes have passed away.
Yet this life could never become a sacred song of righteous action.
It is You alone who, within the heart, glows like a sacred flame.
It is You alone who, in the eastern sky, rises eternally as the sun.
All night long I endured the darkness, to shed the suffocation and blindness.
All night long I endured the darkness...
Though the world is dreamlike, this life appears so real.
Engrossed in everything, yet detached from all, remains the wise mind.
It is You alone, blooming like a lotus petal in the lake.
It is You alone who, in the eastern sky, rises eternally as the sun.
All night long I endured the darkness, to shed the suffocation and blindness.
All night long I endured the darkness...

100. सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा , यही कामना है यही याचना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है।
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम, यही कल्पना है यही भावना है॥

मिला प्यार निर्मल हमें तो तुम्हारा, भले ही विमुख हो तुम्हीं से रहे हम।
तुम्हीं हो हमारे हितैषी सदा से, मगर प्यार तुमसे भी कर ना सके हम॥
हमारे हृदय में जगे प्रेम निश्चल, अनुष्ठान हमको यही ठानना है॥
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम, यही कल्पना है यही भावना है॥

तुम्हारी निगाहें रहीं नित्य हम पर, मगर हम तुम्हें क्यों नहीं देख पाये।
कला जिन्दगी की सिखाते रहे तुम, मगर हम उसे क्यों नहीं सीख पाये॥
चलें किस तरह हम तुम्हारी नजर में, समझना यही है यही जानना है॥
सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है॥

हमें मान-पद-यश सताने न पाए, कि पैसे की झिलमिल लुभाने न पाये।
हमें दुष्ट-दुर्गुण डराने न पाये, कि श्रद्धा हमारी डिगाने न पाये॥
तुम्हीं नाव हो प्रभु तुम्हीं हो खिवैया, यही सत्य हमको तो पहचानना है॥
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम, यही कल्पना है यही भावना है॥

मिले दृष्टि ऐसी तुम्हें जो निहारे, सधे स्वर वही बस तुम्हें जो पुकारे।
जगे बुद्धि ऐसी तुम्हें जो विचारे, बहे आँख में जल चरण जो पखारे॥
कि जो भी है अपना बने सब तुम्हारा, हमारे लिए प्रिय यही साधना है॥
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम, यही कल्पना है यही भावना है॥

सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है।
सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है॥
यही कामना है यही याचना है, यही कामना है यही याचना है, यही कामना है यही याचना है॥

100. सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा , यही कामना है यही याचना है — **English Meaning** / भावार्थ

May our mind ever remain Your home, this is our sole yearning, this is our sole prayer.
May we remain surrendered at Your feet, this is our only vision, this is our deepest devotion.

We received Your pure, spotless love, even though we turned our faces away from You.
You have ever been our true well-wisher, yet we could not even offer our love to You.
May unblemished love awaken in our hearts, this is the sacred vow we must resolve to keep.
May we remain surrendered at Your feet, this is our only vision, this is our deepest devotion.

Your eyes were eternally upon us, yet why were we unable to behold You?
You kept teaching us the art of living, yet why did we fail to learn it?
How we must walk in Your divine sight, this is what we must comprehend, this is what we must know.
May our mind ever remain Your home, this is our sole yearning, this is our sole prayer.

May honor, status, and fame never torment us, nor the glitter of wealth entice us.
May wicked vices never terrify us, nor shake our unwavering faith.
You are the boat, O Lord, and You are the boatman; this is the ultimate truth we must realize.
May we remain surrendered at Your feet, this is our only vision, this is our deepest devotion.

May we be blessed with a vision that beholds only You, and a voice so attuned that it calls only upon You.
May such intellect awaken that contemplates only You, and tears flow from our eyes to wash Your feet.
May whatever is ours become entirely Yours; for us, O Beloved, this is the only spiritual practice.
May we remain surrendered at Your feet, this is our only vision, this is our deepest devotion.

May our mind ever remain Your home, this is our sole yearning, this is our sole prayer.
May our mind ever remain Your home, this is our sole yearning, this is our sole prayer.
This is our sole yearning, this is our sole prayer; this is our sole yearning, this is our sole prayer; this is our sole yearning, this is our sole prayer.

101. साँई का पंछी बोले रे , साँई का पंछी बोले   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले।
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥
तिनके के पिंजरे में मुनियाँ, सुधा और विष घोले रे।
साँई का पंछी बोले॥
तिनके के पिंजरे में मुनियाँ, सुधा और विष घोले रे।
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥

साजन का है बाग अनूठा, सब कुछ सच्चा सब कुछ झूठा।
रीझा सो पछताता लौटा, पाया मीठा फल जो रूठा॥
खुला खेल है देखे जब तू, घूँघट का पट खोले रे॥
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥

चटक चाँदनी चार दिनों की, शीतल रजनी थोड़ी बाकी।
चुन ले सुमन सजा ले डाली, प्याली भर ले शेष सुधा की॥
तेरी कथा कहेंगे कल, पैरों के फूट फफोले रे॥
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥

आशा और पंथ का मारा, हाट-हाट घूमा बनजारा।
अब भी रहे लाज जो मनुवा मन से मन को तोल रे॥
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥
तिनके के पिंजरे में मुनियाँ, सुधा और विष घोले रे।
साँई का पंछी बोले॥
तिनके के पिंजरे में मुनियाँ, सुधा और विष घोले रे।
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥

101. साँई का पंछी बोले रे **,** साँई का पंछी बोले — **English Meaning** / भावार्थ

The bird of the Divine sings, oh, the bird of the Divine sings.
The bird of the Divine sings, oh, the bird of the Divine sings.
In this cage of straw, the little bird mixes nectar and poison.
The bird of the Divine sings.
In this cage of straw, the little bird mixes nectar and poison.
The bird of the Divine sings.
The bird of the Divine sings, oh, the bird of the Divine sings.
The Beloved's garden is wondrous; everything is real, yet everything is an illusion.
He who was enticed returned in regret; he who turned away found the sweet fruit.
It is an open play, which you shall behold when you lift the veil of your face.
The bird of the Divine sings.
The bird of the Divine sings, oh, the bird of the Divine sings.
The bright moonlight lasts but a few days; only a little of the cool night remains.
Gather the blossoms, adorn the branch, and fill your cup with the remaining nectar.
Tomorrow, the blisters on your feet will tell the tale of your journey.
The bird of the Divine sings.
The bird of the Divine sings, oh, the bird of the Divine sings.
Driven by desires and weary of the path, the nomad wandered from market to market.
Even now, to save your honor, oh mind, weigh your heart with the Heart.
The bird of the Divine sings.
The bird of the Divine sings, oh, the bird of the Divine sings.
In this cage of straw, the little bird mixes nectar and poison.
The bird of the Divine sings.
In this cage of straw, the little bird mixes nectar and poison.
The bird of the Divine sings.
The bird of the Divine sings, oh, the bird of the Divine sings.
The bird of the Divine sings, oh, the bird of the Divine sings.

102. सामने दिव्य आलोक साकार था , जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

सामने दिव्य आलोक साकार था, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई॥
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

बात क्या थी न जाने उस आदेश में,
जिन्दगी ही हमारी वचन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

इस कदर फूल सुख के खिले खुशनुमा,
जिन्दगी ही हमारी चमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

तेज ढाला स्वतः जो वलय से विभो,
जिन्दगी ही हमारी किरण बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

फिर कहा लोक मंगल चरम लक्ष्य है,
जिन्दगी ही हमारी हवन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

द्रौपदी सा दिखा जब कभी जग हमें,
जिन्दगी ही हमारी वसन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

102. सामने दिव्य आलोक साकार था **,** जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई **— English Meaning /** भावार्थ

Before us, the divine light was manifest, our very life became a bow of reverence.
Before us, the divine light was manifest, our very life became a bow of reverence.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
What mystery lay in that command, we know not,
Our very life became a sacred pledge.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
Our very life became a bow of reverence, our very life became a bow of reverence.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
In such a beautiful way did the flowers of happiness bloom,
Our very life became a vibrant garden.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
Our very life became a bow of reverence, our very life became a bow of reverence.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
The radiance that poured spontaneously from Your aura, O Lord,
Our very life became a ray of that light.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
Our very life became a bow of reverence, our very life became a bow of reverence.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
Then You said that the welfare of the world is the ultimate goal,
Our very life became a sacred sacrificial offering.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
Our very life became a bow of reverence, our very life became a bow of reverence.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
Whenever this world appeared to us like Draupadi in distress,
Our very life became the protective garment.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
Our very life became a bow of reverence, our very life became a bow of reverence.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.
Our very life became a bow of reverence, our very life became a bow of reverence.
Before us, the divine light was manifest, before us, the divine light was manifest.

103. सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान , मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

तन की सीमा के आ-पार, बिल्कुल अछोर मेरा प्रसार।
मैं अखिल विश्व का स्वयं मूल, मैं ही कारण मैं ही निदान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं स्वयं धैर्य, मैं हूँ अधीर, मैं स्थूल-सूक्ष्म कारण शरीर।
मैं सुगम अगम हूँ एक साथ, मैं लघुतम हूँ मैं हूँ महान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं आदि-मध्य हूँ और अन्त, मैं ही अनादि मैं हूँ अनन्त।
मैं सुबह और दुपहर मैं ही, मैं ही संध्या दिवसावसान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं चाहूँ तो बढ़ चले सूर्य, मेरी इच्छा से ढले सूर्य।
पाकर मेरा संकेत मात्र, रुक जाता नभ में अंशुमान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं सविता का स्वर्णिम प्रकाश, प्राणों में बहता हुआ श्वाँस।
जन-जन अणु-अणु में विद्यमान, चेतनता ही मेरा प्रमाण॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मेरी इच्छा से बनी सृष्टि, मेरी समष्टि प्यारी समष्टि।
मैं अन्धकार मैं दिशाज्ञान, हर संशय का मैं समाधान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं स्वयं बना नश्वर शरीर, हरने को जग की गहन पीर।
संघर्ष असुरता से करके, करने धरती का परित्राण॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मेरे वंशज! मेरे सपूत!, बढ़ चलो क्रान्ति के अग्रदूत।
पुरुषार्थ तुम्हारा सावधान, लाएगा कल नूतन विहान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

103. सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान **,** मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान — **English Meaning** / भावार्थ

The entire creation is my divine ordinance, I alone am the invisible and the visible.
I am the origin and I myself am the dissolution, then what meaning have my birth and departure?

Far beyond the boundaries of the physical body, utterly limitless is my expanse.
I myself am the root of the entire cosmos, I am the cause and I am the resolution.

The entire creation is my divine ordinance, I alone am the invisible and the visible.
I am the origin and I myself am the dissolution, then what meaning have my birth and departure?

I am patience itself, and I am the restless, I am the gross, the subtle, and the causal body.
I am easily reached and unreachable all at once, I am the smallest and I am the supreme.

The entire creation is my divine ordinance, I alone am the invisible and the visible.
I am the origin and I myself am the dissolution, then what meaning have my birth and departure?

I am the beginning, the middle, and the end, I am the beginningless and I am the infinite.
I am the morning and I am the noon, I am the twilight and the close of day.

The entire creation is my divine ordinance, I alone am the invisible and the visible.
I am the origin and I myself am the dissolution, then what meaning have my birth and departure?

If I so desire, the sun rises and advances, by my will the sun sets.
Receiving merely a gesture from me, the radiant sun halts in the sky.

The entire creation is my divine ordinance, I alone am the invisible and the visible.
I am the origin and I myself am the dissolution, then what meaning have my birth and departure?

I am the golden light of the sun, the breath flowing within all living beings.
Present in every individual and every atom, consciousness itself is my proof.

The entire creation is my divine ordinance, I alone am the invisible and the visible.
I am the origin and I myself am the dissolution, then what meaning have my birth and departure?

By my will was this creation made, my collective whole, my beloved creation.
I am the darkness, I am the guidance of direction, I am the resolution to every doubt.

The entire creation is my divine ordinance, I alone am the invisible and the visible.
I am the origin and I myself am the dissolution, then what meaning have my birth and departure?

I myself assumed this mortal frame, to alleviate the deep agony of the world.
By waging war against demonic forces, to bring deliverance to the earth.

The entire creation is my divine ordinance, I alone am the invisible and the visible.
I am the origin and I myself am the dissolution, then what meaning have my birth and departure?

O my descendants! My worthy children! March forward, pioneers of revolution.
Your vigilant and valiant endeavor will usher in a new dawn tomorrow.

The entire creation is my divine ordinance, I alone am the invisible and the visible.
I am the origin and I myself am the dissolution, then what meaning have my birth and departure?

104. सविता महान आपसे वरदान माँगते   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

निर्बल ये प्राण आज तुम्हें टेर रहे हैं।
शुभ ज्योति को अज्ञान के घन घेर रहे हैं॥
सद्बुद्धि का, सद्ज्ञान का हम भान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥
सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

देना वो शक्ति चेतना को पग नये मिलें।
नव जागरण के जिन्दगी के स्वर नये मिलें॥
गायें सृजन के राग, ऐसी तान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥
सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

तेरी प्रखरता सबकी आत्म-ज्योति पा सके।
सद्भाव का आलोक जिन्दगी में छा सके॥
कल्मष-कषाय, दोषों से परित्राण माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥
सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

कर पायें देव साधना, बलिदान की तप की।
आराधना हम कर सकें पीड़ित दुःखी जन की॥
विमल-विभा, प्रखर-प्रकाश, प्राण माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥
सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

104. सविता महान आपसे वरदान माँगते — **English Meaning** / भावार्थ

O Great Savita, we seek a divine boon from You.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

These fragile souls are calling out to You today.
The dense clouds of ignorance are surrounding the auspicious light.
We seek the awakening of righteous intellect and true wisdom.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

O Great Savita, we seek a divine boon from You.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

Grant us that strength so our consciousness may find new strides.
May life find new melodies of a grand awakening.
We seek such a tune that we may sing the songs of creation.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

O Great Savita, we seek a divine boon from You.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

May everyone's inner soul-light attain Your brilliant intensity.
May the light of goodwill and harmony illuminate our lives.
We seek deliverance from impurities, passions, and flaws.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

O Great Savita, we seek a divine boon from You.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

May we perform the divine practice of sacrifice and penance.
May we worship You by serving the suffering and the distressed.
We seek pure radiance, intense light, and vital life-force.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

O Great Savita, we seek a divine boon from You.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

O Great Savita, we seek a divine boon from You.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

O Great Savita, we seek a divine boon from You.
O Source of Effulgence, we beg for the gift of Your Light.

105. सीख नहीं पाये चादर ओढ़ने का ढंग रे , मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

सीख नहीं पाये चादर ओढ़ने का ढंग रे।
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

हमें मिली चादर उजली मैली कर डाली,
जिधर गये हमने उतनी कालिमा लगा ली।
मैली अब अन्तरंग है, मैला बहिरंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

आओ हर कल्मष मन का सेवा से धो लें,
सबको अपना लें मन से हम सबके हो लें।
सेवा है सच्ची पूजा सेवा सत्संग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

सबका दुःख-दर्द बटाएँ अपना सुख बाँटें,
हृदय-हृदय की खाईं को हँसकर हम पाटें।
किये नहीं तीरथ चाहे गये नहीं गंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

परहित में अपने साधन समय हम लगायें,
मन का हर मैल घुले फिर, पुण्य हम कमाएँ।
हर कोना हो फिर उजला, उजला हर अंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

निर्मल आचरण बनेगा, चमकेगा चिन्तन,
बहुत-बहुत चौड़ा होगा, भावों का आँगन।
नहीं कभी होगी मन की गली कहीं तंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

जीवन में शेष रहेगी, फिर नहीं निराशा,
पल भर आलस्य न होगा फिर कहीं जरा सा।
होगा उत्साह अनोखा, नित नयी उमंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

105. सीख नहीं पाये चादर ओढ़ने का ढंग रे **,** मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे **— English Meaning /** भावार्थ

We could not learn the proper way to drape this sheet of life.
How can any divine color take on a soiled sheet?
We received a pristine white sheet, but we stained it dirty,
Wherever we wandered, we gathered that much darkness.
Now the inner self is soiled, and the outer self is soiled too,
How can any divine color take on a soiled sheet?
Come, let us wash away every blemish of the mind through service,
Let us embrace everyone from the heart and belong to all.
Service is the true worship, service is the holy communion,
How can any divine color take on a soiled sheet?
Let us share the grief and pain of all, and distribute our own joy,
Let us bridge the chasms between hearts with a smile.
Even if we did not go on pilgrimages, or bathe in the sacred Ganges,
How can any divine color take on a soiled sheet?
Let us dedicate our resources and time to the welfare of others,
So every stain of the mind dissolves, and we earn spiritual merit.
Every corner will then become bright, and every part pure,
How can any divine color take on a soiled sheet?
Our conduct will become spotless, our contemplation will shine bright,
The courtyard of our emotions will expand far and wide.
Never again will the narrow lanes of the mind feel confined,
How can any divine color take on a soiled sheet?
No despair will ever remain left in our life,
Not even a trace of laziness will linger for a single moment.
There will be a wondrous enthusiasm, a new joy every day,
How can any divine color take on a soiled sheet?

106. सिहर - सिहर मन तुम्हें पुकारे , प्रभु दर्शन बिन बड़ा क्लेश है [ऑनलाइन ऑडियो सुनें] [ऑनलाइन वीडियो देखें]

.

सिहर-सिहर मन तुम्हें पुकारे, प्रभु दर्शन बिन बड़ा क्लेश है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

मिली झलक थोड़ी सी तेरी, वे क्षण सचमुच अमर हो गए,
आँखों में चुभते रहते हैं, वे सपने जो शेष रह गए।
नयन पुतलियों में अंकित हैं, तेरे नयनों की परछाई,
फिर से वह दर्शन हो कैसे, खोज रही आँखें ललचाई॥
दृष्टि निछावर कर दी तुम पर, दर्शन का अनुदान शेष है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

तेरा वह स्पर्श क्षणिक था, पर वह मन को इतना भाया,
पाँव पखारे जब तेरे प्रभु, हाथों में था प्राण समाया।
अभी पोरुओं में अंकित है, तेरा वह स्पर्श हृदय धन,
वह रोमांच सरस इतना था, डूब गया उसमें ही तन-मन॥
यह जीवन तुममें घुल जाये, केवल यह अरमान शेष है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

कहूँ कहानी कैसे उर की, क्षण-क्षण कथा नयी बनती है,
यादों के बादल में तेरी, प्रतिक्षण नयी झलक मिलती है।
हृदय देश में अंकित है प्रभु, तव पावन पद-चिन्ह सुनहले,
नहीं हटाये हटते मन से, प्रभु तेरे संकेत रूपहले॥
आँसू बनकर बह जाने को, दो क्षण का वह भान शेष है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

माना रहते हो आत्मा में, बनकर दिव्य ज्योति प्रभु तुम ही,
थिरक रहे हो रोम-रोम में, प्राण-चेतना बनकर तुम ही।
और बुद्धि में अंकित है प्रभु, परम तत्त्व तेरी ही झाँकी,
अपनी यह काया भी तो है, हे प्रभु तेरी ही परछाईं॥
जब हम तुमसे तुम हममें हो, दूरी का क्यों भान शेष है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

सिहर-सिहर मन तुम्हें पुकारे, प्रभु दर्शन बिन बड़ा क्लेश है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

106. सिहर - सिहर मन तुम्हें पुकारे , प्रभु दर्शन बिन बड़ा क्लेश है — **English Meaning** / भावार्थ

Trembling with longing, my heart calls out to You; without Your divine vision, Lord, there is immense anguish.
Trembling with longing, my heart calls out to You; without Your divine vision, Lord, there is immense anguish.
To console this restless heart, O Supreme Lord, only Your meditation now remains.

I caught but a fleeting glimpse of You, and those moments truly became immortal,
Yet those unfulfilled dreams that remain continue to prick my eyes.
Imprinted upon the pupils of my eyes is the reflection of Your divine eyes,
How may I behold that vision again? My yearning eyes search for You insatiably.
I have surrendered my entire sight to You; only the grace of Your vision remains to be granted.
To console this restless heart, O Supreme Lord, only Your meditation now remains.

Your touch was but momentary, yet it so deeply enraptured my soul,
When I washed Your holy feet, O Lord, my very life-force seemed gathered in my hands.
Still imprinted upon my fingertips is that touch of Yours, O treasure of my heart,
That ecstatic thrill was so sublime, my entire body and mind drowned within it.
That this life may dissolve completely into You—only this sole desire now remains.
To console this restless heart, O Supreme Lord, only Your meditation now remains.

How do I tell the story of my heart? Moment by moment, a new tale unfolds,
Within the clouds of Your memory, a new glimpse of You appears at every instant.
Imprinted upon the realm of my heart, O Lord, are Your sacred, golden footprints,
Try as I might, they cannot be erased from my mind—those shimmering, silver signs of Yours.
To flow away in the form of tears, only the fleeting awareness of those two moments remains.
To console this restless heart, O Supreme Lord, only Your meditation now remains.

I know You dwell within my soul, O Lord, as the self-effulgent divine light,
You dance in every pore of my being, as the very consciousness of my life.
And imprinted upon my intellect, O Lord, is the vision of Your Supreme Truth,
Even this body of mine, O Lord, is but a shadow of Your divine form.
When I am in You and You are in me, why does any sense of separation still remain?
To console this restless heart, O Supreme Lord, only Your meditation now remains.

Trembling with longing, my heart calls out to You; without Your divine vision, Lord, there is immense anguish.
To console this restless heart, O Supreme Lord, only Your meditation now remains.

107. स्नेह से तुम दीप सी मैं , जल रहे दोनों निरन्तर   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

साँस चलती है निरत पर, साँस की प्रभु! गति तुम्हीं हो।
है अनिश्चित काल गति इस, जन्म की परिणति तुम्हीं को॥
आदि हो प्रति आत्म उद्गम, के तुम्हीं तो चिर अनश्वर।
तुम गगन से मैं धरा सी, चल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

तुम्हीं हो धड़कन हृदय के, चेतना तन में तुम्हारी।
दब गया आभार से उर, वन्दना मन में तुम्हारी॥
भीग कर बोझिल बने हैं, प्यार के रस से करुण स्वर।
प्राण से तुम मैं प्रणय सी, पल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

जल रही बड़वाग्नि उर में, प्रबल झंझावात भी है।
सिहरते तब प्राण केवल, अब प्रकम्पित गात भी है॥
दूर हैं दोनों किनारे, बीच में है काल निर्झर।
तुम क्षितिज से मैं सजल क्षिति, छल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

रूप तव प्रभु! सुदृढ़ हिमगिरि, साधना गोमुख हमारी।
दीप्ति से आभास से तुम, मैं वही आभा तुम्हारी॥
चिर अजेयी प्रिय! तुम्हीं तो, चेतना मय प्रभु अनश्वर।
हिम सदृश तुम नीर सी मैं, गल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

107. स्नेह से तुम दीप सी मैं **,** जल रहे दोनों निरन्तर **— English Meaning /** भावार्थ

You are the oil of love, I am like the lamp, both of us are burning continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp, both of us are burning continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp...
The breath flows incessantly, but O Lord! You are the rhythm of this breath.
Uncertain is the course of time, yet You are the ultimate destiny of this birth.
You are the origin of every soul's source, indeed You are eternally imperishable.
You are like the sky, I am like the earth, both of us are moving continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp, both of us are burning continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp...
You alone are the heartbeat of this heart, the consciousness in this body is Yours.
The heart is overwhelmed with gratitude, and in my mind is Your adoration.
Drenched and heavy have become the tender notes with the nectar of love.
You are like the life-force, I am like love itself, both of us are nurturing continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp, both of us are burning continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp...
A fiery longing burns within the heart, and a powerful tempest rages too.
Then, only the life-force shivered, but now the body also trembles.
Far apart are both the shores, and in between flows the stream of Time.
You are like the horizon, I am like the moist earth, both of us are eluding each other continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp, both of us are burning continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp...
Your form, O Lord, is like the steadfast mountain of snow, and my devotion is like its sacred source.
You are the radiance and the perception, and I am that very glow of Yours.
O eternally unconquerable Beloved! You indeed are the conscious, imperishable Lord.
You are like the ice, I am like the water, both of us are melting continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp, both of us are burning continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp...
You are the oil of love, I am like the lamp, both of us are burning continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp, both of us are burning continuously.
You are the oil of love, I am like the lamp...

108. सुख चाहे यदि नर जीवन का , जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर।
है वही सुमरने योग्य सखा, तू और किसी को याद न कर॥

अस्थिर हैं जग के ठाठ सभी, यदि बिछुड़ गये तो अचरज क्या।
हो लोभ-मोह के वशीभूत, सिर धुन के शोक-विषाद न कर॥
सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर॥

धन-माल अपार बटोर भले, पर इतना ध्यान अवश्य रहे।
अपना घर-बार बसाने को, औरों का घर बरबाद न कर॥
सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर॥

पर निन्दा को तज कर प्रकाश, आदर्श बना निज जीवन को।
सद्ज्ञान प्राप्त कर सज्जन से, दुर्जन से व्यर्थ विवाद न कर॥
सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर॥

सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर।
है वही सुमरने योग्य सखा, तू और किसी की याद न कर॥

108. सुख चाहे यदि नर जीवन का **,** जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर **— English Meaning /** भावार्थ

If you desire the true joy of human life, chant the Lord's name and do not delay in negligence.
He alone is the Friend worthy of remembrance; do not dwell on any other in your heart.

Transient are all the grandeurs of this world; if they slip away, why be surprised?
Subjugated by greed and attachment, do not beat your breast in grief and despair.
If you desire the true joy of human life, chant the Lord's name and do not delay in negligence.

Amass boundless wealth and possessions if you must, but keep this truth ever in mind:
To build your own home and hearth, do not ruin the lives of others.
If you desire the true joy of human life, chant the Lord's name and do not delay in negligence.

Renouncing the slander of others, shed light and make your own life an exemplary ideal.
Seek sacred wisdom from the virtuous, and engage not in futile disputes with the wicked.
If you desire the true joy of human life, chant the Lord's name and do not delay in negligence.

If you desire the true joy of human life, chant the Lord's name and do not delay in negligence.
He alone is the Friend worthy of remembrance; do not dwell on any other in your heart.

109. सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो , देख पायें तुझे वह नयन दीजिए ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए।
पुण्य-परमार्थ पथ पर बढ़ें ये चरण,
जा मिले आपसे दिव्य वर दीजिए॥

तप किया आपने सिद्ध सब कुछ किया,
लोक हित में है सर्वार्थ अर्पित किया।
देव मानव बने, स्वर्ग धरती बने,
पूज्यवर आपने यह प्रण भी किया॥
अब यही चाह है, हे हमारे प्रभो,
आपका अनुसरण हो कृपा कीजिए॥
सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए॥

दिव्य सविता बने, रश्मियाँ बाँटने,
बन गये पुण्य गंगा तपन मेटने।
यों जलाई मशालें तिमिर भेदने,
पुण्य आलोक जग में लगा फैलने॥
व्रत यही ले रहे आज हम भी प्रभो,
लक्ष्य ऊँचा बनायें दिशा दीजिए॥
सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए॥

प्राण में प्रेरणा बन मचलते रहो,
भाव-सम्वेदना बन उछलते रहो।
बुद्धि में दिव्य चिन्तन बनो पूज्यवर,
इस मनुज देह में प्राण भरते रहो॥
हों समर्पित तुम्हारे चरण में प्रभो,
भूल जायें स्वयं को दया कीजिए॥
सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए॥
पुण्य-परमार्थ पथ पर बढ़ें ये चरण,
जा मिले आपसे दिव्य वर दीजिए॥

सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए॥
पुण्य-परमार्थ पथ पर बढ़ें ये चरण,
जा मिले आपसे दिव्य वर दीजिए॥

109. सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो **,** देख पायें तुझे वह नयन दीजिए **— English Meaning /** भावार्थ

> *You have merged into the subtle realm, O our Lord,*
> *Grant us those eyes that we may behold You.*
> *May these feet advance on the path of virtue and selfless service,*
> *And come to merge with You; grant us this divine boon.*
>
> *You performed intense penance and attained all spiritual perfections,*
> *And offered your all for the welfare of the world.*
> *May humans become divine, may heaven descend upon earth,*
> *O revered one, You also took this sacred vow.*
> *Now this is our only desire, O our Lord,*
> *That we may follow in Your footsteps; bestow Your grace.*
> *You have merged into the subtle realm, O our Lord,*
> *Grant us those eyes that we may behold You.*
>
> *You became the divine Sun, to distribute Your rays,*
> *You became the holy Ganges, to quench the scorching heat.*
> *Thus You lit the torches to pierce through the darkness,*
> *And the sacred light began to spread across the world.*
> *Today, we too take this solemn vow, O Lord,*
> *To make our goal lofty; guide our direction.*
> *You have merged into the subtle realm, O our Lord,*
> *Grant us those eyes that we may behold You.*
>
> *Keep stirring within our life-force as divine inspiration,*
> *Keep surging within us as deep emotion and empathy.*
> *Become divine contemplation in our intellect, O revered one,*
> *Keep breathing true life into this human body.*
> *May we be completely surrendered at Your feet, O Lord,*
> *And forget our own self; show us this mercy.*
> *You have merged into the subtle realm, O our Lord,*
> *Grant us those eyes that we may behold You.*
>
> *May these feet advance on the path of virtue and selfless service,*
> *And come to merge with You; grant us this divine boon.*
> *You have merged into the subtle realm, O our Lord,*
> *Grant us those eyes that we may behold You.*
> *May these feet advance on the path of virtue and selfless service,*
> *And come to merge with You; grant us this divine boon.*

110. तजकर अपना रूप प्रभु जी , मैं पावन आकार हो गया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

इतना चिन्तन किया तुम्हारा, तुमसे इतना प्यार हो गया।
भगवन तुमसे प्यार हो गया।
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

एक-एक मिल दो होते हैं, यह तो है इतिहास पुराना।
एक-एक मिल एक हो गया, गणित भला यह किसने जाना॥
हम तुम मिलकर एक हो गये, यह अद्भुत व्यापार हो गया॥
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

तब तक दूर रहे तुम जब तक, द्वैत भाव ने मन को घेरा।
ज्योति तुम्हारी पड़ी दिखाई, जब अद्वैत ने किया बसेरा॥
था अब तक जो निराकार वह, नयनों में साकार हो गया॥
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

भव-बन्धन ने मुझको बाँधा, माया ने प्रतिपल भरमाया।
इस संस्कृति को जानूँ कैसे, जबकि स्वयं को जान न पाया॥
अपने को पहचान सका तब, जब मन पर अधिकार हो गया॥
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

इतना चिन्तन किया तुम्हारा, तुमसे इतना प्यार हो गया।
भगवन तुमसे प्यार हो गया।
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

110. तजकर अपना रूप प्रभु जी **,** मैं पावन आकार हो गया — **English Meaning** / भावार्थ

I contemplated upon You so much, I fell so deeply in love with You.
O Lord, I have fallen in love with You.
Renouncing my own form, O Lord, renouncing my own form, I have become Your sacred manifestation.
O Lord, I have fallen in love with You.

One and one join to become two, this is an ancient history.
One and one joined to become one, who indeed has understood this mathematics?
You and I merged to become one, this wondrous transaction has taken place.
Renouncing my own form, O Lord, renouncing my own form, I have become Your sacred manifestation.
O Lord, I have fallen in love with You.

You remained far away only as long as the sense of duality surrounded my mind.
Your divine light became visible when non-duality made its home within.
That which was formless until now, has manifested before my very eyes.
Renouncing my own form, O Lord, renouncing my own form, I have become Your sacred manifestation.
O Lord, I have fallen in love with You.

Worldly bonds bound me, and illusion deluded me at every moment.
How could I understand this creation, when I could not even know myself?
I could recognize myself only when I gained mastery over my mind.
Renouncing my own form, O Lord, renouncing my own form, I have become Your sacred manifestation.
O Lord, I have fallen in love with You.

I contemplated upon You so much, I fell so deeply in love with You.
O Lord, I have fallen in love with You.
Renouncing my own form, O Lord, renouncing my own form, I have become Your sacred manifestation.
O Lord, I have fallen in love with You.

111. तेरा नूर सबमें समाया हुआ है , ये संसार तेरा बनाया हुआ है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है।

रमा है तू फूलों में मानिन्द बू के,
जगत में तू ही जगमगाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

चमकते हैं दुनियाँ में जो चाँद-सूरज,
उजेला वो तुझसे ही पाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

भलाई बुराई सभी को तू देखे,
नहीं छिपता तुझसे छिपाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

सजा और मजा तू ही देता है सबको,
भरेगा जो जिसने कमाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

सिफारिश न झूठी चलेगी किसी की,
यह वेदों में सबको बताया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

तू है सबका मालिक गरीबों का परवर,
जहाँ कुल तेरा ही बसाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ॥

111. तेरा नूर सबमें समाया हुआ है **,** ये संसार तेरा बनाया हुआ है — **English Meaning** / भावार्थ

Your divine light is enshrined within all,
This universe is created by You.
You dwell in flowers like their fragrance,
In this world, it is You alone who shines resplendent.
Your divine light is enshrined within all,
This universe is created by You.||
Your divine light is enshrined within all, Your divine light is enshrined within all.||

The sun and moon that shine in this world,
Have received their radiance from You alone.
Your divine light is enshrined within all,
This universe is created by You.||
Your divine light is enshrined within all, Your divine light is enshrined within all.||

You witness all, both good and evil,
Nothing remains hidden from You, however much concealed.
Your divine light is enshrined within all,
This universe is created by You.||
Your divine light is enshrined within all, Your divine light is enshrined within all.||

You alone dispense both retribution and joy to all,
Each must reap what they have earned.
Your divine light is enshrined within all,
This universe is created by You.||
Your divine light is enshrined within all, Your divine light is enshrined within all.||

No false advocacy shall work for anyone,
This has been proclaimed to all in the Vedas.
Your divine light is enshrined within all,
This universe is created by You.||
Your divine light is enshrined within all, Your divine light is enshrined within all.||

You are the Lord of all, the nurturer of the poor,
This entire cosmos is established by You.
Your divine light is enshrined within all,
This universe is created by You.||
Your divine light is enshrined within all, Your divine light is enshrined within all.||

112. थोड़ी सी साँसें पायी हैं , इनको नहीं गँवाना है   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है।
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥

घर-परिवार, समाज त्यागकर, घाट-घाट बन-बन भटका।
तन से किया पलायन पर मन, रहा मोह में ही अटका॥
कर्तव्यों का त्याग करे जो, कभी न होता त्यागी है।
कर्म करे परिणाम प्रभु पर, छोड़े वह वैरागी है॥
करने है सब काम मगर मन, उनमें नहीं रमाना है।
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥
थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है॥

राम रसायन पिया कि जिसने, वही मस्त होकर झूमा।
नहीं पराया दीखा कोई, जहाँ-जहाँ भी वह घूमा॥
सभी तरफ उसको अपना ही, घर-परिवार नजर आया।
हर प्राणी में उसे छलकता, प्रभु का प्यार नजर आया॥
मन न राम के रंग में रंगा तो, चोला व्यर्थ रंगाना है॥
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥
थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है॥

कल के लिए न टालो बिल्कुल, जन मंगल की राह चलो।
तपन बहुत फैली है सेवा, की है शीतल छाँह चलो॥
नश्वर सुख के लिए न भागो, यहाँ सुबह से सोने तक।
कर लो तुम सत्कर्म अभी भी, शाम उमर की होने तक।
पुण्य और परमार्थ कमा लो, सुख का यही खजाना है॥
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥
थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है॥

थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है।
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥

112. थोड़ी सी साँसें पायी हैं **,** इनको नहीं गँवाना है **— English Meaning /** भावार्थ

Only a few breaths have you received, do not let them go to waste.
No one knows in which moment, O mortal, you must depart from here.

Renouncing home, family, and society, you wandered from shore to shore and forest to forest.
The body fled, yet the mind remained entangled in worldly attachment.
One who abandons their duties is never a true ascetic.
He who performs his actions and leaves the fruits to the Lord is the true renunciant.
You must perform all your duties, yet never let your mind be lost in them.
No one knows in which moment, O mortal, you must depart from here.
Only a few breaths have you received, do not let them go to waste.

He who drank the divine elixir of Ram swayed in ecstatic bliss.
No one appeared as a stranger to him, wherever he wandered.
Everywhere he looked, he saw only his own home and family.
In every living being, he saw the overflowing love of the Lord.
If the mind is not dyed in the color of Ram, then dyeing the robe is in vain.
No one knows in which moment, O mortal, you must depart from here.
Only a few breaths have you received, do not let them go to waste.

Do not delay until tomorrow, walk the path of the welfare of all.
Great is the scorching heat of suffering; walk as the cool shade of selfless service.
Do not run after fleeting pleasures from dawn until dusk.
Perform noble deeds even now, before the evening of your life sets in.
Earn the wealth of virtue and benevolence, for this alone is the treasure of true happiness.
No one knows in which moment, O mortal, you must depart from here.
Only a few breaths have you received, do not let them go to waste.

Only a few breaths have you received, do not let them go to waste.
No one knows in which moment, O mortal, you must depart from here.

113. तुझे मिला कंचन सा जीवन , तूने उसे गँवाया [ऑनलाइन ऑडियो सुनें] [ऑनलाइन वीडियो देखें]

.

तुझे मिला कंचन सा जीवन, तूने उसे गँवाया।
बना कोयला चन्दन का यूँ, भला कौन सुख पाया?
बता कौन सुख पाया?

सृष्टा का तू बहुत लाड़ला, राजकुँवर कहलाया।
नहीं पिता के कामों में पर, तूने हाथ बँटाया॥
तुझे श्रेष्ठ सन्तान समझकर, काम गया तो सौंपा।
वह भारी दायित्व न बिल्कुल, तूने कभी निभाया॥
हीरा सा अनमोल जनम यह, तू पहचान न पाया।
कंकड़ सा बेमोल समझकर, क्यों उसको ठुकराया?
बता कौन सुख पाया?
तुझे मिला कंचन सा जीवन॥

कभी न ऊँचे आदर्शों का, दीखा तुझे सबेरा।
कभी प्यार ममता करुणा से, भरा नहीं मन तेरा॥
अहंकार की चट्टानें, आ गईं बीज राहों में।
लाभ और लिप्सा ने तुझको, कदम-कदम पर घेरा॥
हर चमकीली लहर देखकर, मन में तू ललचाया।
पानी में बुलबुला बना तू, कौतुक मात्र दिखाया॥
बता कौन सुख पाया?
तुझे मिला कंचन सा जीवन॥

अब भी तू पहचान स्वयं को, तूने जिसे भुलाया।
तू है कौन पुत्र किसका है, और कहाँ से आया?
लक्ष्य कहाँ है राह कौन है, तू यह समझ न पाया।
और यहाँ तू सपनों में ही, अब तक है भरमाया॥
अगर नहीं अब भी विवेक से, तूने कदम बढ़ाया।
तुझे दण्ड देगी कल निश्चय, महाकाल की छाया॥
बता कौन सुख पाया?
तुझे मिला कंचन सा जीवन, तूने उसे गँवाया।
बना कोयला चन्दन का यूँ, भला कौन सुख पाया?
बता कौन सुख पाया?

113. तुझे मिला कंचन सा जीवन , तूने उसे गँवाया — **English Meaning** / भावार्थ

A life like pure gold was given to you, yet you squandered it.
By turning precious sandalwood into charcoal, tell me, what joy did you find?
Tell me, what joy did you find?
You were the beloved of the Creator, called a prince royal.
Yet you never lent a hand in your Father's divine work.
Deeming you the finest child, the sacred task was entrusted to you.
But that heavy responsibility, you never fulfilled at all.
This birth, priceless as a diamond, you failed to recognize.
Deeming it a worthless pebble, why did you cast it aside?
Tell me, what joy did you find?
A life like pure gold was given to you...

You never beheld the dawn of high ideals.
Your heart was never filled with love, tenderness, and compassion.
The massive boulders of ego blocked your path.
Greed and desire surrounded you at every single step.
Seeing every glittering wave, your heart was enticed.
Becoming a mere bubble on water, you only put on a fleeting show.
Tell me, what joy did you find?
A life like pure gold was given to you...

Even now, recognize your own self, whom you have forgotten.
Who are you, whose child are you, and from where have you come?
Where is the goal, which is the path—you could not understand.
And here, lost in mere dreams, you remain deluded till now.
If even now you do not take steps guided by wisdom,
Tomorrow, surely, the shadow of Mahakaal will punish you.
Tell me, what joy did you find?
A life like pure gold was given to you, yet you squandered it.
By turning precious sandalwood into charcoal, tell me, what joy did you find?
Tell me, what joy did you find?

114. तू केवल रखवाला , तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

खाली हाथ गये सब जैसे, खाली हाथों आये।
गया सिकंदर भी धरती से, सिर्फ हाथ फैलाये॥
दल-दल में फँस गया अगर तो, मुक्ति नहीं पायेगा।
लगा रहेगा इसी तरह से, तेरा आना-जाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

तुझे मिली जो फसल क्यारियाँ, वे हैं तुझे रखानी।
उन्हें निराना है देना बस, उन्हें खाद और पानी॥
मगर समझ बैठा तू उनका, अरे स्वयं को स्वामी।
मत कर इनसे मोह बावले, तेरा नहीं खजाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

जो सारी संपदा और, सुख-साधन तूने पाया।
ज्ञान-कोष जो बड़े जतन से, तूने यहाँ जुटाया॥
सदुपयोग उन सबका कितना, किया प्रभु देखेंगे।
वहाँ नहीं चल पायेगा फिर, झूठा कोई बहाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

सबको अपना समझ सभी का, है दुःख-दर्द बाँटना।
सुख औरों को बाँट, स्वयं भी सुख-उमंग पा जाना॥
यही स्नेह-सद्भाव मधुरता, हृदयों में भरनी है।
तभी तुम्हारे जीवन का फिर, होगा सफर सुहाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

कियेअगर सत्कर्म लोकहित, साथ वही जायेगा।
युग उनका सम्मान करेगा, आत्म-तोष पायेगा॥
वे जायेंगे जहाँ वहाँ पर, सगे स्वजन सब होंगे।
नहीं अजाना होगा कोई, ना कोई बेगाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

114. तू केवल रखवाला **,** तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे — **English Meaning** / भावार्थ

You are merely a guardian, nothing will go with you.
Nothing will go with you.

Just as all arrived empty-handed, empty-handed they departed.
Even Alexander departed from this earth, with only his hands stretched open.
If you get trapped in this quicksand, you will never find liberation.
And in this very way, your cycle of coming and going will continue.

You are merely a guardian, nothing will go with you.
Nothing will go with you.

The crops and garden beds you received, you are only meant to tend them.
You must weed them, and give them nourishment and water.
But you have mistakenly deemed yourself, oh, to be their master.
Do not be attached to them, O foolish one, this treasure is not yours.

You are merely a guardian, nothing will go with you.
Nothing will go with you.

All the wealth and means of comfort that you have acquired,
The treasury of knowledge that you have gathered here with great effort,
How well you utilized them all, the Lord will surely see.
There, no false excuse of yours will ever work.

You are merely a guardian, nothing will go with you.
Nothing will go with you.

Embrace everyone as your own, and share the grief and pain of all.
Distribute happiness to others, and find joy and enthusiasm within yourself.
This very affection, goodwill, and sweetness must be filled in every heart.
Only then will the journey of your life become beautiful and pleasant.

You are merely a guardian, nothing will go with you.
Nothing will go with you.

If you performed noble deeds for the welfare of all, only those will accompany you.
The ages will honor them, and you will attain supreme self-contentment.
Wherever those deeds go, everyone there will be your own kin.
No one will be a stranger there, nor will anyone be alienated.

You are merely a guardian, nothing will go with you.
Nothing will go with you.

115. तुम्हारा देगा सब जग साथ [ऑनलाइन ऑडियो सुनें] [ऑनलाइन वीडियो देखें]

.

तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

तुम्हारे मन में यदि संकल्प, तुम्हारे पग में यदि विश्वास।
तुम्हारे मन बने यदि भूमि, तुम्हारी अभिलाषा आकाश॥
चलेगा भाग्य पकड़कर हाथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

फूल से तुम्हें नहीं यदि मोह, शूल से हुए न यदि भयभीत।
एक सा तुम्हें प्राप्ति या त्याग, सुनिश्चित लोगे तुम जग जीत॥
मनुज के बन जाओगे नाथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

जिन्हें है हुई न उसकी चाह, सिद्धि रहती है उनके पास।
किन्तु जो रहते उनके दास, सदा वे रहते बे न निराश॥
व्रती का नहीं झुकेगा माथा, तुम्हारा देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

निरन्तर रहते जो गतिशील, न रुकते बाधाओं के बीच।
उन्हीं का गाता यह जग गाथ, तुम्हारी देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

115. तुम्हारा देगा सब जग साथ — **English Meaning** / भावार्थ

The entire world will walk with you, the entire world will walk with you.
The entire world will walk with you, the entire world will walk with you.

If there is resolve in your mind, if there is faith in your steps.
If your mind becomes the earth, and your aspiration the sky.
Destiny will walk holding your hand, the entire world will walk with you.
The entire world will walk with you, the entire world will walk with you.

If you have no attachment to the flower, if you are not frightened by the thorn.
If attainment and renunciation are one to you, you will surely conquer the world.
You will become the guardian of humanity, the entire world will walk with you.
The entire world will walk with you, the entire world will walk with you.

Those who have no desire for success, perfection abides with them.
But those who remain slaves to desires, they are always left in despair.
The head of the one bound by a vow shall never bow, the entire world will walk with you.
The entire world will walk with you, the entire world will walk with you.

Those who remain constantly in motion, who do not stop amidst obstacles.
Of them alone does this world sing the saga, the entire world will walk with you.
The entire world will walk with you, the entire world will walk with you.

116. तुम्हारे दिव्य - दर्शन की , मैं इच्छा ले के आयी हूँ   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ।
पिला दो ज्ञान का अमृत, पिपासा ले के आयी हूँ॥

रतन अनमोल लाने वाले, लाते भेंट को तेरी।
प्रभो मैं आँसुओं की मंजुमाला, ले के आयी हूँ॥
पिला दो ज्ञान का अमृत, पिपासा ले के आयी हूँ।
तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ॥

जगत के रंग सब फीके, तू अपने रंग में रंग दे।
मैं अपना यह महा बदरंग बाना, ले के आयी हूँ॥
पिला दो ज्ञान का अमृत, पिपासा ले के आयी हूँ।
तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ॥

प्रकाशानन्द हो जाये, प्रभु अन्धेरी कुटिया में।
तुम्हारा आसरा विश्वास, आशा ले के आयी हूँ॥
पिला दो ज्ञान का अमृत, पिपासा ले के आयी हूँ।
तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ॥
मैं इच्छा ले के आयी हूँ, मैं इच्छा ले के आयी हूँ।
तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ॥

116. तुम्हारे दिव्य **-** दर्शन की **,** मैं इच्छा ले के आयी हूँ **— English Meaning /** भावार्थ

With the yearning for Your divine vision, I have come.
Make me drink the nectar of wisdom, for I have come bearing a deep thirst.
Those who bring priceless gems, bring them as offerings to You.
O Lord, I have come bearing a beautiful garland of my tears.
Make me drink the nectar of wisdom, for I have come bearing a deep thirst.
With the yearning for Your divine vision, I have come.
All the colors of this world are faded, dye me in Your own divine hue.
I have come bearing this deeply colorless and stained garb of mine.
Make me drink the nectar of wisdom, for I have come bearing a deep thirst.
With the yearning for Your divine vision, I have come.
May the bliss of light illuminate, O Lord, my dark and humble cottage.
I have come carrying Your shelter, my faith, and my hope.
Make me drink the nectar of wisdom, for I have come bearing a deep thirst.
With the yearning for Your divine vision, I have come.
I have come with this yearning, I have come with this yearning.
With the yearning for Your divine vision, I have come.

117. तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे , तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे [ऑनलाइन ऑडियो सुनें] [ऑनलाइन वीडियो देखें]

.

तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे॥

हमें स्वार्थ वैभव लुभाता नहीं है,
तुम्हारे बिना कुछ सुहाता नहीं है।
तुम्हें जो रुचेगा वही हम करेंगे॥
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे॥

हमें ज्ञान दो लक्ष्य पहचान पायें,
हमें शक्ति दो तैर कर पार जायें।
तुम्हारे निकट हम पहुँच कर रहेंगे॥
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे॥

भटकते हुओं को सही हम दिशा दें,
सिसकते हुओं को फिर से हँसा दें।
यही साधना उम्र भर हम करेंगे॥
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे॥

करें स्वर्ग या मुक्ति की कामना क्यों?
करें मान या धन की याचना क्यों?
तुम्हीं प्राण धन हो तुम्हीं को वरेंगे॥
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे।
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे॥

117. तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे **,** तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे **— English Meaning /** भावार्थ

We are Yours, O Lord, and Yours we shall remain,
For Your sake, we shall endure all things.
We exist for You, and Yours we shall remain,
We are Yours, O Lord, and Yours we shall remain॥
Selfish desires and worldly grandeur do not tempt us,
Without You, nothing brings delight to our soul.
Whatever pleases You, that alone we shall do॥
We exist for You, and Yours we shall remain,
For Your sake, we shall endure all things.
We are Yours, O Lord, and Yours we shall remain॥
Grant us wisdom that we may recognize our ultimate goal,
Grant us strength to swim across this worldly ocean.
We shall surely reach close to You॥
We exist for You, and Yours we shall remain,
For Your sake, we shall endure all things.
We are Yours, O Lord, and Yours we shall remain॥
May we show the right path to those who wander,
May we bring smiles back to those who weep.
This is the devotion we shall practice throughout our lives॥
We exist for You, and Yours we shall remain,
For Your sake, we shall endure all things.
We exist for You, and Yours we shall remain॥
Why should we desire heaven or liberation?
Why should we beg for honor or wealth?
You alone are our life's true treasure, You alone we shall choose॥
We exist for You, and Yours we shall remain,
For Your sake, we shall endure all things.
We are Yours, O Lord, and Yours we shall remain.
We exist for You, and Yours we shall remain॥

118. तुम्हें ईश्वर मिलेगा , यदि सरल मन हो तुम्हारा ही   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥

भरा हो भाव तो भगवन् तुम्हें हर पल मिलेगा ही।
सहज आनन्द से भरपूर अन्तस्तल मिलेगा ही॥
अखिल ब्रह्माण्ड में हर ओर वह बिखरा हुआ ही है।
उसी की क्रान्ति से कण-कण यहाँ बिखरा हुआ ही है॥
दिखेगा वह अगर मैला न दर्पण हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
तुम्हें ईश्वर मिलेगा॥

हिमाच्छादित शिखर में नीर-निर्झर में वही तो है।
नदी की हर लहर में और सागर में वही तो है॥
वही है बादलों से झर रही जीवन-सुधा में भी।
वही है तरु-लताओं की असीमित सम्पदा में भी॥
तुरत वह आयेंगे सच्चा निमंत्रण हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
तुम्हें ईश्वर मिलेगा॥

उसी से सूर्य आलोकित सदा होता ही रहता है।
वही उद्भव, उसी में विश्व लय होता ही रहता है॥
नियंत्रण है उसी का पूर्ण धरती की धुरी पर भी।
कि ऋतुएँ नाचती रहतीं उसी की बाँसुरी पर भी॥
दिखेगा वह स्वयं पर यदि नियंत्रण हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
तुम्हें ईश्वर मिलेगा॥

हवा को ताप को हमने कभी देखा नहीं अब तक।
मगर उसकी हमें अनुभूति तो होती रही अब तक॥
न ईश्वर भी नयन का, और दर्शन का विषय ही है।
अरे भगवान तो अनुभूति का, मन का विषय ही है॥
न मन विचलित अनास्था से किसी क्षण हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा॥

118. तुम्हें ईश्वर मिलेगा **,** यदि सरल मन हो तुम्हारा ही — **English Meaning** / भावार्थ

You shall find God, if only your mind is simple and pure.
If your heart is tender with spontaneous empathy.
Filled with devotion, you will surely find the Divine at every moment.
Your innermost self will surely be filled with effortless bliss.
Throughout the entire universe, He is scattered everywhere.
By His divine splendor, every single particle here is illuminated.
He will be visible, if only your own mirror is not soiled.
If your heart is tender with spontaneous empathy.
You shall find God, if only your mind is simple and pure.
You shall find God.

In the snow-capped peaks and the flowing streams, He alone resides.
In every wave of the river and in the ocean, He alone resides.
He is also in the nectar of life raining down from the clouds.
He is also in the boundless wealth of trees and vines.
He will come instantly, if only your invitation is true and sincere.
If your heart is tender with spontaneous empathy.
You shall find God, if only your mind is simple and pure.
You shall find God.

By Him alone, the sun is forever illuminated.
He is the origin, and in Him, the universe is constantly dissolved.
His complete control is also upon the axis of the earth,
So that the seasons keep dancing to the tune of His flute.
He will reveal Himself, if only you have control over your own self.
If your heart is tender with spontaneous empathy.
You shall find God, if only your mind is simple and pure.
You shall find God.

We have never seen the wind or the heat till now,
Yet we have always felt their presence until now.
God, too, is not an object of the physical eyes or sight,
Oh, the Divine is a matter of inner experience and the heart.
May your mind never waver with disbelief at any moment,
If your heart is tender with spontaneous empathy.
You shall find God, if only your mind is simple and pure.
If your heart is tender with spontaneous empathy.
You shall find God.

119. तुम्हीं हो प्राण हम सबके , हमारी चेतना हो तुम ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम।
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम॥

बताओ चेतना कैसे, किसी तन से अलग होगी?
सुकोमल भावना कैसे, सरल मन से अलग होगी?
करें कैसे विदा वे स्वर, तुम्हारी प्रेरणाओं के?
थकन में जो मिले तुमसे, सुखद झोंके हवाओं के॥
बिछुड़ सकते भला कैसे, हमारी कामना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम।
तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम॥

हमारी हर प्रगति हर कार्य में, तुम ही समाए हो।
कि संकट में सुरक्षा चक्र लेकर, दौड़ आये हो॥
दिखाया लक्ष्य तुमने ही, तुम्हीं ने राह बतलाई।
हमें पतवार दी तुमने, जलधि की थाह बतलाई॥
हमारे साध्य औ साधन, तुम्हीं हो साधना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम।
तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम॥

कदम जब डगमगाए थे, तुम्हीं ने तब सँभाला था।
अँधेरे मोड़ पर हमको, मिला तुमसे उजाला था॥
चलें, चलते रहें यह प्रेरणा, तुमने जगाई थी।
हृदय में धार करुणा की, तुम्हीं ने तो बहाई थी॥
हमारी दृष्टि हो तुम ही, सहज सम्वेदना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम।
तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम॥

तुम्हारे स्नेह की सिहरन, सदा अनुभव करेंगे हम।
तुम्हारी प्रेरणा-पुलकन, सदा अनुभव करेंगे हम॥
मिलेगी जब कभी उलझन, तुम्हें फिर से पुकारेंगे।
तुम्हारे कार्य पथ में हम, स्वयं सर्वस्व वारेंगे॥
हमारे हर भविष्यत की, सुखद संकल्पना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम।
तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम॥

119. तुम्हीं हो प्राण हम सबके **,** हमारी चेतना हो तुम **— English Meaning** / भावार्थ

You are the very life-breath of us all, you are our consciousness.
How can we distance you from our heart, when you are the very feeling of our heart?
Tell us, how can consciousness ever be separated from the body?
How can a tender emotion ever be parted from a simple mind?
How can we bid farewell to those melodies of your inspiration?
Which we received from you in our weariness, like soothing gusts of wind.
How indeed can we ever be parted from you, when you are our ultimate desire?
How can we distance you from our heart, when you are the very feeling of our heart?
You are the very life-breath of us all, you are our consciousness.

In our every progress and every action, you alone are permeated.
In times of crisis, you came running with a protective shield.
You alone showed us the goal, you alone pointed out the path.
You gave us the oar, and taught us to measure the depths of the ocean.
You are our goal, you are our means, and you are our spiritual practice.
How can we distance you from our heart, when you are the very feeling of our heart?
You are the very life-breath of us all, you are our consciousness.

When our steps faltered, it was you who held and supported us.
At the dark turns of life, we received light from you.
To walk, and to keep on walking—this inspiration was awakened by you.
It was you who made the stream of compassion flow within our hearts.
You alone are our vision, you are our innate empathy.
How can we distance you from our heart, when you are the very feeling of our heart?
You are the very life-breath of us all, you are our consciousness.

The thrill of your affection, we shall always experience.
The joyous quiver of your inspiration, we shall always experience.
Whenever we encounter confusion, we shall call upon you again.
On the path of your divine work, we shall sacrifice our very all.
You are the blissful vision of our entire future.
How can we distance you from our heart, when you are the very feeling of our heart?
You are the very life-breath of us all, you are our consciousness.
How can we distance you from our heart, when you are the very feeling of our heart?

120. तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ तुम , और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ तुम,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं खुशी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा,
गा-गाकर सुनाऊँगा॥
तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब॥

मानता हूँ ठोकरें तुमने सदा खाई,
जिन्दगी के दाँव में हारे सदा पाई।
बिजलियाँ दुःख की निराशा की सदा टूटी,
मन गगन पर वेदना की बदलियाँ छाई॥
पोंछ दूँगा मैं तुम्हारे अश्रु गीतों से,
तुम सरीखे बेसहारों का सहारा हूँ।
मैं तुम्हारे घाव धो मरहम लगाऊँगा॥
मैं विजय के गीत गा-गा कर सुनाऊँगा।
गा-गाकर सुनाऊँगा॥

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं खुशी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा,
गा-गाकर सुनाऊँगा॥
तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब॥

खा गई इन्सानियत को भूख यह भूखी,
स्नेह-ममता को गई पी प्यास यह सूखी।
जानवर भी पेट का साधन जुटाते हैं,
जिन्दगी का हक नहीं है रोटियाँ रूखी॥
और कुछ माँगो, हँसी माँगो खुशी माँगो,
खो गये हो दे रहा तुमको इशारा हूँ।
आज जीने की कला तुमको सिखाऊँगा॥
जिन्दगी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा॥
गा-गाकर सुनाऊँगा॥

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं खुशी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा,
गा-गाकर सुनाऊँगा॥

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं खुशी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा,
गा-गाकर सुनाऊँगा॥
तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब॥

120. तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ तुम **,** और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ **— English Meaning /** भावार्थ

Do not be afraid, nor shed any tears,
Whether anyone else is there or not, I am yours.
I will sing songs of joy to you,
Singing them to you, I will sing them to you.
Do not be afraid, nor shed any tears now.

I know you have always stumbled and suffered blows,
In the gambles of life, you have always met defeat.
Lightnings of sorrow and despair have always struck,
And clouds of agony have shrouded the sky of your mind.
I will wipe away your tears with my songs,
I am the refuge for the helpless ones like you.
I will wash your wounds and apply healing balm.
I will sing songs of victory to you,
Singing them to you, I will sing them to you.
Do not be afraid, nor shed any tears now,
Whether anyone else is there or not, I am yours.
I will sing songs of joy to you,
Singing them to you, I will sing them to you.
Do not be afraid, nor shed any tears now.

This ravenous hunger has devoured humanity,
This parched thirst has swallowed love and affection.
Even beasts gather means to fill their bellies,
Dry bread alone is not the true right of life.
Ask for something more, ask for laughter, ask for joy,
You are lost, and I am giving you a guiding sign.
Today, I will teach you the art of living.
I will sing songs of life to you,
Singing them to you, I will sing them to you.
Do not be afraid, nor shed any tears now,
Whether anyone else is there or not, I am yours.
I will sing songs of joy to you,
Singing them to you, I will sing them to you.
Do not be afraid, nor shed any tears now,
Whether anyone else is there or not, I am yours.
I will sing songs of joy to you,
Singing them to you, I will sing them to you.
Do not be afraid, nor shed any tears now.

121. तूने हमें जनम दिया , पालन कर रही हो तुम [ऑनलाइन ऑडियो सुनें] [ऑनलाइन वीडियो देखें]

.

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तूने हमें जनम दिया, पालन कर रही हो तुम।
तुमसे ही पाते प्राण हम, कष्टों को हर रही हो तुम॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी जहान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, हो रही हो विद्यमान॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
हे माँ! हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

121. तूने हमें जनम दिया **,** पालन कर रही हो तुम **— English Meaning /** भावार्थ

> *Om, the Earth, the Sky, and the Heavens. We meditate upon the supreme, adorable splendor of the divine Creator. May that divine light illuminate our intellect.*
> *Om, the Earth, the Sky, and the Heavens. We meditate upon the supreme, adorable splendor of the divine Creator. May that divine light illuminate our intellect.*
> *You have given us birth, and You are nurturing us.*
> *From You alone we receive our life-breath, and You dispel all our sufferings.*
> *Om, the Earth, the Sky, and the Heavens. We meditate upon the supreme, adorable splendor of the divine Creator. May that divine light illuminate our intellect.*
> *Your magnificent, radiant splendor pervades the entire universe.*
> *In every single object of creation, You are eternally present.*
> *Om, the Earth, the Sky, and the Heavens. We meditate upon the supreme, adorable splendor of the divine Creator. May that divine light illuminate our intellect.*
> *Upon You alone we meditate, and we pray for Your grace.*
> *O Mother! Guide our intellect upon the path of righteousness.*
> *Om, the Earth, the Sky, and the Heavens. We meditate upon the supreme, adorable splendor of the divine Creator. May that divine light illuminate our intellect.*

122. वन्दें उनके पद की धूल   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

जिनके मन मानस में से, करुणा का निर्मल झरना झरता।
जो कल-कल सुमधुर ध्वनि से, दिक्मण्डल में अमृत भरता॥
ऊसर प्यासे भूखण्डों में, उपजाता सुन्दर हरियाली।
अगणित जल-थल चर जीवों को, जीवन देता, प्रमुदित करता॥
नन्दन वन सा शीतल फूल, नन्दन वन सा शीतल फूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

दुःख औरों का देख दया से, भर आती है जिनकी छाती।
तृषित जनों को शीतल करती, जिनकी वाणी रस बरसाती॥
टिम-टिम जिनका जीवन दीपक, तिल-तिल निश दिन जलता रहता।
जनता जिनकी चिनगारी के, नीचे अपना पथ लख पाती॥
जिनका जीवन सुरभित फूल, जिनका जीवन सुरभित फूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

खुद तपते हैं किन्तु दूसरों, का अन्तःस्थल शीतल करते।
खुद दुःख सहते रहते लेकिन, औरों की पीड़ाएँ हरते॥
भिक्षुक पर कुबेर से दानी, अपमानित सुरपति से मानी।
जिनकी ज्ञानमयी गंगा में, डुबकी लेकर जग-जन तरते॥
जिनको प्रिय है शूल बबूल, जिनको प्रिय है शूल बबूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
जिनको प्रिय है शूल बबूल, जिनको प्रिय है शूल बबूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥
जिनका जीवन सुरभित फूल, जिनका जीवन सुरभित फूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

122. वन्दें उनके पद की धूल — **English Meaning** / भावार्थ

I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.

From the lake of whose mind, a pure spring of compassion flows.
Which, with its sweet murmuring melody, fills the entire horizon with nectar.
In barren, thirsty lands, it nurtures beautiful greenery.
To countless creatures of land and water, it grants life and fills them with joy.
Like a cool flower of the celestial garden, like a cool flower of the celestial garden.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.

Seeing the grief of others, whose heart overflows with compassion.
Cooling the thirsty souls, whose speech rains divine nectar.
Whose life-lamp flickers, burning bit by bit, day and night.
By whose glowing spark, the people find their path.
Whose life is a fragrant flower, whose life is a fragrant flower.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.

They burn in austerity themselves, yet soothe the inner hearts of others.
They endure suffering themselves, yet take away the pain of others.
To a beggar, more generous than the lord of wealth; though insulted, more dignified than the king of gods.
In whose Ganges of wisdom, taking a dip, the worldly souls cross over.
To whom even thorns and sharp briers are dear, to whom even thorns and sharp briers are dear.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
To whom even thorns and sharp briers are dear, to whom even thorns and sharp briers are dear.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
Whose life is a fragrant flower, whose life is a fragrant flower.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.
I revere the dust of their feet, I revere the dust of their feet.

123. विचार लो कि मर्त्य हो , न मृत्यु से डरो कभी   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।

हुई न यों सुमृत्यु तो, वृथा मरे वृथा जिये,
मरा नहीं वही कि जो, जिया न आपके लिए।
यही पशु प्रवृत्ति है, कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।

क्षुधार्त रन्तिदेव ने, दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया, परार्थ अस्थि जाल भी।
शरीर माँस भी दिया, परार्थ शिवि नरेश ने,
शरीर चर्म दे दिया, सहर्ष वीर कर्ण ने॥
अनित्य देह के लिए, अनादि जीव क्या डरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।

सहानुभूति चाहिए, महा विभूति है यही,
वशीकृता सदैव है, बनी हुई स्वयं मही।
मनुष्य मात्र बन्धु है, यही बड़ा विवेक है,
प्रमाण-भूत वेद है, पिता प्रसिद्ध एक है॥
अनर्थ है कि बन्धु ही, न बन्धु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।

चलो अभीष्ट मार्ग में, सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति विघ्न जो पड़े, उन्हें धकेलते हुए।
किसी से द्वेष हो नहीं, सभी से प्रेम भाव हो,
हृदय सभी से हों मिले, नहीं कहीं दुराव हो॥
तभी समर्थ भाव है कि, तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी॥
याद जो करें सभी, याद जो करें सभी॥

123. विचार लो कि मर्त्य हो **,** न मृत्यु से डरो कभी — **English Meaning** / भावार्थ

Reflect and realize that you are mortal, never fear death,
But die in such a way, that you are remembered by all.
If one does not attain such a noble death, they died in vain and lived in vain,
He alone does not truly die, who did not live only for himself.
For it is a beastly nature to graze only for oneself,
He alone is truly human, who dies for the sake of another human.

Reflect and realize that you are mortal, never fear death,
But die in such a way, that you are remembered by all.

The starving King Rantidev gave away even the plate of food in his hands,
And Sage Dadhichi offered his entire skeletal frame for the welfare of others.
King Shibi offered his own body's flesh for the sake of another,
And the brave hero Karna joyfully surrendered his own protective skin.
For this transient body, why should the eternal soul ever fear?
He alone is truly human, who dies for the sake of another human.

Reflect and realize that you are mortal, never fear death,
But die in such a way, that you are remembered by all.

Empathy is what is needed, for this is the greatest treasure,
By this, the earth itself remains forever captivated and subservient.
That every human is a brother is the greatest wisdom,
The Vedas stand as proof, and the renowned Father of all is One.
It is a great tragedy if a brother does not dispel the suffering of a brother,
He alone is truly human, who dies for the sake of another human.

Reflect and realize that you are mortal, never fear death,
But die in such a way, that you are remembered by all.

Walk upon your chosen path, playing joyfully,
Pushing aside whatever calamities and obstacles may fall.
Let there be no hatred toward anyone, let there be love for all,
Let all hearts be united, let there be no division or distance anywhere.
Only then is there true capability, when one redeems others while redeeming oneself,
He alone is truly human, who dies for the sake of another human.

Reflect and realize that you are mortal, never fear death,
But die in such a way, that you are remembered by all.

Reflect and realize that you are mortal, never fear death,
But die in such a way, that you are remembered by all.

That you are remembered by all, that you are remembered by all.

124. यह जीवन पुष्प समर्पित है , शुभ चरणों के अर्चन में   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

लय-छन्दों में, करूँ असीमित, की कैसे मनुहार।
अमर रूप को भेंटूँ कैसे, क्षण भंगुर उपहार॥
हुए मूक स्वर, वंदन में, शुभ चरणों के अर्चन में।
हुए मूक स्वर, वंदन में, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

मृगमय नयनों से मैं कैसे, देखूँ तेरी प्रभुता।
छू सकती असीम को कैसे, जड़ काया की लघुता॥
सचमुच बहुत, अकिंचन मैं, शुभ चरणों के अर्चन में।
सचमुच बहुत, अकिंचन मैं, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

काँप रहे मन वीणा के स्वर, कैसे तुम्हें बुलाऊँ।
विकल वेदना अपने उर की, आँसू में छलकाऊँ॥
भाव भरे बस रुदन में, शुभ चरणों के अर्चन में।
भाव भरे बस रुदन में, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

तप्त हृदय के उर मरुथल में, बनो प्रभु रस-धारा।
बरस उठे मेरा मन सावन, पा कर प्रेम तुम्हारा॥
चिर आशा मेरे मन में है, शुभ चरणों के अर्चन में।
चिर आशा मेरे मन में है, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

तेरी ज्योति जले अन्तर में, फैले चिर उजियारा।
ज्योतिर्मय तुमसे ही ज्योतित, हो मेरा जग सारा॥
लगे लगन प्रभु चरणन में, शुभ चरणों के अर्चन में।
लगे लगन प्रभु चरणन में, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित हो, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित हो, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित हो, शुभ चरणों के अर्चन में॥

124. यह जीवन पुष्प समर्पित है **,** शुभ चरणों के अर्चन में **— English Meaning /** भावार्थ

> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *Through rhythm and meter, how do I entreat the Limitless One?*
> *How do I present a transient gift to Your immortal form?*
> *My voice falls silent in adoration, in worship at Your auspicious feet.*
> *My voice falls silent in adoration, in worship at Your auspicious feet.*
> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *With these mortal eyes, how can I behold Your divine majesty?*
> *How can the insignificance of this inert body touch the Infinite?*
> *Truly, I am utterly destitute, in worship at Your auspicious feet.*
> *Truly, I am utterly destitute, in worship at Your auspicious feet.*
> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *The notes of my heart's lute are trembling, how do I call upon You?*
> *Let the restless agony of my heart overflow in tears.*
> *My devotion is expressed only in weeping, in worship at Your auspicious feet.*
> *My devotion is expressed only in weeping, in worship at Your auspicious feet.*
> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *In the desert of my scorched heart, O Lord, become a stream of nectar.*
> *May my mind rain like the monsoon, receiving Your divine love.*
> *This eternal hope dwells in my heart, in worship at Your auspicious feet.*
> *This eternal hope dwells in my heart, in worship at Your auspicious feet.*
> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *This flower of life is offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *May Your light burn within my soul, spreading eternal radiance.*
> *O Luminous One, may my entire world be illuminated by You alone.*
> *May my soul be deeply attached to Your feet, in worship at Your auspicious feet.*
> *May my soul be deeply attached to Your feet, in worship at Your auspicious feet.*
> *May this flower of life be offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *May this flower of life be offered, in worship at Your auspicious feet.*
> *May this flower of life be offered, in worship at Your auspicious feet.*

125. यह करुणा की धार , सूखने मत देना   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

बहुत तेज तूफान, घुमड़कर आया है।
धरा-गगन में, अन्धकार गहराया है॥
नाव बीच मझधार, डूबने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥
यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

एक प्रभू की सभी, सगी सन्तानें हैं।
सभी एक अनुपम, माला के दाने हैं॥
यह अमूल्य गलहार, टूटने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥
यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

हम सबके व्यवहार, कटीले कठोरे हैं।
हृदय मधुरता बिना, रेत के टीले हैं॥
सरल विमल व्यवहार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥
यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

सम्वेदना जगी तो, जग लहराएगा।
स्वर्गिक वातावरण, धरा पर छाएगा॥
सतयुग-सा संसार, लूटने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥
यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

125. यह करुणा की धार , सूखने मत देना — **English Meaning** / भावार्थ

Do not let this stream of compassion dry up.
Do not let love for every single soul dry up.

A very fierce storm has come swirling in.
Across the earth and sky, a deep darkness has spread.
Do not let the boat sink in the middle of the stream.
Do not let love for every single soul dry up.

Do not let this stream of compassion dry up.
Do not let love for every single soul dry up.

We are all the true children of the one Lord.
We are all beads of one exquisite garland.
Do not let this priceless necklace break apart.
Do not let love for every single soul dry up.

Do not let this stream of compassion dry up.
Do not let love for every single soul dry up.

Our behaviors have become thorny and harsh.
Without sweetness, our hearts are like mounds of sand.
Do not let simple and pure conduct dry up.
Do not let love for every single soul dry up.

Do not let this stream of compassion dry up.
Do not let love for every single soul dry up.

If empathy awakens, the world will bloom with joy.
A heavenly atmosphere will envelop the earth.
Do not let this Golden Age-like world be plundered.
Do not let love for every single soul dry up.

Do not let this stream of compassion dry up.
Do not let love for every single soul dry up.

Do not let this stream of compassion dry up.
Do not let love for every single soul dry up.

126. युग ऋषिवर हे , जीवन का आधार तुम्हारा नाम है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

नहीं चाहिए मान प्रतिष्ठा, नहीं चाहिए माया।
रहे तुम्हारे लिए समर्पित, सब धन-मन यह काया॥
ओ तेरे, चरणों में ही विश्राम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

जब से मन के अन्तरतम में, सविता तेज समाए।
तब इस काया के कण-कण में, दैवी ओज जगाए॥
ओ तू ही, महातेज का धाम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

तुमने सबको गायत्री माँ, का पयपान कराया।
यज्ञ-पिता की विमल गोद में, है सबको बैठाया॥
ओ अब तो, लहर चली अभिराम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

तुमने ऋषियों की परिपाटी, को जीवन्त बनाया।
साथ तुम्हारे रहकर हमने, नाथ सभी कुछ पाया॥
ओ अब तो, आराधन निष्काम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

तुमने जीवन की धारा में, ब्रह्मतेज विकसाया।
जिसने भी यह पथ अपनाया, जीवन का फल पाया॥
ओ तू ही, महाकाल श्रीराम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

126. युग ऋषिवर हे **,** जीवन का आधार तुम्हारा नाम है — **English Meaning /** भावार्थ

O great Sage of the Era, Your name is the foundation of my life.
Now, the sole purpose of my life is Your divine work.

I desire neither honor nor prestige, nor do I want worldly illusion.
May all my wealth, mind, and this body remain dedicated to You.
Oh, in Your lotus feet alone lies my eternal rest.

O great Sage of the Era, Your name is the foundation of my life.
Now, the sole purpose of my life is Your divine work.

Ever since the radiant glow of Savita entered the innermost depths of my heart,
It has awakened divine vigor in every single atom of this body.
Oh, You alone are the supreme abode of that great cosmic light.

O great Sage of the Era, Your name is the foundation of my life.
Now, the sole purpose of my life is Your divine work.

You nurtured everyone with the sacred milk of Mother Gayatri.
You seated everyone in the pure, immaculate lap of Yajna, the Divine Father.
Oh, now a beautiful, blissful wave is flowing everywhere.

O great Sage of the Era, Your name is the foundation of my life.
Now, the sole purpose of my life is Your divine work.

You breathed life back into the ancient tradition of the sages.
By staying in Your divine presence, O Lord, we have attained everything.
Oh, now our worship has become selfless and desireless.

O great Sage of the Era, Your name is the foundation of my life.
Now, the sole purpose of my life is Your divine work.

You blossomed the divine Brahma-splendor in the stream of our lives.
Whoever walked upon this path attained the ultimate fruit of life.
Oh, You indeed are Mahakal, the great Lord Shriram.

O great Sage of the Era, Your name is the foundation of my life.
Now, the sole purpose of my life is Your divine work.

O great Sage of the Era, Your name is the foundation of my life.
Now, the sole purpose of my life is Your divine work.

127. युग - युग पूजित गायत्री माँ , ऐसी कृपा करो   ऑनलाइन ऑडियो सुनें   ऑनलाइन वीडियो देखें

.

युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ॥

जन-जन के प्रति विमल भावना, सबके हित की रहे कामना।
यह जीवन ही बने साधना, ऐसी कृपा करो॥
मेरे मन में कर्तव्यों के प्रति अनुराग भरो,
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ॥

पूरब की लाली बन जाओ, कलरव के स्वर में नित गाओ।
ज्योतित पावन पंथ बनाओ, ऐसी कृपा करो॥
अन्धकार में बनकर मङ्गल किरण देवि बिखरो,
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ॥

मातृ-भूमि से प्यार हमें दो, निर्मल हृदय उदार हमें दो।
अपना मृदुल दुलार हमें दो, ऐसी कृपा करो॥
लक्ष्य दीप बन कर के मेरे मानस में निखरो,
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥

युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥

127. युग **-** युग पूजित गायत्री माँ **,** ऐसी कृपा करो — **English Meaning /** भावार्थ

> *O Mother Gayatri, adored through the ages, bestow such grace.*
> *Today, shower us with such grace.*
> *O Mother Gayatri, adored through the ages.*
>
> *May pure feelings dwell in us for every soul, and the desire for the well-being of all.*
> *May this very life become a spiritual endeavor, bestow such grace.*
> *Fill my heart with devotion toward my duties,*
> *Today, shower us with such grace.*
> *O Mother Gayatri, adored through the ages, bestow such grace.*
> *Today, shower us with such grace.*
> *O Mother Gayatri, adored through the ages.*
>
> *Become the crimson glow of the eastern dawn, sing eternally in the sweet melody of birds.*
> *Illuminate our sacred path with light, bestow such grace.*
> *O Goddess, scatter as an auspicious ray amidst the darkness,*
> *Today, shower us with such grace.*
> *O Mother Gayatri, adored through the ages, bestow such grace.*
> *Today, shower us with such grace.*
> *O Mother Gayatri, adored through the ages.*
>
> *Grant us love for our motherland, give us a pure and generous heart.*
> *Bestow upon us your tender affection, bestow such grace.*
> *Shine brightly in my consciousness as the guiding lamp of my goal,*
> *Today, shower us with such grace.*
> *O Mother Gayatri, adored through the ages, bestow such grace.*
> *Today, shower us with such grace.*
> *O Mother Gayatri, adored through the ages, bestow such grace.*
> *Today, shower us with such grace.*

128. युग - युग तक जग याद करे , तुम ऐसे कर्म करो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

.

युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥

जहाँ कहीं हों ताप वहाँ पर, सावन बन बरसो।
मरुथल मधुवन बने जहाँ पर, दिन दो चार बसो॥
जिससे मिल लो एक बार तुम कभी नहीं बिसरो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥
युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥

पथिकों के गति भ्रमितों के तुम, बनकर दीप रहो।
सगर सुतों हित बनकर पावन, सुरसरि धार बहो॥
जग उपवन में मलयज की, शीतलता ले विचरो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥
युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥

मानव हो तुम मानवता के, शुचि शृंगार बनो।
श्वाँसों के सागर में मन के, कर्णाधार बनो॥
तपः पूत शापों में तुम नव कंचन बन निखरो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥
युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥

युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥

128. युग **-** युग तक जग याद करे **,** तुम ऐसे कर्म करो — **English Meaning /** भावार्थ

Perform such deeds that the world remembers you for ages to come.
Infuse your actions with such profound essence.

Wherever there is scorching suffering, rain down like the soothing monsoon.
Dwell for just a few days where deserts may transform into blooming gardens.
Whomever you meet but once, may you never be forgotten by them.
Infuse your actions with such profound essence.

Perform such deeds that the world remembers you for ages to come.
Infuse your actions with such profound essence.

For weary travelers who have lost their way, remain as a guiding lamp.
For the salvation of Sagar's sons, flow as the pure stream of the celestial Ganges.
Wander through the garden of this world, carrying the cool fragrance of sandalwood.
Infuse your actions with such profound essence.

Perform such deeds that the world remembers you for ages to come.
Infuse your actions with such profound essence.

You are human, so become the pure adornment of humanity.
In the ocean of breaths, become the helmsman of the mind.
Purified by penance, emerge like radiant gold even from within curses.
Infuse your actions with such profound essence.

Perform such deeds that the world remembers you for ages to come.
Infuse your actions with such profound essence.

Perform such deeds that the world remembers you for ages to come.
Infuse your actions with such profound essence.